अमिता दुबे का कथा साहित्य : एक विवेचन

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ से हिन्दी विषय में मास्टर
ऑफ फिलॉसफी की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

लघु शोध–प्रबन्ध

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

शोध–निर्देशक
डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

शोधार्थी
गौरव कुमार
पंजीयन क्रमांक : 1196/18
हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ–226025

2020–2021

माता–पिता

एवं

शिक्षकगण को समर्पित

<u>घोषणा पत्र</u>

मैं, **गौरव कुमार** यह घोषणा करता हूँ कि **अमिता दुबे का कथा साहित्य : एक विवेचन** प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारित है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह शोध कार्य मैंने **डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के निर्देशन व मार्गदर्शन में पूरा किया है।

मैं घोषणा करता हूँ कि इस लघु शोध प्रबन्ध को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के शोध संबंधित सभी नियमों का पालन किया है। मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि यह लघु शोध–प्रबंध पूर्णतः साहित्यिक चोरी से मुक्त है।

दिनांक : 21/03/2022

शोधार्थी
Gaurav Kumar

गौरव कुमार
पंजीयन क्रमांक :1196 / 18
हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ

<u>प्रमाण पत्र</u>

मैं प्रमाणित करता हूँ कि **गौरव कुमार** ने मेरे मार्गदर्शन में **अमिता दुबे का कथा साहित्य : एक विवेचन** शीर्षक विषय पर हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ उत्तर प्रदेश की मास्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु लघु शोध कार्य किया है। प्रस्तुत यह लघु शोध–प्रबन्ध इनके स्वयं के द्वारा किये गये शोध का परिणाम है एवं इसे किसी अन्य उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया ळें

यह लघु शोध–प्रबन्ध *2019 में संशोधित मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम०फिल०) विनियम, 2016* में निर्धारित सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है और यह विश्वविद्यालय की मास्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि और मूल्यांकन के लिए योग्य है।

दिनांक: २१|०३|२०२२

डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव
असि० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
बी.बी.ए. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोध निर्देशक

आचार्य सर्वेश सिंह / Prof. Sarvesh Singh
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
Head, Department of Hindi
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ- 226025
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow- 226025

विभागाध्यक्ष

आभार

मेरे इस मार्ग को प्रशस्ति की ओर ले जाने वाले स्नेही, सौम्य, सज्जन, भावुक आदि गुणों से युक्त मेरे मार्गदर्शक **डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव सर** का मैं अत्यधिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे अपने सानिध्य में कार्य करने का अवसर प्रदान किया। जिन्होंने मेरी सारी समस्याओं को सरलता से हल कर दिया।

शोध कार्य के आरम्भ से समाप्ति तक अनेक महानुभावों के सहयोग, परामर्श एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। उन सहयोगियों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करना अनुसंधित्सु अपना विशेष धर्म समझता है। इस लघु–शोध कार्य को सम्पन्न बनाने में कई महानुभावों ने अपना बहुमूल्य समय, सुझाव और सहयोग दिया है। इस क्रम में सर्वप्रथम मैं **बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय** के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आचार्य सर्वेश सिंह के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रस्तुत लघु–शोध विषय पर कार्य करने की सहृदयता से अनुमति प्रदान की। इनके साथ ही हिन्दी विभाग के अन्य आचार्य प्रो० राम पाल गंगवार, डॉ० शिवशंकर यादव, डॉ० प्रीति राय, डॉ० नमिता जैसल आदि गुरूजनों ने सदैव ही प्रेरणापूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया है। जो मेरे शोध कार्य के लिए अत्यधिक उपयोगी रहा है जिसके लिए मैं इन गुरूजनों के प्रति आत्मीय रूप से आभारी हूँ।

मैं अमिता दुबे जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अनुसंधित्सु का शोध लेखन के कार्य में सहयोग किया। उनके सहयोग के बिना यह कार्य असम्भव था।

अनुसंधित्सु अपने सभी परिवारजनों के प्रति विनम्र आभार प्रकट करता है। विशेष रूप से पिता श्री राकेश कुमार, माता श्रीमती शान्ती देवी बड़ी बहन रेनू भारती, छोटी बहन नीतू भारती, छोटा भाई सौरभ भारती। माता–पिता के आशीर्वचनों के कारण ही अनुसंधित्सु को शोध कार्य सम्पन्न करने के लिए पर्याप्त समय के साथ उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरणा एवं सम्बल प्रदान किया।

अनुसंधित्सु अपने सभी अग्रजों विशेष रूप से दीप्ति मैम, अभिषेक भैया, त्रिपुरेश भैया, अनीता मैम, तथा अपने प्रिय मित्रों अभिषेक सिंह, किशोर कुमार, के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझको शोध कार्य के लेखन में अत्यन्त मनोयोग से सहयोग प्रदान किया तथा अन्य सभी शोधार्थियों एवं कार्यालय कर्मचारी जीत कुमार जी और अमितेश जी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मेरे शोध कार्य में सहायता प्रदान की जिससे मेरा शोध कार्य सुगम व सरल हो सका है।

गौरव कुमार

भूमिका

भूमिका

आज का युग नारी जागरण का युग है। आज स्त्री ने अपने मान की प्रतिष्ठा के लिए पुरानी सामाजिक रूढ़ियों को सिरे से नकार दिया है। आज की नारी ने महसूस कर लिया है कि उसको पुरूषों के सामने अपने व्यक्तित्व के विकास का पूरा हक है। सब नाते–रिश्तों के बावजूद भी उसका स्वतंत्र जीवन होता है। आत्मसम्मान से युक्त स्त्री ने अपनी अस्तित्व की खोज कर ली है और वह हमेशा शोषण का जवाब देने के लिए प्रयासरत है। पुरानी रूढ़ियों को तोड़ कर नये जीवन मूल्यों की खोज में वह गतिमान है। समकालीन साहित्यकारों में सशक्त हस्ताक्षर हैं डॉ० अमिता दुबे। आज के समय के जीवन के परिवेश में स्त्री के अस्तित्व को ढूँढने और अभिव्यक्त करने में डॉ० अमिता दुबे को अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।

अमिता दुबे के कथा साहित्य को अपने लघु शोध प्रबन्ध की विषय बनाने के सम्बन्ध में जब मैंने अपने शोध निर्देशक से इच्छा व्यक्त की तो सर ने मेरा उत्साहवर्धन करने के साथ ही अपनी अनुमति प्रदान की। प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

हिन्दी कथा साहित्य के प्रति मेरी रूचि विद्यार्थी जीवन से ही रही है। अमिता दुबे के कथा साहित्य में भारतीय स्त्री का एक अलग ही रूप देखने को मिला है। अमिता दुबे के कथा साहित्य के प्रति मैं आकृष्ट हुआ। फलतः लघु शोध कार्य के लिए मैंने **अमिता दुबे का कथा साहित्य : एक विवेचन** शोध विषय को चुना। 'अमिता दुबे का कथा साहित्य : एक विवेचन' शीर्षक के इस शोध–प्रबन्ध में अमिता दुबे के कथा साहित्य के अध्ययन और विश्लेषण का विनम्र प्रयास है।

डॉ० अमिता दुबे पुरस्कृत कहानीकार हैं जिन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। **अमिता दुबे का कथा साहित्य : एक विवेचन** का सम्यक अध्ययन करने के लिए मैनें शोध विषय को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है–

प्रथम अध्याय में अमिता दुबे का जीवन–परिचय, शिक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, संस्कार, स्वभाव व परिचय दिया गया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आपका व्यक्तित्व प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय हैं। उनमें मानवता का अथाह सागर है। आपका हृदय विशाल और उदात्त है। डॉ० अमिता दुबे का व्यक्तित्व सादा जीवन उच्च विचार की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। प्रथम अध्याय में उनके जीवन परिचय के अलावा उनकी कथा साहित्य का परिचय भी दिया गया है।

द्वितीय अध्याय में अमिता दुबे की कहानी संग्रहों का अध्ययन किया गया है। उन्होंने दस कहानी संग्रह जिसमें दो बाल कहानी संग्रह लिखे हैं। ये कहानियाँ सहज, सवेंदनशील, मार्मिक एवं प्रेरणास्त्रोत हैं और इनमें जीवन का कोई न कोई संदेश अवश्य ही दिखाई पड़ता है।

तृतीय अध्याय में अमिता दुबे के उपन्यासों का अध्ययन किया गया है। अमिता दुबे ने दो उपन्यासों 'उलझन' एवं 'एकान्तवासी शत्रुघ्न' की रचना की है। 'उलझन' उपन्यास बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। परिवार में होने वाले सम्बन्ध विच्छेद के कारण बच्चों पर होने वाले मानसिक प्रभावों का सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में दिखाई देता है और 'एकान्तवासी शत्रुघ्न' रामचरितमानस के शत्रुघ्न पात्र को कथा का आधार बनाकर उत्कृष्ट उपन्यास रचा गया है।

चतुर्थ अध्याय में अमिता दुबे के कहानी संग्रह और अपने दोनों उपन्यासों में अपनी विषयगत विविधता में समाज और संस्कृति के विविध पक्षों को उद्घाटित करते हैं। अमिता दुबे की कहानियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं को इंगित ही नहीं करती बल्कि उसके निवारण का प्रयास भी करती हैं। अमिता दुबे ने अपने दोनों उपन्यास में वर्तमान समाज की संकीर्णता, असहिष्णुता, मनोवैज्ञानिक, बालकथा, कोरोना काल की परिस्थितियाँ एक दूसरे के प्रति नफरत की भावना आदि कुप्रवृत्तियों आदि का अध्ययन किया गया है।

पंचम अध्याय में अमिता दुबे का कथा साहित्य का संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य के रूप में अध्ययन किया गया है। इसमें उनके कथा साहित्य लेखन की संरचना को आधार बनाकर लिखा गया है।

उपसंहार में सम्पूर्ण अध्यायों को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि डॉ० अमिता दुबे का साहित्यिक अवदान उच्चकोटि का है। इनकी रचनाएँ गहन एवं श्रेष्ठ हैं।

मेरा सावधानी पूर्वक यह प्रयास रहा है कि यह लघु शोध प्रबंध त्रुटि रहित हो किन्तु यह पूर्णतः सम्भव नहीं है। अतः मैं उन सभी अंजान त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

गौरव कुमार
(शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
लखनऊ

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पेज नं.
प्रथम अध्याय	**अमिता दुबे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	**1—13**
1.	जीवनवृत्त एवं व्यक्तित्व	2
2.	रचना संसार के विविध आयाम	10
3.	साहित्य लेखन दृष्टि	12
द्वितीय अध्याय	**अमिता दुबे की कहानियों का परिचय : एक अध्ययन**	**14—45**
1.	कहानियों में पारिवारिक जीवन	40
2.	कहानियों में स्त्री पक्ष	44
तृतीय अध्याय	**अमिता दुबे के उपन्यासों का परिचय : एक अध्ययन**	**46—69**
1.	वर्तमान समय में उपन्यासों की प्रासंगिकता	62
2.	उपन्यासों में स्त्री पक्ष	66
चतुर्थ अध्याय	**अमिता दुबे के कथा साहित्य में स्वरूप : सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष**	**70—78**
1.	कहानियों में स्वरूप : सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष	70
2.	उपन्यासों में स्वरूप : सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष	75
पंचम अध्याय	**कथा साहित्य : संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य**	**79—94**
1.	शिल्प विधान एवं शिल्प वैशिष्टय	80
2.	बिंब, प्रतीक की विविधता एवं अन्य आयाम	89
	उपसंहार	**95—98**
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**99—100**
	परिशिष्ट	.....

प्रथम अध्याय

अमिता दुबे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

अमिता दुबे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–

किसी भी रचनाकार की साहित्यिक गतिविधियों को जानने, समझने, परखने एवं साहित्यिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन के लिए उनके व्यक्तित्व एवं रचनाधर्मिता पर प्रकाश डालना अति आवश्यक है इसी बात के परिप्रेक्ष्य में साहित्यकार का समग्र जीवन–परिचय प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि उसके जीवन और व्यक्तित्व के अनेक आयाम उसके साहित्य को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। साहित्यकार जिस स्थान, सभ्यता, संस्कृति, परिवेश और वातावरण में जीवन–यापन करता है, वहाँ की भाषा वेशभूषा, खान–पान, आचार–विचार, रहन–सहन आदि उनकी जीवनशैली से अनायास परिलक्षित होते हैं।

इसलिए अनुसंधाता को अनुसंधान करने से पूर्व रचनाकार के व्यक्तित्व को जानने की उत्सुकता रहती है। किसी भी रचनाकार का व्यक्तित्व उस रचनाकार की रचनाओं को पढ़ने के बाद भी थोड़ा बहुत पता चलता है। रचनाकार के व्यक्तित्व की सम्पूर्ण जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध नहीं होती है। अर्थात् किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व को पहचाने बिना हम उसके कृतित्व को सही ढ़ंग से समझ पाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। किसी भी युग में और किसी भी भाषा में लिखने वाले कुछ रचनाकार ऐसे होते हैं जिनकी रचनाएँ साहित्य और समाज में कालजयी बन जाती है। महिलाओं में तो संवेदनाओं का खजाना होता है। स्त्री ने जब अपनी अनुभूतियों और संवेदनाओं को कलम के माध्यम से कागज पर उकेरा है तब उत्कृष्ट साहित्य सृजन ने सबको चकित करके रख दिया है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में महिलाओं से कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा। महिलाओं का लेखन नई दृष्टि से स्वंय को और समाज को पहचानने की एक ईमानदार चेतना से जुड़ा है। महिला रचनाकारों में अमिता दुबे ने साहित्य के माध्यम से अलख जगाया और कामयाबी से आगे बढ़ रहीं हैं। उन्होंने साहित्य के माध्यम से अपने आस–पास के परिवेश और समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से शब्दबद्ध किया है।

1.1 जीवनवृत्त एवं व्यक्तित्व–

अमिता दुबे का जन्म लखनऊ शहर में हुआ था और आपके माता–पिता भी आपके जन्म के पूर्व लखनऊ शहर में निवास करते रहें हैं। आपके पिता का नाम श्रीकृष्ण कुमार 'अनिल' तथा माता का नाम श्रीमती पुष्पलता है। आपके एक बहन और एक भाई भी हैं। डॉ० अमिता दुबे का जन्म 15 मार्च 1967 ई० को लखनऊ शहर में एक प्रतिष्ठित तथा शिक्षित परिवार में हुआ था। आपका बचपन सम्पन्न और शिक्षित परिवेश में व्यतीत हुआ। आपने अपने माता–पिता की बड़ी सन्तान होने के कारण स्नेह और जिम्मेदारी दोनों एक साथ प्राप्त हुई। आपके आस–पास के परिवेश ने लेखिका (अमिता) जी के जीवन पर बहुत गहराई से लक्षित हुआ है।

शिक्षा–

अमिता दुबे की जूनियर हाईस्कूल तक की शिक्षा लखनऊ के एक प्रतिष्ठित कॉलेज सिटी मॉन्टेसरी स्कूल की राजेन्द्र नगर शाखा से सम्पन्न हुई और उसके बाद इण्टर तक की पढ़ाई लखनऊ के लालबाग गर्ल्स कॉलेज से हुई। आपकी साहित्य में रूचि होने के साथ–साथ विज्ञान ने भी आपको अत्यधिक प्रभावित किया था। इसी वजह से आपने उच्च शिक्षा कला वर्ग से लखनऊ विश्वविद्यालय से ग्रहण किया।

गणित, विज्ञान के साथ ही साहित्यिक विषयों में भी आपकी गहरी रूचि थी। जिसका प्रमाण आपकी रचनाओं में बहुत सहजता से मिल जाता है। डॉ० अमिता दुबे ने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी कलम तो चलाई ही है साथ–साथ शैक्षणिक जीवन की उपलब्धियाँ भी उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की द्योतक हैं।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की पढ़ाई प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है और आपने **1999** में **बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय** के प्रो० **डॉ० रामस्वरूप खरे जी** के निर्देशन में शोध कार्य '**मुक्तिबोध के काव्य में आक्रोश का स्वर**' विषय पर रहा है।

वैवाहिक जीवन–

अमिता दुबे का विवाह श्री आलोक कुमार दुबे जी से हुआ। आपके पति श्री आलोक दुबे सरकारी सेवा में कार्यरत हैं और इसके साथ ही साथ साहित्य में रूचि रखने वाले व्यक्ति भी हैं। श्री आलोक दुबे को भी व्यंग्य, लघुकथा आदि लिखने का शौक था। माता–पिता की प्रेरणा और प्रोत्साहन से प्रारम्भ हुई अमिता की साहित्य यात्रा विवाह के बाद भी पारिवारिक दायित्वों के बढ़ने के बाद भी थमी नहीं बल्कि अनवरत् और अधिक तीव्र गति से चलने लगी। अमिता को विवाहोपरांत अपने पति के साथ ही`ममतामयी सास श्रीमती निर्मला दुबे और पिता तुल्य सहयोग अैर मार्गदर्शन करने वाले ससुर जी का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। जिस कारण आपके अंशुभा और अविरल के साथ उनका वैवाहिक जीवन सुखद और सुगमता से व्यतीत हो रहा है।

परिवारिक जीवन–

अमिता दुबे का पारिवारिक जीवन का परिवेश आदर्श है विवाह से पहले जहाँ उन्हें शिक्षित और प्रेरणा देने वाले अभिभावक और सहयोग करने वाले भाई–बहन का साथ मिला। वहीं विवाह पश्चात् आपकी प्रतिभा को बढ़ाने वाले साहित्य के जानकार जीवन साथी मिले। आपके पति के साथ–साथ ही ससुराल के सभी लोगों का आपको सहयोग प्राप्त हुआ जिसका उल्लेख आपने स्वंय अपनी पुस्तकों 'ये काश ही है', 'पाषाणी', 'नयनदीप' में किया है।[1]

अमिता दुबे परिवार को साथ लेकर चलने वाली महिला हैं। आपका मानना है कि परिवार प्रथम दायित्व है और करियर द्वितीय, इसी कारण आपने दोनों में पूर्ण रूप से सामंजस्य स्थापित किया है जो कि प्रशंसनीय है। आप गृह कार्य के साथ ही साथ समय निकालकर साहित्य लेखन भी करती हैं और अपने बच्चों की शिक्षा और उनकी आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखती हैं।

विनोद एवं रूचि–

अमिता जी का जीवन एक साधक की तरह ही संतुलित है। अत्यन्त व्यस्त रहने पर भी आप अपने मनोविनोद् का समय निकाल ही लेती हैं। आप बहुत ही हँसमुख और सहृदय महिला हैं।

सामाजिक जीवन एवं व्यक्तित्व–

अमिता दुबे का व्यक्तित्व सभ्य एवं गम्भीर सरल है। वे स्वभाव से बहुत ही गंभीर, शान्त, स्नेही कम बोलने वाली महिला हैं।(उनसे वार्तालाप से ज्ञात हुआ) संपादक के उच्च पद पर आसीन होने के बावजूद भी आप साधारण गृहणी की तरह ही रहती हैं। आपको दिखावा बिल्कुल भी पसन्द नहीं है किन्तु आपको व्यवस्थित जीवन और व्यवस्थित वेषभूषा पसन्द है। जैसा आपके साहित्य में प्रतीत होता है कि आप नारी शिक्षा और प्रगति की पक्षधर हैं आप सदियों से चली आ रही रूढ़िवादी परम्पराओं का खण्डन करने वाली सशक्त लेखिका हैं लेकिन इसके साथ ही आप नारी के अति आधुनिक बनने अर्थात् अपने करियर के कारण अपने घर–परिवार की अवहेलना करने और नारी गुणों का त्याग करने के कभी भी पक्ष में नहीं रहीं हैं।

लेखन का आरम्भ–

आपके परिवार के धार्मिक एवं साहित्यिक वातावरण का प्रभाव आपके बालमन पर भी पड़ा। तीव्र बुद्धि और प्रोत्साहन के काारण आपने 12–13 वर्ष की अवस्था में जब आप सिटी माण्टेसरी स्कूल राजेन्द्र नगर की शाखा की कक्षा आठ की विद्यार्थी थीं तो विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में आपकी पहली कविता **'परिवर्तन'** शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। कविता को शिक्षकों के साथ–साथ विद्यार्थियों द्वारा भी अत्यधिक सराहना प्राप्त हुई।

अमिता दुबे का हिन्दी साहित्य के प्रति विशेष रूझान पत्रकारिता के माध्यम से प्राप्त हुआ। पिता श्री कृष्णकुमार 'अनिल' की प्रेरणा से 'ल**खनऊ राजधानी रहस्य'** हिन्दी साप्ताहिक के सम्पादन का दायित्व संभाला। मात्र 20–21 वर्ष की आयु में आपको राजधानी रहस्य के प्रतिनिधि के रूप में

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अमृतलाल नागर को प्रवेशक की प्रति भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लखनऊ राजधानी रहस्य, 'श्याम चेतना', अवध पुष्पांजलि, प्रभृति पत्रिकाओं में उस समय आप की अनेक कविताएँ, लघुकथाएँ, व्यंग्य रचनाएँ प्रकाशित हुई साथ ही इसी समय विशिष्ट साहित्यकारों के व्यक्तित्व कृतित्व पर आपने आलोचनात्मक लेख भी लिखें। महादेवी वर्मा पर पहला आलोचनात्मक आलेख छपा। अगले वर्ष तीन प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्रों में महादेवी वर्मा की जयन्ती (होलिकोत्सव) के अवसर पर तीन अलग–अलग लेख एक साथ एक ही दिन प्रकाशित हुए।

पत्रकारिता और साहित्य लेखन के प्रति आपका रूझान इतना बढ़ा कि आपने पत्रकारिता को अपनी जीविका बनाने के उद्देश्य से **स्वतंत्र चेतना** दैनिक समाचार पत्र में उपसम्पादक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। अमिता दुबे स्वतंत्र चेतना के लखनऊ संस्करण की प्रारम्भिक टीम की सदस्य भी रहीं। यहाँ उन्हें सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री रामपाल सिंह, श्री अखिलेश मिश्र के सानिध्य में पत्रकारिता का अवसर प्राप्त हुआ। जिससे साहित्य से जुड़े विभिन्न आयामों को भली–भाँति सीखने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ जिसका आपने भरपूर लाभ उठाया और परिणामतः आपकी लेखनी खबर लिखने, उन्हें सम्पादित करने के साथ–साथ साहित्य सृजन की दिशा में भी सफर जारी रहा।

वर्ष 1992 में आपने स्वतंत्र चेतना को छोड़कर आपने **उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान** के संपादकीय प्रभाग में सरकारी सेवा प्रारम्भ की। 'स्वतंत्र चेतना' दैनिक अखबार से जुड़े आपके तीन वर्ष (अगस्त 1989 से नवम्बर 1992) तक ने आपको एक नयी सोच, नई भावभूमि प्रदान की। एक नवीन जीवन दृष्टि के साथ आपकी सृजन यात्रा 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से जुड़ने के बाद और अधिक निखरी। सेवा में रहते हुए आपने वर्ष **1989** में **बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय** से **डॉ० रामस्वरूप खरे** के निर्देशन में आपने डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। तब तक आप साहित्य जगत में एक कहानीकार के रूप में स्थापित हो चुकी थी।

आपकी पहली कहानी 'दर्पण' एक सहयोगी संकलन में प्रकाशनार्थ लिखी गयी थी यद्यपि वह कहानी संकलन प्रकाशित नहीं हो सका परन्तु

प्रकाशन की दृष्टि से 'प्रतीक्षा' कहानी को पहली प्रकाशित कहानी माना जा सकता है। 'प्रतीक्षा' कहानी डॉ० नामवर सिंह के परामर्श से प्रकाशित होने वाली 'राष्ट्रीय सहारा' हिन्दी दैनिक (दिल्ली) की रविवासरीय परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित हुई थी।

सन् 2000 में आपकी दो पुस्तकें एक साथ प्रकाशित हुई '**पाषाणी**' कहानी संग्रह और **'छायावादी काव्य पथिक : महादेवी निराला (निबंध संकलन)** इन दोनों पुस्तकों का लोकार्पण पूर्व **महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्री विष्णुकांत शास्त्री** के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर माननीय श्री केशरीनाथ त्रिपाठी भी उपस्थित थे। एक साथ दो पुस्तकों का लोकार्पण हुआ और परम्विद्वान, चिन्तक, मनीषी, प्रखर वक्ता आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जी और सुप्रसिद्ध कवि, वक्ता एवं राजनीति से अलग हटकर एक साहित्यकार के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले आदरणीय केशरीनाथ त्रिपाठी का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ।

साहित्य जगत में विराजमान प्रतिष्ठित साहित्यकारों के आशीर्वाद से डॉ० अमिता जी का रचना संसार विस्तृत होता गया और उनकी लेखनी को और गति प्राप्त होती गयी और इसी बीच दिल्ली प्रेस द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में डॉ० अमिता दुबे की कहानी **'कितने अजनबी**' को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। सभी ने आपकी सराहना की। आपकी रचनाएँ स्थानीय पत्र–पत्रिकाओं के साथ–साथ राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में इस पुरस्कार की चर्चा हुई। आपका दूसरा कहानी संग्रह '**नयनदीप**' का लोकार्पण पूर्व मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा 14 सितम्बर 2006 को किया गया।

इसके साथ ही आपकी दस्तक आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी है। आकाशवाणी ने आपके द्वारा विभिन्न विषयों पर वार्ताएँ प्रस्तुत की गई हैं। साहित्यिक विषयों के अतिरिक्त आपके द्वारा विभिन्न सामाजिक विषयों को भी अपनी वार्ता का विषय बनाया गया है। आपके द्वारा प्रस्तुत कहानी, कविता, वार्ता की प्रशंसा विद्वान साहित्य मनीषियों के द्वारा की जाती रही है।

पुरस्कार एवं सम्मान–

'दिल्ली प्रेस' द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में डॉ० अमिता की कहानी '**कितने अजनबी**' पुरस्कृत हुई। इस पुरस्कार की चर्चा स्थानीय पत्र–पत्रिकाओं के साथ ही राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में भी हुई। यह पुरस्कार दिल्ली प्रेस द्वारा आयोजित भारतेन्दु नाटक अकादमी के बी०एम०शाह० प्रेक्षागृह में 6 जून को 2004 को आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री श्री विभूति नारायण राय, श्री परेशनाथ सम्पादक सरिता आदि की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। डॉ० अमिता दुबे को पं० प्रतापनारायण मिश्र 'युवा साहित्यकार सम्मान 2006 में सुप्रसिद्ध पत्रकार–सम्पादक श्री अच्युतानन्द मिश्र के करकमलों द्वारा प्राप्त हुआ। इस समारोह में नगर महापौर (लखनऊ) श्री दिनेश शर्मा, वरिष्ठ गीतकार श्री रामस्वरूप सिन्दूर विशेष रूप से उपस्थित थे। राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर आयोजित 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम का संचालन पिछले कई वर्षों से आपके द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध साहित्यकार पं० बचनेश त्रिपाठी, हृदयनारायण दीक्षित, कमतानाथ, शैलेन्द्र सागर, गोपाल चतुर्वेदी, गिरीश पाण्डे, राकेश कुमार मित्तल, हरिओम शर्मा प्रभृति विद्वानों से साक्षात्कार प्राप्त करने का सुअवसर भी आपको प्राप्त हुआ।

यह विलक्षण संयोग ही था कि डॉ० अमिता दुबे की पहली पुस्तक का लोकार्पण आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के कर कमलों द्वारा हुआ जो लखनऊ महोत्सव 2000 के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का अवसर था और राज्यपाल के रूप में आचार्य विष्णुकांत शास्त्री का पहला सार्वजनिक समारोह था।

वर्ष 2004 के 6 जून को दिल्ली प्रेस द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह में आचार्य शास्त्री का उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रूप में अन्तिम कार्यक्रम था। ईश्वर ने यह क्षण डॉ० अमिता के जीवन में अविस्मरणीय बना दिया कि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रूप में आदरणीय विष्णुकांत शास्त्री जी के पहले और अन्तिम कार्यक्रम में आपको उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला। इसी के साथ ही आपकी कहानी '**पुनर्वास**' को **डॉ० सरोजनी कुलश्रेष्ठ कथाकृति सम्मान–201**4 प्राप्त हुआ। और '**दीपक सा मन**' के लिए आपको '**राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान' 2016** को दिया

गया था। '**सुखमनी**' कहानी के लिए आपको '**गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान–2016** इसी वर्ष दूसरा सम्मान प्रदान किया गया है।

'ऐसा मन करता है' के लिए आपको **'नीरज सम्मान' 2018** से नवाजा गया है। विभिन्न साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा प्रदान किए गए 75 सम्मानों से सम्मानित हो चुकी हैं। आप देश की प्रतिष्ठित समकालीन साहित्यकारों में गिनी जाती हैं। आपका रचना संसार बहुत विस्तृत और खुला हुआ और आप निरन्तर साहित्य में नई उपलब्धियाँ हासिल कर रहीं हैं।

पत्र–पत्रिकाओं के क्षेत्र में अमिता दुबे का योगदान–

पत्र–पत्रिकाओं के क्षेत्र में अमिता दुबे का अद्वितीय योगदान रहा है और अनवरत् चलता रहा है। अमिता दुबे की अनेक कहानी, कविताएँ, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती आ रही हैं।

डॉ० अमिता दुबे की पुरस्कृत कहानी **'अस्तित्व' राष्ट्रधर्म पत्रिका के जून 2008 संस्करण** में प्रकाशित हुई। 'अस्तित्व' कहानी स्त्री संघर्ष, समाज में लड़कियों की स्थिति तथा नारी जागरूकता को दर्शाती है।

डॉ० महेन्द्र भटनागर की पंक्ति लड़कियों को अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है–

"अब दबोगी तुम नहीं

अन्याय के सम्मुख

नई ताकत, बड़ा साहस

जमाने का तुम्हारे साथ है

अब मुक्त कड़ियों से तुम्हारे हाथ हैं।"[1]

'**अस्तित्व**' कहानी यथार्थवादी कहानी है। यह कहानी संयोगवश मिस इंडिया यूनिवर्स पूजा चोपड़ा के जीवन में भी घटित हुई है। पूजा चोपड़ा ने स्वंय कहा है–**"जब मैं सिर्फ 20 दिन की थी तब मेरी माँ को एक**

---

[1] महेन्द्र भटनागर : हिन्दुस्तान, 8 मार्च

च्वाइस को कहा गया था कि वह या तो मुझे एक बेटी को चुने या अपने पति को। उन्होंने मुझे चुना और फिर अपना घर छोड़कर निकल गई। मेरी माँ नीरा चोपड़ा को यह सजा इसलिए मिली क्योंकि उन्होंने दो बेटियों को जन्म दिया था लेकिन मेरी माँ इसे अपनी गलती नहीं मानती थी। उन्हें इस बात का गर्व था कि हम उनकी बेटियाँ हैं और वह हमेशा कहा करती थी कि एक दिन हम उन्हें गर्व करने का मौका देंगी। मेरी बहन शुभ्रा और मुझे पालने के लिए हमारी अच्छी शिक्षा और भविष्य के लिए मेरी माँ ने बहुत मेहनत की थी। लोग जब मुझे शुभकामनाएँ देते हैं तो यह शुभकामनाएँ मेरी नहीं होती हैं बल्कि वह मेरी माँ और उनके संघर्ष के लिए हैं। वह मेरी जिन्दगी की रोशनी हैं।"[2]

'मानक रश्मि' नामक पत्रिका के जुलाई सितम्बर 2006 के संस्करण में डॉ० अमिता दुबे का साहित्यिक लेख प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक **हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी** जिसमें हिन्दी शब्द निर्माण और विकास के विषय में बताया गया है।

'**नामान्तर**' मासिक पत्रिका के **अगस्त–सितम्बर 2007** के संस्करण में अमिता दुबे का लेख '**महिला सरोकार और मीडिया**' प्रकाशित हुआ। जिसमें मीडिया को केन्द्र में रखकर महिलाओं की पारम्परिक वेषभूषा में परिवर्तन तथा नारी छवि को नए तरीके से प्रस्तुत करने पर तीव्र व्यंग्य किया गया है।

साप्ताहिक समाचार पत्र 'कुबेर टाइम्स' के 25 जनवरी 2004 के संस्करण में अमिता दुबे का एक लेख जो हरिवंशराय बच्चन की 'प्रथम पुण्यतिथि पर विशेष रूप से प्रकाशित हुआ था, जो हरिवंशराय बच्चन की काव्य साधना और जीवन साधना पर आधारित है।

'खनन भारती' नामक द्विमासिक पत्रिका में '**आकांक्षा**' कहानी प्रकाशित हुई है।

'**अट्टहास'** पत्रिका के हास्य व्यंग्य विशेषांक अप्रैल 2009 में अमिता दुबे की व्यंग्य कविताएँ और लेख प्रकाशित हुए। व्यंग्य कविताओं में हँसी,

[2]पूजा चोपड़ा (हिन्दुस्तान 10 मई, मदर डे, पृ० 11

छीछालेदर, रावण के वंशधर, प्रदूषण, लन्दन पलट, मंथन, व्यंग्य हृदय को झंकृत करता है तथा छपास का रोग तो एक गम्भीर रोग है।

1.2 रचना संसार के विविध आयाम–

समालोचना–

छायावादी काव्य पथिक : महादेवी, निराला, आक्रोश के कवि मुक्तिबोध, अनुभूति के विविध रंग, दीपक सा मन, कहानीकार मुक्तिाबोध, अनूठे सर्जक मुक्तिबोध, अभिव्यक्ति इन्द्रधनुष, सृजन के सोपान, संवेदनशील रचनाकार : डॉ० शंभूनाथ, स्वरूप कुमारी बक्शी का सृजनलोक(सहलेखन), शब्द झरने लगे (डॉ० सरोजनी कुलश्रेष्ठ की सृजनात्मकता), 'शब्द–शब्द संबेग', स्वरूप कुमारी बक्शी का सृजनलोक', अविरल साहित्य सर्जक : डॉ० विद्या बिन्दु सिंह(सहलेखन)।

कहानी संग्रह–

'पाषाणी', नयनदीप, सिलवटें, पुनर्वास, सुखमनी, सीढ़ी, धनुक के रंग, संभावना के जुगनू।

बाल साहित्य– समझौते की दुनिया, राह मिल गयी(कहानी संग्रह)

उपन्यास– उलझन, एकांतवासी शत्रुघ्न।

काव्य संग्रह– ये काश ही है, ऐसा मन करता है, कुछ तो बचा है।

समीक्षा– कविता की आहटें, कविता की पदचाप, कविता की अनुगूंज, कविता की प्रतिध्वनि, कहानी की करवटें।

1. '**पाषाणी**'– इस कहानी संग्रह में मार्मिक संस्मरणात्मक, यथार्थपरक और मध्यवर्गीय माता–पिता की मनोदशा, महत्वाकांक्षी स्त्रियों का पारिवारिक जीवन, आधुनिक विचार की लड़कियों के समक्ष समस्याएँ, पारिवारिक जीवन में होने वाले उतार चढ़ावों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है।

2. '**नयनदीप**'– नयनदीप कहानी संकलन में 'कितने अजनबी' अमिता दुबे की पुरस्कृत कहानी है। इस संकलन की कहानियाँ स्त्री जिजीविषा, स्त्री

संघर्ष, पारिवारिक विघटन, एकल परिवार की समस्याओं का बड़े ही सुन्दरता से दर्शाया गया है।

3. '**सिलवटें**'– इस कहानी संग्रह में मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त रूढ़ियाँ और लड़का–लड़की में भेद, जातिगत भेद–भाव, विवाहित स्त्रियों के वेदनापूर्ण स्थिति को बड़े ही संवेदनशीलता से टिप्पणी की गई है।

4. '**पुनर्वास**'– यह कहानी संग्रह एक आम ग्रहणी, कामकाजी महिला, बहू, पत्नी, माँ परिवार में क्या अनुभव करती है और समाज को देखने का उसका दृष्टिकोण क्या है इस कहानी का मूल आधार है। इस कहानी संग्रह में पारिवारिक स्त्रियों की जीवन के प्रति आस्था और विडंबना का चित्रण किया गया है।

5. '**सुखमनी**'– इस कहानी संग्रह में पारिवारिक जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। इस रचना में जीवन के हर पहलू को पूरी वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त करती कहानियाँ हैं। आधुनिकता के तेज जीवन में बच्चों को माता–पिता का ख्याल रखने के लिए समय नहीं मिल रहा है और वे इतने व्यस्त रहतें हैं कि खुद के बारे में उनको सोचने का समय नहीं रहता है। संयुक्त परिवार के टूटन का बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रण किया गया है।

6. '**सीढ़ी**'– इस कहानी संग्रह में संयुक्त परिवार के विघटन, दांपत्य जीवन में स्त्री–पुरूष के परिवर्तित संबंधों के माध्यम से पुराने मूल्यों की अस्वीकृति, स्त्री–पुरूष संबंधों में अन्तर, प्रेम, यौन, कुंठा, महानगरीय, असंपृक्ति, अजनबीपन, अकेलापन, व्यर्थता–बोध, पीड़ा, ऊब, घुटन, निराशा, अनास्था आदि के रूप में दर्शाया गया है।

7. '**धनुक के रंग**'– इस कहानी संग्रह में कोरोना काल की विसंगति, हमारे जीवन की संगति किस प्रकार बन सकी इसकी अभिव्यक्ति धनुक के रंग कहानी संग्रह के माध्यम से हुई है। धनुक यानि इन्द्रधनुष में मुख्यतः सात रंग होते हैं बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी व लाल। ये सातों रंग मिलकर अनेक रंग बनाते हैं। यह कहानी संग्रह कोरोना काल में लिखा गया था। कोरोना काल में व्याप्त समाज में मानसिक संत्रास और स्त्री–पुरूष संबंधों का चित्रण किया गया है।

8. '**संभावना के जुगनू**'— इस कहानी संग्रह में स्त्री शोषण, स्त्रियों का पारिवारिक संत्रास, रूढ़ियों से ग्रस्त स्त्री, स्त्री ही स्त्री की सबसे बड़ी दुश्मन होती है के माध्यम से सजीव चित्रण किया गया है। परिवार में स्त्रियों के रूढ़िवादी सोच के कारण बिखरते मानव मूल्यों की इस कहानी संग्रह के माध्यम से मार्मिक वर्णन किया गया है।

9. '**राह मिल गयी**'— यह कहानी संग्रह बाल साहित्य पर आधारित है। इस कहानी संग्रह में बच्चों के जीवन की मनोवैज्ञानिक स्थिति का चित्रण किया गया है।

10. '**एकांतवासी शत्रुघ्न**'— इस उपन्यास में अमिता दुबे ने शुत्रघ्न के त्याग, तपस्या और बुद्धि का बड़े ही सुन्दर रंग से चित्रण किया है। चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के चारो पुत्रों में शत्रुघ्न का जीवन दर्शाया गया है।

11. '**उलझन**'— इस उपन्यास में बालकों के मनोवैज्ञानिकता के पारिवारिक जीवन में बदलावों का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में बच्चों की शिक्षा और समझदारी का सजीव चित्रण किया गया है। क्योंकि बड़ों के द्वारा किया गया कार्य छोटे बच्चों पर उसका सीधा असर होता है। इस उपन्यास के माध्यम से दर्शाया गया है।

1.3 साहित्य लेखन दृष्टि—

समकालीन महिला साहित्यकारों में अमिता दुबे का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। अमिता दुबे किसी परिचय की मोहताज नहीं है। साहित्य के क्षेत्र में उनकी पहचान उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, विचारक, संपादक, आलोचक आदि के रूप में है। इन तमाम क्षेत्रों में अपने शोहरत का झंडा फहराने में तो उन्हें बड़ी कामयाबी मिली है लेकिन कथाकार के रूप में खासकर विश्व मानवता के रूप में बहुचर्चित हैं। अपने कथा साहित्य में भारतीय जीवन का चित्रण सजीव ढंग से किया है। अमिता दुबे की विलक्षण प्रतिभा अपनी कृतियों में समाज की सारी कुरूतियों के विरूद्ध आवाज उठाती हैं। उनके पात्र अपने प्रति किये जाने वाले अत्याचारों के लिए केवल पुरूष द्वारा माफी माँगने से तृप्त नहीं हैं, वे इसके लिए उन्हें दण्ड देना, उनसे प्रायश्चित करवाना भी चाहती हैं।

अमिता दुबे की रचनाओं का कैनवाश बहुत विस्तृत है। उनकी रचनाएँ देशकाल एवं परिस्थिति को अपने अन्दर समेटे हुए हैं और पाठक के मन को कहीं बहुत गहरे तक छूती है। आपकी रचनाओं में बहुआयामी चित्रण दिखाई देते हैं। जीवन का कोई भी मुद्दा कोई भी क्षेत्र उनकी लेखनी से अछूता नहीं रहा है। सभी समस्याओं पर उनकी कलम चली है।

द्वितीय अध्याय

अमिता दुबे की कहानियों का परिचय : एक अध्ययन

द्वितीय अध्याय

अमिता दुबे की कहानियों का परिचयः एक अध्ययन–

'कहानी' वह गद्य–विधा है, जिसमें जीवन के किसी एक अंश या भाव का चित्रण किया जाता है। 'कहानी' मानव जीवन का खण्ड–चित्र है। कहानी में मानव–जीवन के किसी विशेष पहलू या उसके किसी विशेष आन्तरिक भाव का चित्रण किया जाता है। रोचकता एवं कलात्मकता कहानी में आवश्यक तत्व हैं। कहानी का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं है बल्कि यह मनुष्य में छिपी आन्तरिक व्यथा, अनुभूति आदि को उद्घाटित करके पाठक की चेतना पर मर्मस्पर्शी चोट करती है। उत्कृष्ट कहानी वही है, जो अपने सजीव चित्र एवं कथ्य से पाठक के मन–मस्तिष्क को भाव विभोर कर दे।

कहानी की अनेक शैलियाँ हैं। इसमें प्रतीकात्मक, दृश्यात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक या संस्मरणात्मक आदि शैलियाँ प्रमुख हैं। हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास में बांग्ला साहित्य का विशेष योगदान रहा है। कहानी, हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है।

हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास–

कहानी के रूप में साहित्य की जिस विधा का अध्ययन हम करते हैं, वह पाश्चात्य साहित्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य में आई है। हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास में बांग्ला साहित्य का विशेष योगदान रहा है। हिन्दी कहानी, हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है।

हिन्दी कहानी का वास्तविक विकास 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन वर्ष 1900 ई० से माना जाता है, लेकिन इससे पूर्व भी कहानियाँ लिखी गई थी, जिस कारण हिन्दी की प्रथम कहानी के सम्बन्ध में विद्वानों में प्रायः मतभेद है।

• आचार्य शुक्ल ने किशोरी लाल गोस्वामी की इन्दुमती (1900 ई०) को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है।

• देवी प्रसाद वर्मा ने 'माधव राव सप्रे' की 'एक टोकरी भर मिट्टी' (1901 ई०) को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना जाता है।

• डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल ने रामचन्द्र शुक्ल की ग्यारह वर्ष का समय (1903 ई०) को हिन्दी की प्रथम कहानी माना है।

• रायकृष्ण दास ने राजेन्द्र बाला घोष 'बंग महिला' की 'दुलाईवाली' (1907 ई०) को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है।

उपरोक्त मतों के आधार पर 'इन्दुमती' को हिन्दी की पहली कहानी माना जा सकता है, क्योंकि इस कहानी में लगभग सभी प्रमुख मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। दूसरे शब्दों में कहानी युगानुरूप मूल्यों और आदर्शों की कसौटी पर खरी उतरी है। अन्य कहानियों की अपेक्षा कहानी कला के गुण इस कहानी 'इन्दुमती' में अधिक देखे गए हैं।

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा–

हिन्दी कहानी के विकास में मुंशी प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण योगदान है, उन्होंने अपने लेखन कौशल से कहानी विधा को साहित्य की मुख्य विधा के रूप में स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई है। मुंशी प्रेमचन्द को कहानी विधा का आधार स्तम्भ मानते हुए हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1– प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी

2– प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी

3– प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी

4– स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी–

इस काल में हिन्दी कहानी अपना स्वरूप ग्रहण कर रही थी, उसकी शिल्पविधि का विकास हो रहा था और नए–नए विषयों पर कहानियाँ लिखी जा रहीं थीं। हिन्दी में कहानी मुख्यतः द्विवेदी युग से प्रारम्भ होती है, हालाँकि भारतेन्दु युग या उससे पूर्व में भी कहानियाँ लिखी गईं, किन्तु

उन्हें हिन्दी की मौलिक कहानी नहीं माना जा सकता, क्योंकि इस काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सहित अन्य साहित्यकार नाटकों और निबंधों के लेखन में अधिक सक्रिय थे।

हिन्दी की प्रथम कहानी के अन्तर्गत कहानियों का उल्लेख किया गया है उसके अतिरिक्त इस काल में कुछ अन्य कहानियाँ भी लिखी गईं, जैसे– **माधव प्रसाद मिश्र** की **'मन की चंचलता**, **भगवान दास** की **'प्लेग की चुड़ैल**', **वृन्दावन लाल वर्मा** की '**राखी बन्द भाई**' और '**नकली किला**' आदि है।

द्विवेदी युग में कहानी साहित्य का विशेष विकास हुआ, **सरस्वती, इन्दु, कविवचन सुधा माधुरी** आदि पत्रिकाओं में कहानियाँ छपने लगीं। **चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'** की कहानी **'उसने कहा था**' इस युग की सर्वश्रेष्ठ मौलिक कहानी है।

2. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी (1916ई० से 1936ई० तक)–

प्रेमचन्द का युग कहानी कला के विकास का उत्कर्ष का युग था। इनके समय से ही आख्यायिका (शिक्षा लेने वाली कल्पित लघु कथा) कहानी के स्थान पर यथार्थ (सच्ची) कहानी का प्रारम्भ हुआ। प्रेमचन्द पहले उर्दू में लिखते थे उनका उर्दू में लिखा हुआ प्रसिद्ध कहानी संग्रह **'सोजे–वतन** वर्ष **1907 ई०** में प्रकाशित हुआ था जो स्वातन्त्रय भावनाओं से ओत–प्रोत होने के कारण अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया था।

वर्ष 1916 ई० में उनकी हिन्दी में लिखित प्रथम कहानी ' पंचपरमेश्वर' प्रकाशित हुई। उनकी कहानियों में 'पंचपरमेश्वर' के अतिरिक्त 'आत्माराम', बड़े घर की बेटी', 'नमक का दरोगा', 'शतरंज के खिलाड़ी,' 'वज्रपात', रानी सारंगा', 'अलग्योझा', 'ईदगाह', 'पूस की रात', 'सुजान भगत', 'कफन', 'परीक्षा' आदि अधिक विख्यात हैं।

प्रेमचन्द की कहानी में जनसाधारण के जीवन की सामान्य परिस्थितियों–मनोवृत्तियों एवं समस्याओं का चित्रण मार्मिक रूप में हुआ है। वे साधारण–से–साधारण बात को भी मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत करने की

कला में सिद्धहस्त थे। प्रेमचन्द की कहानियों में विषय वैविध्य की जितनी अधिकता देखने को मिलती है, शायद ही यह किसी अन्य कथाकार की कहानियों में देखने को मिले। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को उठाया है, जैसे– किसानों के शोषण की समस्या, ग्रामीणों की समस्या, छूआछूत, रूढ़ि, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार की समस्या आदि।

प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कहानियों में आदर्श का पुट था, किन्तु बाद की कहानियाँ यथार्थ से जुड़ी हुई थी।

जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', आचार्य चतुरसेन शास्त्री, पण्डित बद्रीनाथ भट्ट 'सुदर्शन', रायकृष्ण दास', पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', ज्वालादत्त शर्मा, चण्डी प्रसाद हृदयेश आदि भी प्रेमचन्द युगीन प्रमुख समकालीन कहानीकार हैं।

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी–

इस काल में कहानी की पुरानी परम्पराओं के साथ नई परम्पराओं का उदय और विकास हुआ। इस काल की कहानियों ने जीवन और जगत के विविध पक्षों को अपनी परिधि में समेटने का प्रयास किया। इस काल में जहाँ एक ओर प्रगतिवादी कहानियाँ लिखी गई, वहीं दूसरी ओर मनोविश्लेषणपरक कहानियाँ व यथार्थवादी कहानियाँ भी लिखी गईं।

प्रगतिवादी परम्परा में मुख्यतः यशपाल, ख्वाजा अहमद अब्बास, अमृतराय, मन्मथनाथ गुप्त, कृष्णचन्द्र, रांगेय राघव, श्रीकृष्णदास प्रभृति कहानीकारों को स्थान दिया जा सकता है।

मनोविश्लेषणवादी परम्परा में मुख्यतः जैनेन्द्र कुमार, भगवती प्रसाद बाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी प्रभृति कहानीकार आते हैं।

4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी एवं प्रमुख कहानी आंदोलन–

स्वतंत्रता के पश्चात् लिखी गई कहानियों को स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी कहा जाता है। ये कहानियाँ स्वातन्त्र्योत्तर काल की हिन्दी कहानी की विभिन्न रचनात्मक पक्षों और बदलावों की साक्षी रही हैं। वर्ष 1947 ई० में देश को आजादी प्राप्त हुई। इसी के साथ हिन्दी कहानी में नई अभिव्यक्तियाँ उभरीं। आजादी के बाद कहानी साहित्य नई कहानी, सचेतन कहानी, समान्तर कहानी, समकालीन कहानी, अकहानी, आदि विभिन्न रूपों से वैविध्यशाली बना है, जिनका विवरण निम्नलिखित है–

नई कहानी–

वर्ष1950 ई० के पश्चात् हिन्दी कहानी के क्षेत्र में एक नए आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ, जिसे 'नई कहानी' आन्दोलन की संज्ञा दी गई। इस आन्दोलन के उन्नायकों में राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मोहन राकेश प्रभृति ने घोषित किया कि नई कहानी का लक्ष्य नए भाव–बोध या आधुनिकता बोध पर आधारित जीवन के यथार्थ अनुभव का चित्रण करना है।

सचेतन कहानी–

नई कहानी आन्दोलन की ही प्रतिक्रिया एवं प्रतिद्वन्द्विता में 'सचेतन कहानी' आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ। इसके प्रवर्तक डॉ० महीप सिंह हैं, जिन्होंने अपनी पत्रिका 'सचेतन' के माध्यम से इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया। सचेतन कहानी नई कहानी की अपेक्षा अधिक सन्तुलित एवं व्यापक दृष्टिकोण की परिचायक कही जा सकती है। 'सचेतन कहानी' आन्दोलन के साथ जुड़े हुए कहानीकारों में महीप सिंह, रामकुमार भ्रमर, सुखवीर, बलराज पण्डित, कुलभूषण, वेद राही, मेहरून्निसा परवेज आदि के नाम उल्लेखनीय है।

समान्तर कहानी–

समान्तर कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक कमलेश्वर हैं, जिन्होंने वर्ष 1971 ई० के आस–पास समान्तर कहानी का प्रवर्तन किया। समान्तर से उनका तात्पर्य कहानी को आम आदमी के जीवन की परिस्थितियाँ एवं

समस्याओं के समान्तर प्रतिष्ठित करने से है। समान्तर कहानी का प्रचार–प्रसार मुख्यतः 'सारिका पत्रिका' के माध्यम से हुआ। वर्ष 1974–75 में सारिका के दस अंकों में क्रमशः विभिन्न समान्तर कहानीकारों की रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें कमलेश्वर के अतिरिक्त कामतानाथ, रमेश उपाध्याय, मधुकर सिंह, सतीश जमाली, नरेन्द्र कोहली, हिमांशु जोशी, मणि मधुकर, मृदुला गर्ग आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

समकालीन कहानी–

इस कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक डॉ० गंगा प्रसाद 'विमल' हैं। इस कहानी में समकालीनता और आधुनिकता बोध पर अत्यधिक बल दिया गया है। समकालीन कहानीकार किसी विशेष आन्दोलन से नहीं जुड़े हैं।

अकहानी–

इस कहानी आन्दोलन में कुछ ऐसे कथाकार जुड़े जिन्होंने कहानी के स्वीकृत मूल्यों को स्वीकार न करके अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा की। डॉ० नामवर सिंह व निर्मल वर्मा इस कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक हैं।

2 अमिता दुबे की कहानियों का परिचयः एक अध्ययन

डॉ० अमिता दुबे आधुनिक युग की प्रतिष्ठित कहानीकार हैं। डॉ० अमिता की कहानियाँ जो आस–पास के वातावरण से निःसृत हैं जो जीवन के यथार्थ को वाणी प्रदान करतीं हैं। इनके पात्र जीवन का हिस्सा भी हैं और कल्पना की उड़ान में पड़ने वाले पड़ाव भी। इन पात्रों के साथ न्याय हो सके इस दिशा में अमिता जी पूर्ण सजग हैं। उन्होंने समाज की सुदृढ़ता प्रदान करने वाली परम्पराओं को आज के परिवेश में सन्दर्भित करते हुए नवीन जीवन दृष्टि की स्थापना का स्तुत्य प्रयत्न किया है। इनकी कहानियाँ कहानी–कला की कसौटी पर सर्वथा खरी उतरी हैं। **'पाषाणी', 'नयनदीप', 'सिलवटें', 'पुनर्वास', 'सुखमनी', 'सीढ़ी', 'धनुक के रंग', संभावना के जुगनू'** और बाल कहानी संग्रह– **'राह मिल गयी'** आदि आपकी कहानियों का संकलन है। सभी कहानी संकलनों का कहानी–कला के तत्वों के आधार पर परिचय कराने का प्रयास मेरा अभीष्ट है।

'पाषाणी' कहानी संग्रह–

अमिता दुबे का यह पहला कहानी संग्रह है जो 2000 में 'अविरल **प्रकाशन, लखनऊ** से प्रकाशित हुआ था। इस कहानी संग्रह में कुल 12 कहानियाँ और कुल 80 पृष्ठों में संग्रहीत हैं आधुनिक युग में मानवीय मूल्य इतनी तीव्र गति से विखण्डित हो रहें हैं कि मनुष्य की महत्वाकांक्षाएं उस पर हावी होती जा रही हैं। अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए वह किस मार्ग का अनुसरण कर रहा है उसे यह भी ज्ञात नहीं कि यह उसके लिए सही है या गलत। अतिमहत्वाकांक्षाएं व्यक्ति को लक्ष्य से दूर एक ऐसे सूनसान मार्ग पर छोड़ देती है जहाँ वह नितान्त अकेला रह जाता है। अणिमा की महत्वकांक्षाओं ने उसे सबसे दूर कर दिया। जहाँ वह दिन–ब–दिन शोषित होती रही और वह कुछ न कर सकी। यह कहानी **'विडंबना**' जो कि '**पाषाणी**' कहानी संग्रह में संकलित है। अमिता दुबे की यह कहानी छोटे शहर की एक अतिमहत्वाकांक्षी लड़की की कहानी है जो अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में गलत संगति में पड़ जाती है। इन सब में वो इतना फँस चुकी होती है, जिससे निकलना उसके लिए असम्भव हो जाता है। अपनी समस्याओं को अपने परिवार से बताने में असमर्थ अणिमा अपने परिवार से दिनों–दिन इतनी दूर हो जाती है कि उसका परिवार उसकी समस्या का आभास भी नहीं कर पाते। इस कहानी में अणिमा के अलावा एक निशीथ नामक पात्र भी है जो मुसीबत में अणिमा की सहायता करता है। एक मात्र निशीथ से ही वह अपनी समस्या को बता पायी थी और वह उसकी मद्द भी करता है परन्तु उसका छलावा रूप निशीथ को भी उससे दूर कर देता है। अंततः अणिमा नितान्त अकेली असहाय अपनी मुक्ति का मार्ग स्वंय ढूँढ़ लेती है और आत्महत्या कर लेती है।

'विडंबना' कहानी में संवाद संक्षिप्त पात्रानुकूल एवं घटनाक्रम पर प्रकाश डालने वाले हैं और कथा को गति प्रदान करने वाले हैं। संवाद शहरी जीवन के खुलेपन को दर्शाते हैं। जैसे–

विनय– जानते हो अणिमा ने आत्महत्या कर ली है।

निशीथ– "आत्महत्या" निशीथ जड़ हो गया।[3]

इस कहानी के प्रधान पात्र अणिमा और निशीथ है और गौण पात्र माता–पिता, विनय है। सम्पूर्ण कथा मुख्य पात्र के आस–पास घूमती है। यह कहानी मानवीय मूल्यों के ह्रास को दर्शाती है। अणिमा एक अति महत्वाकांक्षी लड़की है।

कहानी में पात्रों का चरित्र–चित्रण बड़ा ही यथार्थ सजीव और स्वाभाविक है। 'अणिमा' की विडम्बना को उजागर करने में लेखिका को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। यह कहानी आधुनिक युग के घिनौने चेहरे को दर्शाती है। यह कहानी वर्तमान युग की विकट समस्या आत्महत्या का चित्रण प्रस्तुत करती है। इस कहानी की भाषा बड़ी ही जीवन्त है। शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। वर्णनात्मकता और मार्मिकता शैली की विशेषता है। और यह कहानी वर्तमान समय में अणिमा जैसी कई शोषित लड़कियों को पीछे मुड़कर देखने पर विवश करती है और शोषण के विरूद्ध लड़ने की प्रेरणा देती है। विडंबना शीर्षक सार्थक व उपयुक्त है। यह कहानी में कलेवर की भाँति है शीर्षक नायिका के जीवन के दु:खद अन्त को दर्शाती है। इस कहानी के मूल में छोटे शहरों की भोली–भाली लड़कियों के यौन–शोषण के कारण अपने आपको मृत्यृ के हवाले करने वाली लड़कियों की कहानी है।

'पाषाणी' कहानी संग्रह में **'यशोदा अम्मा**' नामक कहानी अमिता दुबे की सार्थक कहानियों में से एक है। यह कहानी इनकी भावनात्मक कहानी है। सम्पूर्ण कहानी पराकाष्ठा से परिपूर्ण है। 'यशोदा अम्मा' एक संस्मरणात्मक कहानी है। कथानक का आरंभ यशोदा अम्मा के न रहने से प्रारम्भ होता है। कहानी का प्रधान पात्र कन्हैया के घर आया का काम करती है परन्तु उनकी गिनती परिवार के सदस्यों में ही की जाती है। कन्हैया यशोदा अम्मा की पलकों की छाँव में पला। यशोदा अम्मा कन्हैया को अपने हाथ से खाना खिलाती। इस तरह कन्हैया यशोदा अम्मा के प्यार–दुलार और घर की सम्पत्ति ने कन्हैया को उद्दण्ड बना दिया था।

[3] पाषाणी कहानी संग्रह (विडंबना कहानी) पृ० सं० 01

रात–दिन कन्हैया खेलकूद में लगा रहता था। उसका मन पढ़ाई से दूर होता गया। कन्हैया की विधवा बुआ को उसके पिताजी घर ले आए। जो निःसंतान थी और उससे अत्यधिक स्नेह करती थीं। कन्हैया की बुआ को उसका आवारा लड़कों के साथ खेलना और पतंग उड़ाना बिल्कुल पसंद नहीं था। बुआ जी ने कन्हैया को स्नेह से समझाया और कहा बेटा तुम अपना जीवन बर्बाद कर रहे हो। और सख्त हिदायत दी कि तुम खेलो–कूदो पर पतंग नहीं उड़ाओगे। कन्हैया ने बुआ जी की आज्ञा का पालन करते हुए साल भर पतंग को हाथ नहीं लगाया। इस प्रकार जहाँ कन्हैया द्वितीय श्रेणी में पास होता था वहाँ कन्हैया पूरे जिले में प्रथम आया। घर में सभी अत्यधिक खुश थे। बुआ जी ने कन्हैया को दीपावाली के समय पतंग उड़ाने की इजाजत दे दी। कन्हैया अत्यधिक खुश था परन्तु बारिश होने लगी थी। कन्हैया दुःखी हो गया। कन्हैया को दुःखी देखकर यशोदा अम्मा ने उससे दुःखी होने का कारण पूछा, कन्हैया ने कहा साल भर में दीपावली के समय ही पतंग उड़ाने की इजाजत है पर बारिश हो रही है। मैं पतंग कैसे उड़ाऊँ?। यशोदा अम्मा से अपने पुत्र की परेशानी को समझते हुए एक टोटका अपनाया जो उनके गाँव में प्रायः होता था।

बीस वर्ष के युवा की एक छोटी सी ख्वाहिश के लिए मेरी चालीस वर्षीय यशोदा अम्मा, जो कि मेरी कोई नहीं थी और सब कुछ थी, आंगन में निर्वस्त्र होकर बादल को मूसल दिखाकर भगा रही थी।[4]

यह यशोदा अम्मा के ममत्व की पराकाष्ठा थी कि पानी बन्द हो गया। "लेकिन मेरे और अम्मा के बीच बहता वह ममता का झरना जीवन भर बना रहा और आजीवन बना रहेगा।"[5]

कहानी में मुख्य तीन पात्र हैं– यशोदा अम्मा, कन्हैया, बुआ जी। यशोदा अम्मा कन्हैया की धाय माँ है। यशोदा अम्मा एक ममतामयी माँ हैं जो अपने पुत्र की खुशियों के लिए लोक–लाज तक का त्याग कर देती हैं। बुआ जी बाहर से कठोर अन्दर से मृदु स्वभाव की महिला हैं। यशोदा

---

[4] पाषाणी (यशोदा अम्मा), पृ० सं० 13

[5] वही

अम्मा कहानी में पात्रों का चरित्र–चित्रण बड़ा ही यथार्थ और स्वाभाविक है।

'यशोदा अम्मा' कहानी में संवाद संक्षिप्त तथा कथा को गति प्रदान करने वाले हैं। संवाद पात्रों की मनोदशा का सफल चित्रण करते हैं। उदाहरणार्थ–

यशोदा अम्मा– देखो जी मेरे कृष्ण–कन्हैया को कोसों नहीं।

माँ कहती– देखो यशोदा रानी, तुम लाड़–प्यार करती हो तो करो लेकिन उसे बिगाड़ो तो मत। यह कहानी भारतीय परिवार के रहन–सहन और तौर–तरीके को दर्शाती है। गाँव में होने वाले टोटके जिन पर आज लोग विश्वास रखते हैं। इसका चित्रण 'यशोदा अम्मा' नामक कहानी में किया गया है। इस कहानी में व्यावहारिक भाषा तथा भावनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। कहानी में एक दो स्थान पर व्यंग्य का प्रयोग हुआ है। जैसे– देवकी रानी' आदि।

इस कहानी का मूल उद्‌देश्य एक माँ के ममत्व की पराकाष्ठा का चित्रण करना है। माँ ही है जो अपने बच्चे की एक हँसी के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है।

'प्रतीक्षा' कहानी में वर्तमान जीवन की महत्वाकांक्षाओं को दर्शाती है। व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए किसी की भी भावनाओं को ठेस पहुँचाने से भी झिझकता नहीं। इस कहानी की भाषा हिन्दी की खड़ी बोली है और प्रशिक्षित समाज की भाषा को दर्शाती है। इसमें वर्णनात्मक शैली है। 'प्रतीक्षा' कहानी में व्यक्ति की मानसिकता और उसकी स्वार्थलोलुपता को दर्शाता है। जब व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति न होने पर वह दूसरे व्यक्ति के वजूद को खोखला बनाने का प्रयत्न करता है।

इस कहानी संग्रह की प्रमुख कहानी 'पाषाणी' नामक कहानी है। जिसमें किसी अपने को खोने का एहसास कितना दर्दनाक होता है। यह दर्द वही व्यक्ति समझ सकता है जिसने किसी अपने को खोया हो। 'पाषाणी' कहानी में एक औरत की पीड़ा को चित्रित किया गया जिसने अपने पति को कम उम्र में खो दिया था। इस कहानी में एक माँ की

कर्त्तव्यनिष्ठा और उनकी करूण दशा का सफल चित्रण किया गया है। मोहित के मन की पीड़ा, कसक, करूणा का सफल चित्रण है। इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं– माँ, मोहित(पुत्र), कैप्टन रोहित शर्मा(पिता)।

'पाषाणी' कहानी में संवाद अन्तःस्थल में गूँजते हैं। संवाद अत्यधिक मार्मिक हैं। जैसे–

स्नेहा– मुझे यह सन्नाटा काटता है मोहित।

माँ जी के चारो ओर खिंचा हुआ यह तिलिस्म कभी टूटेगा या नहीं वह इसी में कैद होकर................।[6]

अमिता दुबे ने इस कहानी में अपने पति द्वारा किए वादे को पूरा करने के लिए स्वंय को पाषाण बना लिया एक माँ की कर्त्तव्यनिष्ठा को दर्शाना कहानी का मूल उद्देश्य है।

'नयनदीप' कहानी संग्रह–

डॉ० अमिता की दूसरी कहानी संग्रह **'नयनदीप' 2006** में **अविरल प्रकाशन, लखनऊ** द्वारा प्रकाशित हुई थी। इस कहानी संग्रह में 11 कहानियाँ कुल 86 पृष्ठों में संकलित है। इस संग्रह में संकलित कहानियों का कहानी कला के तत्वों के आधार पर परिचय–

इस कहानी संकलन की कहानियाँ हमारे जीवन में घटने वाली घटनाओं से संबंधित हैं। कहानियाँ यथार्थ जीवन की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत करती हैं। 'कितने अजनबी' इस संकलन की पुरस्कृत कहानी है।

'नयनदीप' कहानी डॉ० अमिता दुबे द्वारा लिखी गई कहानियों में से एक श्रेष्ठ कहानी है। यह कहानी अत्यन्त, सजीव और सत्यता के निकट प्रतीत होती है। यह कहानी अत्यन्त संवेदनशील कहानी है। 'नयनदीप' एक ऐसी माँ की कहानी है। जिसने अपनी ममता अपना सर्वस्व जीवन ऐसे बेटे पर न्योछावर कर दिया जिसकी वो जन्मदात्री माँ नहीं थी। यह कहानी मुख्य रूप से गीतिका और डॉ० आशीष के चारो ओर घूमती है।

[6] पाषाणी, पृ० सं० 80

गीतिका ने एक माँ के रूप में अपने पात्र के साथ न्याय किया है। डॉ० आशीष एक कर्त्तव्य निष्ठ पुत्र है।

इस कहानी के संवाद बहुत ही संक्षिप्त तथा मार्मिक हैं। संवाद में सजीवता का समावेश है। उदाहरणार्थ–

"अब तो हँस दो, तुम्हारी आँखों के दिये बुझ गए हैं माँ! अब मैं और गौरी तुम्हारी आँखों के दीपक हैं देखो माँ रोना नहीं......कहते–कहते डॉ० आशीष बच्चो की तरह बिलखने लगते हैं।"[7]

इस कहानी के प्रमुख पात्र डॉ० आशीष और गीतिका(माँ) हैं। इस कहानी में अत्यन्त सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। भावनात्मक शैली का प्रयोग किया है जो कहानी को अत्यन्त मार्मिक रूप से प्रस्तुत करने में सहायक हैं। वर्तमान समय में जहाँ पारिवारिक विघटन, अपने–पराए जैसी भावनाएँ लोगों में व्याप्त हैं। केवल एक ही रिश्ता है वह है माँ, जो न बदलाव मांगता है और न ही कभी बदलता है।

'कितने अजनबी' कहानी डॉ० अमिता दुबे की यह पुरस्कृत कहानी है। दिल्ली प्रेस कहानी प्रतियोगिता 2003 में 'कितने अजनबी' कहानी को पुरस्कार मिला था और परम श्रद्धेय आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की उपस्थिति में सम्मानित होने का गौरव भी प्राप्त हुआ।

यह कहानी एक सजीवात्मक कहानी है। जो वर्तमान समय में यह एक सामान्य बात है कि एक परिवार में रहने वाले लोग भी एक दूसरे के लिए कितने अजनबी हैं। इस कहानी में आधुनिक युग में पारिवारिक जीवन की कड़वाहट, घुटन का चित्रण किया गया है। एक छत के नीचे रहने वाले लोग एक दूसरे के लिए कितने अजनबी हैं। इस कहानी की भाषा परिष्कृत खड़ी बोली है, शैली वर्णनात्मक है। वर्तमान जीवन–शैली तथा परिवार में अलगाव का चित्रण इस कहानी में प्रमुख रूप से किया गया है।

'**साहस**' कहानी 'नयनदीप' कहानी संग्रह में संग्रहीत है। इस कहानी में प्रमुख चार पात्र हैं, डॉ० परेशकान्त, चंचला(तन्मय की बहन), निशा(परेश

---

[7] नयनदीप, पृ० सं० 6

की बहन), तन्मय। परेश जो चंचला को अत्यधिक प्रेम करता है परन्तु उससे कह नहीं पाता है। चंचला जो परेश से प्रेम करती है। निशा तन्मय को पसंद करती है। पात्रों की स्वार्थ लोलुपता का सफल चित्रण इस कहानी में हुआ है। 'साहस' कहानी के संवाद कथा को गति प्रदान कराने वाले हैं। संवाद कथा को गन्तव्य तक पहुँचाने में पूर्णतः सफल हैं। उदाहरणार्थ–

मैनें कहा, 'नहीं चंचला तुमने कोई मुझसे वादा तो नहीं किया था तो मैं तुम्हें धोखेबाज क्यों समझता'। चंचला बोली– 'तो क्या तुमने मेरी आँखों में वह चमक नहीं देखी थी। वह प्यार की महक नहीं अनुभव की थी यानि मैं धोखे में रही'।[8]

यह कहानी मूल रूप से वर्तमान युग के लोगों के स्वार्थी चेहरों को दर्शाती है। वातावरण वर्तमान समय के अनुरूप है। इसकी भाषा परिष्कृत खड़ी बोली है। भाषा भावों को व्यक्त करने वाली है, शैली भावनात्मक तथा संस्मरणात्मक है। इस कहानी के केन्द्र में चंचला और परेश के असीम प्रेम को दर्शाया गया है।

सिलवटें कहानी संग्रह–

हिंदी के कथा जगत में डॉ० अमिता दुबे स्त्रियों के प्रति केवल सहानुभूति रखने तक अपने विषय को सीमित न करते हुए राजनैतिक समस्याओं, बच्चों की समस्याओं का भी अपने साहित्य में चित्रण करती हैं। उनके लेखन में अनुभूति की ऊष्मा, अनुभव की ऊर्जा के साथ रची बसी हुई है। आधुनिक समाज में हँसी–खुशी से दिन बिताने वाले परिवार में एक छोटी सी बात के लिए किस प्रकार दरार पड़ती है, उसका हुबहू चित्रण डॉ० अमिता दुबे की कहानी से ज्ञात होता है। 'सिलवटें' कहानी संग्रह **2010** में **अविरल प्रकाशन, लखनऊ** द्वारा प्रकाशित हुई थी। इस कहानी संग्रह में कुल **09** कहानी संग्रह **85** पृष्ठों में संकलित हैं। इस कहानी संग्रह में संकलित **'किरिच'** कहानी में आधुनिक और परंपरा के बीच फँसे मनुष्य का चित्रण, संपन्न तथा अत्याधुनिक आचार–विचार को महत्व देने वाले पति–पत्नी तथा उनकी किशोरी तनुदा की संवेदनाओं का

[8] नयनदीप (साहस कहानी) पृ० सं० 61

वर्णन है। इस कहानी में कथा मुख्यतः दो पात्रों के केन्द्र में घूमती रहती है। यह कहानी एक ऐसी कथा एक ऐसी स्त्री की कथा है जो पढ़ी–लिखी आधुनिक विचारों से ओत–प्रोत है और वह जीवन साथी के रूप में ऐसे व्यक्ति को चुनती है जो शादी–विवाह जैसी संस्था पर विश्वास नहीं करता है। जिसकी वजह से स्वप्निल को शादी के बाद दुःख ही दुःख झेलने पड़ते हैं। बिना सोचे–समझे किया गया कार्य हमेशा ही कष्टकारी सिद्ध होता है। यह कहानी पति–पत्नी के अलगाव को दर्शाती हुई समाज की हर स्त्री के लिए सीख है।

"स्वप्निल ने जवानी के जोश में पन्द्रह वर्ष पहले जिस रास्ते पर कदम बढ़ाये थे वह रास्ता अन्ध कुआँ निकलेगा इसकी चेतावनी माँ ने तो दी थी लेकिन उसने उस समय कुछ भी नहीं सुना था न भाई की डाँट न बहन की मनुहार कुछ भी नहीं। उस पर तो सौरभ का नशा चढ़ा था। साधारण नाक नक्श वाली स्वप्निल राजकुमार से व्यक्तित्व वाले सौरभ का प्यार भरा मनुहार अनदेखा नहीं कर सकी लेकिन सौरभ विवाह–बन्धन को बेकार की चीज मानता था वह बिना किसी नैतिक दबाव के उन्मुक्त वैवाहिक जीवन जीना चाहता था। जब तक निभे साथ रहो न निभे तो टाटा बाय–बाय। वह चाहता था कि बिना किसी प्रोपेगैंडा के स्वप्निल सौरभ के जीवन में आ जाये और बिना किसी तमाशे के जब चाहे तब चली भी जाय। स्वप्निल के माता–पिता को यह मंजूर नहीं था पर स्वप्निल उस समय स्वप्न में थी उसने कदम आगे बढ़ा दिये थे और वह बिना किसी तमाशे के सौरभ के जीवन में प्रवेश कर गयी।[9]

डॉ० अमिता दुबे ने इस कहानी में स्पष्ट किया है कि दांपत्य जीवन में पति अपनी आकांक्षाओं एवं स्वार्थ की पूर्ति के लिए पत्नी का साथ तो चाहता है पर उसकी इच्छाओं और भावनाओं की उपेक्षा करता है। विडंबना यह है कि आधुनिक शिक्षित नारियाँ भी अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व को दरकिनार करती हुई झूठी प्रतिष्ठा के भ्रम को पोषते हुए पति की इस चाल को समझ नहीं पाती और स्वंय को सबसे अलग पाकर अंदर–अंदर छटपटाती रहती हैं। अमिता दुबे खंडित दांपत्य जीवन का चित्रण करती है। इस कहानी संग्रह में पुरूष के स्वार्थी प्रवृत्ति और भारतीय संस्कारों में

[9] सिलवटें (किरिच कहानी), पृ० सं० 6–7

जीने वाली नारियों की कमजोरी का संकेत किया है। कहानी में वह आधुनिक नारी की मुक्तियात्रा के उस छोर का संकेत करती है जहाँ पहुँचकर उसे मजबूरन पारंपरिक पुरूष–प्रधान व्यवस्था के प्रति समर्पित हो जाना पड़ता है। वह न तो अपनी पिछली जिंदगी छोड़ पाती हैं और न ही अपनी चुनी हुई जिंदगी को सही ढंग से भोग पाती हैं। इस कहानी की भाषा सरल सहज खड़ी बोली है और इसकी शैली वर्णनात्मक है।

'**सिलवटें**' कहानी संग्रह में '**अस्तित्व**' नामक कहानी में पितृसत्तात्मक समाज में लड़कियों के प्रति तुच्छ मानसिकता का चित्रण किया गया है। आधुनिक समाज में पुरूषों द्वारा लड़का–लड़कियों में भेद करना उनकी आज के समय की छोटी सोच का परिचायक है। जहाँ लड़कियाँ लड़कों से ज्यादा अपने माता–पिता का नाम रौशन कर रहीं हैं। उदाहरणार्थ–

'देख लेना अगर बेटा नहीं हुआ तो मैं तुम्हारा क्या हाल करता हूँ। यदि इस बार तुमने बेटी पैदा की तो मैं तुम्हें जान से मार दूँगा। डॉक्टर हूँ कोई पकड़ भी नहीं पायेगा। यह तुम्हारी लाडली चुनमुन भी बच नहीं पायेगी मुझसे।' [10]

उन्होंने जहर उगलना शुरू किया– 'देखना अब मैं तुम्हारा और तुम्हारी लड़कियों का क्या हाल करता हूँ। यह न समझना कि मैं केवल धमकी दे रहा हूँ। घर पहुँचो तो। एक नहीं दो नहीं तीन–तीन बेटियाँ। लड़कियों की पूरी पलटन लेकर मेरे घर मत आना तुम, समझी की नहीं।'[11]

डॉ० अमिता दुबे की कहानी '**अस्तित्व**' के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता पर कटाक्ष है लड़कियों के प्रति तुच्छ मानसिकता के कारण ऐसी बहुत सी बच्चियों को भ्रूण लिंग की जाँच करने के बाद उसे वहीं खत्म कर दिया जाता है। ये जानते हुए भी कि किसी की जान लेना कितना बड़ा अपराध है। वो जो अभी तक जन्म भी न लिया हो।

'**नैसर्गिक अधिकार**' कहानी के माध्यम से अमिता दुबे ने हमारे समाज की अटल धारणा ये है कि बेटे–बेटियों में फर्क की है जिसे इस

---

[10] सिलवटें (अस्तित्व), पृ० सं० 72

[11] वही पृ० सं० 74

कहानी में तोड़ते हुए दिखाया गया है। आज के इस आधुनिक युग में लड़कियाँ भी अपने माँ–बाप का नाम रौशन करती हैं सिर्फ लड़के ही करेंगे यह बहुत छोटी सोच है जिसको हमें खत्म करना है। लड़का–लड़की हर क्षेत्र में समान है। उदाहरणार्थ–

'दादी ने पहले ही यह ऐलान कर दिया था–यह उसकी पढ़ाई का आखिरी साल है बहुत पढ़ चुकी अब घर का काम–काज सीखे और गृहस्थी के रंग–ढ़ंग में रचे–बसे। उसकी आँखे पनिया गयीं। उसे मालूम था भइया डॉक्टरी की पढ़ाई कर रहें हैं। इण्टर दूसरी श्रेणी में पास करने के बाद भी उन्हें शहर भेजा गया है और आगे की पढ़ाई के लिए। कालिन्दी ने परीक्षा के लिए जी तोड़ मेहनत की है वह अव्वल आयेगी लेकिन दादी की बात का क्या होगा?'[12] 'अरे लड़की की जात होकर भाई की बराबरी करती है भाई को तो खानदान का नाम रोशन करना है घर का इकलौता चिराग है वह। अरे, बेटियों को तो यही गिरस्ती सम्हालनी होती है चाहे जितना पढ़–लिख लो। वैसे तुझे इतना तो पढ़ा ही दिया है कि चिट्ठी –पत्री लिख ले। बहुत शौक लगा है पढ़ने का तो अपने घर जाकर पढ़ना। हमें कलेक्टरी नहीं करवानी है तुझसे।'[13]

स्त्रियों के प्रति भेदभाव उनका कैसे जीवन बर्बाद कर देते हैं इस कहानी के माध्यम से मार्मिक चित्रण किया गया है। इस कहानी की भाषा सरल सहज खड़ीबोली और वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

'सिलवटें कहानी मध्यमवर्गीय समाज में स्त्रियों के प्रति तुच्छ मानसिकता, जातिगत रूढ़ियों से ग्रस्त मानसिकता का वर्णन किया गया है। इस कहानी के प्रमुख पात्र सुरभि और स्वंय हैं सुरभि एक पढ़ी लिखी स्वतंत्र लड़की है और स्वंय एक छोटी सोच रखने वाला पुरूष है। स्वंय की वजह से सुरभि को बहुत से दुःखों और कष्टों का सामना करना पड़ता है। इस कहानी में अन्तर्जातीय विवाह को लेकर समाज में व्याप्त रूढ़ियों का चित्रण किया गया है। उदाहरणार्थ–

---

[12] सिलवटें (नैसर्गिक अधिकार), पृ० सं० 79–80

[13] वही

'पिछले दिनों तेरे चाचा आये थे बता रहे थे कि अपनी शालू मनपसंद लड़के से शादी करना चाहती है। वह लड़का पिछड़ी जाति का भी है। तेरे चाचा ने बहुत समझाया लेकिन शालू नहीं मानी और उसने उस लड़के से कोर्ट मैरिज कर ली। अब इस समस्या का क्या किया जाय यह सबकी चिन्ता है?[14]

'इसमें चिन्ता की क्या बात है? जब शालू दी ने शादी ही कर ली है तो एक रिसेप्शन देकर छुट्टी करें।' 'ऐसे कैसे छूट्टी करें। कितनी बदनामी होगी। खानदान की नाक ही कट जायेगी। तेरे चाचा तो यह भी कह रहे थे कि सुरभि की नौकरी छुड़वाकर घर बैठा दो नही ंतो वह भी कोई गुल जरूर खिलायेगी।'[15]

इस कहानी में परिवार के द्वारा लिया गया एक गलत फैसला कैसे सुरभि की जिन्दगी को बर्बाद कर देता है। जिसकी कीमत उसे अपनी मौत से चुकानी पड़ती है। मध्यवर्गीय परिवार में ऐसे ही तमाम मुश्किलों का सामना कर रही हर स्त्री को करना पड़ता है।

'पुनर्वास' कहानी संग्रह–

अमिता दुबे की 'पुनर्वासं' कहानी संग्रह **2014** में **साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद** द्वारा प्रकाशित हुई थी। इस कहानी संग्रह में कुल **14** कहानी संग्रह **109** पृष्ठों में संकलित हैं। यह कहानी संग्रह एक आम ग्रहणी, कामकाजी महिला, बहू, पत्नी, माँ क्या अनुभव करती है और समाज देखने का उसका क्या दृष्टिकोण है इन कहानियों का मुख्य आधार है। 'पुनर्वास' कहानी संग्रह में संकलित 'पुनर्वास' एक विधवा स्त्री अर्पिता की कहानी है। विवाह के 10 वर्ष पश्चात् अर्पिता के पति की मृत्यु हो जाती है। अर्पिता और उसका 10 वर्ष का पुत्र अकेला हो जाता है।

'अचानक हमारे ऊपर दुःखों का का पहाड़ा टूट पड़ा। भइया का ट्रेन से एक्सीडेण्ट हो गया। एक स्टेशन पर पानी पीने के लिए वे उतरे। गाड़ी चल पड़ी हड़बड़ा कर चढ़ने की कोशिश में उनका पैर फिसला और एक हाथ और एक पैर ट्रेन के नीचे आ गया। फिर शुरू हुआ अस्पतालों

---

[14] सिलवटें कहानी, पृ० सं० 86

[15] सिलवटें कहानी, पृ० सं० 86

का लम्बा सिलसिला। भाभी बेचारी अकेले सबकुछ सम्भालते–सम्भालते पस्त हो जाती लेकिन उनके चेहरे पर शिकन नहीं आती। जितना बन पड़ता मैं और रजनीश भी सहयोग करते। बाबूजी बहुत निराश थे भाभी और मैं उन्हें हिम्मत दिलाते लेकिन सच्चाई हम भी जानते थे कि भइया का बचना बहुत मुश्किल है। आखिर पन्द्रह दिनों के संघर्ष के बाद उन्हें मुक्ति मिली। 'मुक्ति' इसलिए कह रही हूँ क्योंकि यदि वे जीते रहते तो उनके लिए अपनी जिन्दगी का बोझ उठाना बहुत कठिन हो जाता। भाभी तो सबकुछ धैर्य से सह लेतीं लेकिन भइया का धैर्य तो इन पन्द्रह दिनों में ही चुक गया था। फिर भी मरने वाले के साथ मरा नहीं जाता और न ही जीवन कभी रूकता है। भाभी को भइया की जगह नौकरी मिल गयी थी।[16]

अतः यह कहानी परिवार में अकेली स्त्री की व्यथा और मनोदशा का चित्रण किया गया है।

'पुनर्वास' कहानी में संकलित **'डर'** कहानी स्त्री की प्रेम, काम, संवेदना आदि के माध्यम से स्त्री की मनोदशा और पुरूषों की वासना का चित्रण किया गया है। इस कहानी में तनिमा और आदित्य पति–पत्नी हैं। आदित्य अपनी साली के साथ यौन संबंध बनाने के कारण कनिष्का के माँ बन जाने से आदित्य घबरा जाता है और वह ऐसा कदम उठाता है कि अपने इस नए रिश्ते को बचाने के लिए वह अपनी पत्नी की हत्या को अंजाम देता है।

'अपनी पत्नी तनिमा का अन्तिम संस्कार कर मैं, आदित्य, दुनिया को दिखाने के लिए उदास बैठा हूँ। मेरी दो महीने की बच्ची जिसका नाम तनिमा ने 'अपेक्षा' रखा था मेरी साली कनिष्का की गोद में निश्चिन्त भाव से सो रही है। पास ही मेरी सास बैठी हैं। उनकी आँखों से अविरल अश्रुधार बह रही है। लोग आ–जा रहे हैं। मैं रटी–रटायी कहानी सबको सुना रहा हूँ–'क्या बताऊँ साहब, मुझे खुद पता ही नहीं चला। हम सो रहे थे। न जाने तनिमा कब उठकर रसोई में चली गयी। क्या हुआ, कैसे हुआ मैं नहीं जानता। उसकी हवा में गूँजती चीखों से मेरी आँख खुली। तब

---

[16] पुनर्वास कहानी पृ० सं० 15

बच्ची झूले में लेटी थी। जब तक मैं रसोई में पहुँचा वह दरवाजे के पास बेहोश पड़ी थी। जलने के बाद अन्तिम समय तक वह कुछ नहीं बोली। बेचारी कोमा में थी। मेरा तो घर ही उजड़ गया।'

मेरी आँसुओं की सच्चाई भले ही कोई न जाने लेकिन मेरे मस्तिष्क पर आत्मग्लानि के हथौड़े पड़ रहे हैं।'[17]

इस कहानी संग्रह में अमिता दुबे की कहानियाँ अधिकतर नारी जीवन के संघर्ष से चित्रित है। यथार्थता उनकी कहानियों की विशेषता मानी जा सकती है। उनकी कहानियों में नारी मन की दुर्बलताओं का चित्रण भी देख सकते हैं। नारी के काम संबंधों को भी उन्होंने बड़ा महत्व दिया है।

'सुखमनी' कहानी संग्रह–

सुखमनी कहानी डॉ० अमिता दुबे की छठवीं कहानी संग्रह है। जिसका प्रकाशन **2017** में **राजेश प्रकाशन, दिल्ली** द्वारा हुआ था और इस कहानी संग्रह में कुल **18** कहानियाँ **124** पृष्ठों में संकलित है। **'सुखमनी'** कहानी अभिव्यक्ति संस्था द्वारा प्रकाशित महिला कथाकारों के कहानी संग्रह **'आह्वान'** में प्रकाशित हुई थी। लोकार्पण समारोह में मुख्य वक्ता सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री संजीव जायसवाल 'संजय' ने कहा था– डॉ० अमिता दुबे की कहानी 'सुखमनी' कहानी के एक वाक्य '**दो जोड़ी लड़खड़ाते कदम एक दूसरे का हाथ थामकर जीवन जीने की कोशिश में लग गए हैं' पर पूरा कहानी संग्रह कुर्बान!'**[18]

'**सुखमनी**' कहानी सरदार पति–पत्नी जिनका नाम सरदार बलवंत और पत्नी रूमाल कौर की मार्मिक कहानी है। इस कहानी की कथा का केन्द्र ये दोनों पति–पत्नी ही हैं।

'सरदार बलवंत सिंह को सरकारी नौकरी से रिटायर हुए पाँच बरस हो चुके हैं। रिटायरमेण्ट के बाद एक बरस तो उन्होंने खूब सैर–सपाटा किया। कभी किसी रिश्तेदार के यहाँ तो कभी किसी दोस्त के घर। अपने

---

[17] पुनर्वास (डर कहानी) पृ० सं० 15

[18] सुखमनी कहानी की भूमिका, अमिता दुबे

शहर में भी और बाहर भी। पत्नी को साथ लेकर तीर्थस्थलों का भ्रमण भी कर आये। गुरूद्वारों में मत्था टेका तो माता की चढ़ाई भी चढ़ डाली। लेकिन यह सब कितने दिन चलता। आखिर लौटकर सबको घर ही आना होता है। सरदार जी का छोटा परिवार है, दो ही बेटे हैं। दोनों अपनी–अपनी गृहस्थी में मगन। दोनों के दो–दो बच्चे। बड़ा बेटा चण्डीगढ़ में, छोटा बरेली में, सरदार–सरदारनी अमृतसर में।'[19]

रूमाल कौर की एक हार्दिक इच्छा थी कि उसके भी एक बेटी होती तो कितना अच्छा था, अच्छे से उसका पालन–पोषण करती और उसकी बड़ी धूम–धाम से शादी–ब्याह करती पर उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पायी। उसके दो लड़के थे जो शादी के बाद अपनी–अपनी गृहस्थी में मग्न थे और यहाँ पत्नी और पति दोनों अकेलापन महसूस करते थे।

यह कहानी एक पति–पत्नी और एक आधुनिक विचारों वाली पढ़ी लिखी लड़की के वैवाहिक जीवन के संत्रास का मार्मिक वर्णन 'सुखमनी' कहानी के माध्यम से किया गया है।

इसी तरह 'सौत' कहानी में डॉ० अमिता दुबे ने झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले लोगों और सोसाइटी में रहने वाले सम्पन्न लोगों की मानसिकता का चित्रण इस कहानी के माध्यम से किया है।

'इन समाज सेवियों में अजन्ता सबसे आगे थी। उसने समाजकार्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की थी। प्रतिशत अच्छा आया था इसलिए एम०फिल० के बाद पी–एच०डी० उपाधि हेतु शोधकार्य में लगी हुई थी। उसके विषय का सीधा सम्बन्ध मलिन बस्तियों से था जहाँ गन्दगी अपना साम्राज्य निरन्तर फैलाये रहती है, इसीलिए आम बीमारियाँ भी वहाँ महामारी बन जाती हैं। इन झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाले लोगों का जीवन निकटता से देखने पर प्रारम्भ में तो अजन्ता को बहुत पीड़ा हुई, लेकिन धीरे–धीरे उसका विश्वास दृढ़ होता गया कि ये लोग इसी जीवन के आदी हैं। इन्हें चाहे जितनी सुविधाएँ देने का प्रयास करें इनका ध्यान नगद रूपयों की ओर अधिक रहता है जिससे उन नगद रूपयों से एक 'विशेष प्रकार की सुविधा' विशेष वर्ग अधिकांशतः पुरूष कभी–कभी

---

[19] सुखमनी कहानी, पृ० सं० 09

महिलाओं, को भी प्राप्त हो सके। उस विशेष चीज के सेवन के बाद इन बस्तियों में जो हंगामा होता है उसका दर्शन एक–दो बार अजन्ता ने भी किया है।'[20]

इस कहानी में अमिता दुबे ने झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले पुरूष शराब गांजा के नशे में अपना और अपने परिवार के जीवन को नष्ट कर देते हैं इस कहानी के माध्यम से वर्णन किया है। इस कहानी की यथार्थता ही इसका प्रमुख अंग है।

'सीढ़ी' कहानी संग्रह–

'सीढ़ी' कहानी संग्रह **2018** में विभा **प्रकाशन, इलाहाबाद** से प्रकाशित हुआ था। और इस कहानी संग्रह में कुल **16** कहानियाँ **93** पृष्ठों में संकलित हैं। इस कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'पवित्र प्रेम' प्रेम पर आधारित कहानी है। जिस प्रकार प्रेम ईश्वर का वरदान है जिसकी चाहत सिर्फ इंसान को ही नहीं बल्कि धरती पर रहने वाले हर प्राणी को है। प्रेम ही एक मात्र साधन है जो व्यक्ति, परिवार, समाज को एक धागे में पिरोकर रख सकता है। अगर धरती पर लोगों के हृदय में प्रेम न बहता तो संसार में सबकुछ नीरस होता, कोई किसी से न बंधता और न ही रिश्तों की परवाह करता, आखिर दुनिया को बांध कर रखने वाला प्रेम ही तो है। जिससे दुनिया का संचार हो रहा है। अमिता दुबे की कहानी 'पवित्र प्रेम' ऐसी ही कहानी है जिसमें उन्होंने युवा वर्ग की एक प्रेम कहानी का नग्न चित्रण प्रस्तुत किया है कि किस प्रकार प्रेम करने वालों को प्रेम करने की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ती है।

'जिसमें बृजेन्द्र को ऊँची जाति की एक लड़की से आँख लड़ाने की सजा मिली थी, रामकिशन ने दोनों प्रेमियों के मिलने में सहायता पहुँचाने का दुःसाहस किया था और रोशनी को बिरादरी की नाक नीची करने का दण्ड दिया गया था जिससे आगे कोई लड़की ऐसी हिम्मत न कर सके।'

अहिल्या सोच रही थी बृजेन्द्र और रौशनी का प्रेम शाश्वत प्रेम था जिसमें अपने प्रेम पर विश्वास था वही नरेन्द्र सिंह 'आशा' और रवीन्द्र कौर

---

[20] सुखमनी (सौत), पृ० सं०16

'बेबी' का प्रेम भी तो 'पवित्र प्रेम' था जो समाज के तथाकथित ठेकेदारों की कुदृष्टि के बाद भी अमर हो गया।[21]

अतः इस कहानी में समाज में व्याप्त पूर्वागृह और रूढ़ियों से ग्रसित छोटी मानसिकता का चित्रण लेखिका ने बड़ी मार्मिकता से किया है। जिसको पढ़ कर किसी का भी दिल पसीज सकता है। प्रेम को कमतर आंकने वाले समाज की तुच्छ मानसिकता का चित्रण किया गया है।

सीढ़ी कहानी संग्रह में संकलित '**पहचान**' कहानी एक पति द्वारा दो–दो विवाह किये जाने पर आधारित है। किस तरह एक पुरूष दो स्त्रियों के जीवन को बर्बाद करता है। इस कहानी के माध्यम से चित्रण किया गया है।

क्षितिज पायल को स्टाफ रूम में ले आये। प्यार से बिठाया और पूछा– 'बेटी! बुरा न मानना एक व्यक्तिगत प्रश्न पूछ रहा हूँ–'क्या तुम्हें अपने पिता का नाम मालूम है।' 'जी सर, उसने निशंक हो क्षितिज की आँखों में आँखें डालकर कहा, श्री क्षितिज तिवारी। वह इसी कॉलेज में लेक्चरार हैं और मेरे सामने बैठे हैं। मैंने जीवन के किसी भी क्षण उन्हें याद नहीं किया न तब जब मैं पालने में झूलती थी न तब जब 'क', 'ख', 'ग' पढ़ती थी और न तब जब समाज ने यह प्रश्न उठाया कि पिता का नाम क्या है मेरा परिचय मात्र इतना है कि मैं तनुजा जैसी माँ की बेटी हूँ जिसने जीवन के उस क्षण को स्मृतियों में बन्द कर दिया जिसे याद कर लोग जीवन भर आँसू बहाते हैं अथवा जहर उगलते हैं। मेरी माँ ने सर! मेरे पिता के प्रति मेरे मन में न अनुराग का वृक्ष रोपा और न ही घृणा रूपी विष की बेल। आपको विचित्र लगेगा सर! लेकिन मैं अपने पिता से न प्यार करती हूँ और न नफरत। न ही मुझे आज तक उनकी आवश्यकता पड़ी न आगे पड़ेगी। क्योंकि मुझे एक सशक्त नारी ने मजबूत इरादों के साथ पाला है। जब मैं थोड़ा समझदार हुई तो उन्होंने मेरे जीवन की सच्चाई मुझे बता दी। उसके बाद हमने यह तय किया कि जीवन के किसी क्षण यदि वह व्यक्ति जो मेरा पिता है उनका पति है अपना अधिकार जताते हुए माफी भी माँगे तो हम दोनों का एक ही उत्तर

---

[21] सीढ़ी (पवित्र प्रेम) पृ० सं०40, 43

होगा—माफ कीजिए हमें आपसे कोई सरोकार नहीं।' हमें आपसे कोई पहचान नहीं चाहिए'।[22]

पुरूषों द्वारा छली जाने के बावजूद कैसे स्त्रियाँ उन्हें माफ कर देती हैं फिर भी पुरूषों के प्रति उनके मन में कोई द्वेष उत्पन्न नहीं होता है। अतः इस कहानी के माध्यम से डॉ० अमिता दुबे पुरूषों के फरेबी व्यवहार का चित्रण किया है कि पुरूष किस तरह जान—बूझकर दो—दो स्त्रियों के जीवन को बर्बाद करते हैं उन्हें गलती का तनिक भी आभाष नहीं होता है।

'**सीढ़ी**' कहानी संग्रह में संकलित 'दास्तान' कहानी स्त्री के यौन शोषण पर आधारित है कि किस तरह गरीब लड़कियों को शादी के बहाने उसी के ससुराल वाले उसका यौन शोषण करते हैं। जबकि उसके पति के साथ ही उसका ससुर भी लड़की के साथ सम्बन्ध बनाना चाहता है।

'साहब! इसका ब्याह पड़ोस के गाँव में एक खाते—पीते परिवार में हुआ था अभी दो बरस पहले हमारी हैसियत कुछ भी देने—लेने की नहीं थी फिर भी इसकी खूबसूरती पर रीझा था इसका मियाँ और ससुर इसलिए बिना दहेज के शादी हुई। बारात की खातिरदारी में गाँव भर ने सहायता की थी। यह यहाँ का कायदा है। नही ंतो गरीब की बेटी ब्याही ही कैसी जाय।' 'लेकिन इस स्वर्ग में अगर तीन—तीन राक्षस हों तो बेचारी औरत क्या करे मैडम जी। यासमीन ने रोते हुए कहा—'मरे नहीं तो क्या करे वह लड़की जिसके बाप और दादा जर्बदस्ती ससुराल भेजते हैं बिना यह पूछे कि बेटी! तू जाना क्यों नहीं चाहती। यहाँ तक कह देते हैं जा—जा वहीं रह नहीं रह सकती तो मर। फिर वो लड़की कहाँ आसरा ढूँढ़े जिसके ससुर और देवर शौहर की तरह रहना चाहते हों और शौहर भी रजामन्द हो। यह कहता हो क्या फर्क पड़ता है इस घर में कोई पाँचवाँ तो है नहीं जो बात बाहर जायेगी। ऐसे में लड़की छत से न कूदे, रेल से न कटे, फाँसी पर न लटके तो क्या करे।' यासमीन के साथ नसीमा भी जार—जार रोने लगीं।[23]

---

[22] सीढ़ी (पहचान), पृ० सं० 33—34

[23] सीढ़ी (दास्तान) पृ० सं० 30,32

अतः इस कहानी के माध्यम से डॉ० अमिता दुबे स्त्रियों के बलात् शोषण का चित्रण इस कहानी में किया गया है।

'सीढ़ी' कहानी संग्रह में संकलित कहानी **'कर्ज'** अमिता दुबे की एक उत्कृष्ट कहानी हैं यह कहानी आधुनिक लड़की की सोच और उसकी हठधर्मिता की कहानी है। किस प्रकार वो अपने माता–पिता के प्रति मोह को त्याग कर सिर्फ अपने भविष्य का निर्माण करना चाहती है और यह कार्य उसे किसी भी कीमत पर पूरा करना है। अमिता दुबे ने अवन्तिका का अपने पिता के प्रति रूखा व्यवहार और हठधर्मिता तथा उसके पिता के कष्टों व दुःखों से अनजान लड़की की मार्मिक कहानी का चित्रण किया गया है।

'धनुक' के रंग कहानी संग्रह–

यह कहानी संग्रह अमिता दुबे का सातवाँ कहानी संग्रह हैं जो कि **2020** में **नमन प्रकाशन, लखनऊ** द्वारा कोरोना काल के खत्म हो जाने के बाद प्रकाशित हुआ था। और इस कहानी संग्रह में कुल **11** कहानियाँ **105** पृष्ठों में संकलित हैं। इस कहानी संग्रह में कोरोना का समय कितना भयावह था अमिता दुबे ने अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है।

'धनुक के रंग' में संकलित कहानी **'अब तो लौट आओ'** कहानी मूलतः स्त्री के मानसिक करूणा और परिवार में अकेलापन, पारिवारिक स्त्री की मनोवैज्ञानिक स्थिति का सार्थक वर्णन इस कहानी के माध्यम से डॉ० अमिता दुबे ने किया है।

'पता नहीं यार! मुझे तो लगता है सबकुछ धीरे–धीरे होता चला गया और हम समझ नहीं पाये। अवनि शान्त स्वभाव की हमेशा खुश रहने वाली स्त्री है। उसने हर मौके पर मेरा साथ दिया, मेरा मन खिन्न होता था तब मैं सारा गुस्सा उसके ऊपर उतार लेता था वह शान्ति से सब सह जाती थी।' नीलांश मानो आत्म विश्लेषण कर रहे थे।' मैं नहीं जानता रीतेश, बिल्कुल नहीं समझ पा रहा हूँ कि अपनी अवनि को समझने में मुझसे कहाँ भूल हुई। आज उसे घर से गये पूरा एक महीना हो गया। वह अपने साथ न तो पैसे ले गयी है, न ए.टी.एम. कार्ड न ही मोबाइल! हम

हर सम्भावित जगह, जहाँ वह जा सकती थी, तक ढूँढ़ आये, कहीं से कुछ पता नहीं चला।[24]

अतः इस कहानी में नारी के जीवन का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। हमारे पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियाँ क्या चाहती हैं यह जानने की कोई कोशिश भी नहीं करता है बस उस पर समाज की सारी जिम्मेदारियाँ मढ़ दी जाती हैं और उसके मन में क्या चल रहा है यह कोई जानना नहीं चाहता है। परिवार में अकेलापन, अलगाव, मानसिक पीड़ा का सशक्त उदाहरण इस कहानी के माध्यम से चित्रित किया गया है।

'धनुक के रंग' कहानी मुस्लिम परिवार की एक लड़की की कहानी है। जो लॉकडाउन शुरू होने पर शहर से गाँव पलायन करने वाले लोगों में से महक नामक लड़की की मार्मिक कहानी का वर्णन किया है। महक अपनी दादीजान शौकत बी जो उम्रदराज महिला हैं उनको लेकर अपने गाँव वापस आती है और रास्ते में ही उन्हें उनके मुहल्ले का एक लड़का शाकिब मिलता है जो कि घर तक पहुँचने में उनकी बहुत मद्द करता है और वह मन ही मन महक से प्रेम करने लगता है।

'चच्चीजान! मुझे महक की उदास आँखें अच्छी लगती हैं मैं उनमें रंग भरना चाहता हूँ, धनुक के चटक रंग। अगर आज सबकी इजाजत हो और सबसे बढ़कर महक राजी हो। उसकी रजामंदी के बिना कुछ भी नहीं।' साकिब ने एक साँस में बात पूरी की।[25]

महक की शादी पहले से ही शादी–शुदा आदमी के साथ जर्बदस्ती करवा दी जाती है। किसी तरह वह वहाँ से बच जाती है और वह अपनी दादीजान के साथ रहने लगती है। अतः कहानी के माध्यम से पुरूषवादी सोच और स्त्री शोषण का चित्रण किया गया है।

'संभावना के जुगनू' कहानी संग्रह–

यह कहानी संग्रह डॉ० अमिता दुबे का आठवाँ कहानी संग्रह है। जो 2021 में **के० एल० पचौरी प्रकाशन**, **गाजियाबाद** से अभी हाल ही में

[24] धनुक के रंग (अब तो लौट आओ) पृ० सं० 21

[25] धनुक के रंग, पृ० सं० 111

प्रकाशित हुआ है। इस कहानी संग्रह में **11** कहानियाँ कुल 81 पृष्ठों में संकलित है। **'मी टू'** कहानी में स्त्री के बलात् शोषण का चित्रण किया गया है। शुरू से ही पुरूषवादी मानसिकता के कारण किसी न किसी तरह स्त्रियों को छला ही गया है।

'यह दुनिया भी अजीब है कोई अतिरिक्त सहानुभूति दिखाये, लाभ दे, उपहार दे, बेवजह मेहरबानियों की बरसात करे तो स्त्री को सतर्क हो जाना चाहिए कहीं मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक शोषण तो नहीं होने जा रहा है।'[26]

अतः इस कहानी में स्त्री को शोषण के खिलाफ विरोध कैसे करना चाहिए और स्त्रियों को मानसिक रूप से भी मजबूत होना चाहिए। डॉ० अमिता दुबे की कहानियाँ आज के यथार्थ पर सटीक टिप्पणी करती नजर आती हैं। इसी तरह **'ऊर्जा'** कहानी में बालमन पर हावी हठधर्मिता को सुलझाने का प्रयास किया गया है। 'शिला' कहानी में स्त्री और पुरूष के आपसी प्रेम का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। '**हठधर्म**' कहानी में पारिवारिक स्त्रियों के रूढ़िवादी सोच के कारण बिखरते रिश्तों की मार्मिक कहानी का वर्णन किया गया है। इसी तरह **'मुझे शिकायत है'** कहानी में डॉ० अमिता दुबे ने समाज में व्याप्त रूढ़ि व पूर्वागृह कि लड़का और लड़की में फर्क करना और बेटियों को कोख में ही मरवा देना इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने समाज पर तीखा कटाक्ष किया है। अभी भी किस तरह समाज में बेटा और बेटी में फर्क किया जाता है, का वर्णन इस कहानी के माध्यम से किया गया है।

'राह मिल गयी' बाल कहानी संग्रह–

'राह मिल गयी' कहानी संग्रह' डॉ० अमिता दुबे की आठवाँ कहानी संग्रह है। जिसका प्रकाशन **2019** में **राजेश प्रकाशन, दिल्ली** द्वारा हुआ था और इस कहानी संग्रह में कुल **05** कहानियाँ **34** पृष्ठों में संकलित है। **'राह मिल गयी कहानी**' संग्रह में संकलित कहानी 'राह मिल गयी' कहानी की नायिका आभा जिसका पढ़ाई में मन नहीं लगता है, फलस्वरूप परीक्षा

---

[26] संभावना के जुगनू (मी टू) पृ० सं० 34

में अधिकतर विषयों में फेल हो जाती है और फिर माता–पिता की डाँट खाती है। इसी तरह 'तनु बदल गई' कहानी का ताना–बाना एक ऐसी लड़की तनु को लक्ष्य कर बुना गया है जिसे लगता रहता है कि उसके मम्मी–पापा उसको बिल्कुल भी प्यार नहीं करते हैं केवल उसके छोटे भाई दिव्यांश को ही प्यार करते हैं और इसी कारण वह घर में आते ही तरह–तरह के हठधर्मी करने लगती है। सुबह को देर तक बिस्तर नहीं छोड़ती, घर का कोई काम नहीं करती लेकिन एक दिन जब उसकी मम्मी सुबह को काम करते हुए किचन में गिर जाती हैं और फ्रैक्चर हो जाने के कारण तनु को सोता हुआ छोड़कर अस्पताल में भर्ती हो जाती हैं तो तनु को बहुत अफसोस होता है। उसने अपने आपको बदलना शुरू किया तो उसे लगा कि घर में सभी उसे बहुत प्यार करते हैं। **'तनु सोच रही थी कि अपनी जिद और बेवकूफी में उसने कितने दिन बर्बाद कर दिये। घर में सभी लोग तो वैसे के वैसे ही हैं। बदली है तो केवल वह, उसकी सोच, उसकी दृष्टि। सबकुछ कितना प्यारा हो गया है उसके चारो ओर।**[27]'

अतः इस कहानी के माध्यम से डॉ० अमिता दुबे ने उन सभी बच्चों को एक अच्छा सन्देश दिया है जिनके मन में अपने माता–पिता के प्रति यह भाव रहता है कि हमारे माता–पिता हम बहन–भाइयों में भेदभाव पूर्ण व्यवहार करते हैं। इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद हैं।

2.1 कहानियों में पारिवारिक जीवन–

डॉ० अमिता दुबे की कहानियों के अन्तर्गत निम्नलिखित बिंदुओं को देखा जा सकता है– संयुक्त परिवार की गृहणी जीवन, मध्यमवर्गीय परिवार, आदर्श परिवार, शहरी परिवार, पति–पत्नी का सम्बन्ध, मातृत्व प्रेम या वात्सल्य तथा विधवा नारी का पारिवारिक जीवन का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है। डॉ० अमिता दुबे एक समर्थ कथाकार के तौर पर पिछले बीस सालों से कथा जगत में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराती हैं। इनके रचना संसार का फलक जितना व्यापक है, वैसा हिन्दी में कम ही रचनाकारों में दिखता है।

---

[27] राह मिल गयी (तनु बदल गयी), पृ० सं० 35

प्रस्तुत समाज में मानव जीवन की समस्याओं और अस्तित्व की जटिलता को जानने के लिए सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों को देखना आवश्यक है। व्यक्ति समुदाय और परिवार से जुड़े होने पर भी व्यक्तिगत और सामाजिक मानव अस्तित्व का आदर्श, राष्ट्रहित, नैतिकता के विभिन्न सिद्धान्तों के आधार पर देखा जा सकता है।

हिन्दी शब्दकोश— डॉ० हरदेव बाहरी के अनुसार "परिवार" शब्द का अर्थ एक घर में और एक के संरक्षण में रहने वाले लोग, एक ही पूर्ण पुरूष के वंशज। आयोजन—नियोजन, आवश्यकता से अधिक संतान उत्पन्न न करने की योजना, फैमिली प्लानिंग।" हिन्दी का 'परिवार' शब्द अंग्रजी के 'family' शब्द का पर्याय है। 'पारिवारिक' शब्द का अर्थ—'परिवार से संबंध रखने वाला, परिवार का (जैसे—पारिवारिक झंझटों से वह परेशान हो चुका था)" उपर्युक्त आधार पर परिवार की परिभाषा डॉ० मार्डक के अनुसार— ''परिवार एक ऐसा समूह है, जिसके लक्षण सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग और जनन है, इनमें दो लिंगों के बालिग शामिल हैं, जिनमें कम से कम दो व्यक्तियों में स्वीकृत यौन संबंध होता है, उनके अपने या गोद लिये हुए एक या एक से अधिक बच्चे होते हैं।

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण वह समाज में रहता है और समाज परिवार से बनता है, भारत का इतिहास परिवार से है। परिवार के बिना समाज नहीं बनता। आदियुगीन पारिवारिक जीवन का स्वरूप समन्वय का था, परिवार के सभी सदस्यगण मिल—जुल कर जीवन निर्वाह करते थे सुख—दुःख को आपस में बाँटकर जीवन—यापन करते थे। आधुनिक युग परिवर्तनशीलता का युग है। साल दर साल सभी क्षेत्रों में हमें परिवर्तन दिखाई देता है। डॉ० अमिता दुबे का कथा साहित्य का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक जीवन को लेकर लिखी गई इन कथ्यों में मुख्य रूप से दाम्पत्य जीवन का वह रूप चित्रित किया गया है जिसमें प्रस्तुत युग के समाज में अत्यधिक वैवाहिक जीवन टूटता या बिखरता दिखाई देता है। आदिकाल में जो परिवार के बड़े बुजुर्ग होते थे वे ही परिवार के मुखिया माने जाते थे। परन्तु बदलते परिवेश में जो कमाकर लाता है वही परिवार का मुखिया कहलाने लगा है, जिसके कारण परिस्थितियाँ, आवश्यकताएँ तथा सामाजिक संबंधों का प्रभाव पारिवारिक

जीवन पर पड़ा, नारी परंपराओं एवं प्रथाओं का समावेश हुआ। जिसके कारण संयुक्त परिवार टूटने लगे, परिणाम यह हुआ कि प्राचीन मूल्य व परंपराएँ प्रायः विलुप्त हो गई। परिवार में कुंठा, तलाक तथा बिखराव बढ़ने लगा, जिसका सीधा परिणाम पारिवारिक जीवन पर के बदलते स्वरूप पर दिखाई देता है जो डॉ० अमिता दुबे की कथा साहित्य में गहरी संवेदना और यथार्थ रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

पारिवारिक जीवन से संबंधित इनकी कहानी **'यशोदा अम्मा**' कहानी की कथावस्तु सामाजिक परिवेश की है। इस कहानी के माध्यम से मातृत्व प्रेम एवं वात्सल्य लेखिका ने मार्मिक चित्रण लेखिका ने किया है। यशोदा अम्मा कन्हैया के घर आया का काम करती है परन्तु उनकी गिनती परिवार के सदस्यों में होती है। कन्हैया यशोदा अम्मा की पलकों की छाँव में पला। यशोदा अम्मा कन्हैया को अपने हाथ से खाना खिलाती थी इसी लिए 11 वर्ष तक की उम्र तक कन्हैया अपने हाथ से खाना नहीं खा पाता था।

अमिता दुबे की अधिकतर कहानियाँ आधुनिक शहरी जीवन के मध्यवर्गीय परिवार को केन्द्र में रखकर रची गयी हैं। पारिवारिक जीवन को लेकर लिखी गई कहानियों में मुख्य रूप से दाम्पत्य जीवन का वह रूप चित्रित किया गया है, जिसमें वैवाहिक जीवन टूटता या बिखरता हुआ दिखाई देता है। इनकी कुछ कहानियों की कथावस्तु शहरी परिवार और नारी की समस्या के अलावा परिवार से हटकर अलग विषयों को लेकर लिखा गया है, जिसमें पीढ़ियों के अंतर के कारण भेदभाव, अपने ही परिवार के सदस्यों की स्वार्थवृत्ति आदि कहानियों में सूक्ष्म रूप से चित्रित किया गया है। '**प्रतीक्षा**' कहानी के माध्यम से शहरी परिवेश जीवन में अमोला की वर्तमान जीवन की महत्वाकांक्षाओं को दर्शाती है। व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए किसी की भी भावनाओं को ठेस पहुँचाने में भी झिझकता नहीं।

'छलावा' कहानी में भी पति—पत्नी के संबंधों का मार्मिक चित्रण हुआ है। पति के जीवन के लिए अतिका सर्वस्व त्याग करने के लिए तैयार हो जाती है। फिर भी अतिका का पति दूसरी स्त्री से सम्बन्ध रखता है।

परिवार समाज की प्रमुख इकाई है। समाज के निर्माण में परिवार की अह्म भूमिका होती है। मानव–प्रगति के इस युग में जब व्यक्ति–स्वतंत्रता की अराजकता की हद तक महत्व दिया जाता है और तानाशाही को 'सभ्य' समाज में अत्यन्त निन्दनीय माना जाता है। नारी परिवार का अहम हिस्सा है। भारतीय संस्कृति में आदर्श परिवार एक दूसरे को आदर–सम्मान करते हैं परन्तु इस युग में यह अनुभूतियाँ जैसे धीरे–धीरे खत्म होती जा रहीं हैं। अमिता दुबे के कथा साहित्य में आदर्श परिवार की कथावस्तु नाम मात्र की दिखाई देती है पर लेखिका आदर्श परिवार के पक्ष को अपनी कहानियों में दर्शाने का प्रयास किया है। अमिता दुबे युगीन परिवार में बेटे को ज्यादा महत्व दिया जाता है पर यह सोच आज सरकार की नीतियों के कारण समाज में बदलता जा रहा है। आज एक आदर्श परिवार के लिए दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। लेखिका आदर्श परिवार की परिकल्पना करते हुए कहती हैं कि पैतृक सम्पत्ति पर बेटियों का समान अधिकार होना चाहिए जिस प्रकार एक परिवार अपने बेटे को अत्यधिक महत्व दे कर पालन–पोषण करता है, उसी प्रकार बेटियों को भी करना चाहिए, लेश मात्र भी भेद–भाव नहीं करना चाहिए **'मुझे शिकायत है'** कहानी के माध्यम से समाज में बेटा और बेटी के फर्क की मानसिकता को दर्शाया गया है।

'मी टू' कहानी के माध्यम से कथाकारा ने युगीन विधवा नारी के परिवार की समस्याओं को मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। **'सुलभा के पति असित की मौत के बाद उसके सास–ससुर आये थे उसके शरीर को ले गए थे, अन्तिम संस्कार पूर्ण होने के बाद सुलभा से साफ–साफ कह दिया गया था जब असित था तब तुमसे कोई नाता नहीं था तो अब उसके न रहने पर कोई सम्बन्ध बनता ही नहीं है। सुलभा ने साहस कर कहा था– 'और नयन का क्या होगा? सास ने बड़ी बेरहमी से आरोप लगाया था–'हम क्या जाने यह असित का बेटा है की नहीं'।**[28]

अतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक विकास के साथ–साथ अमिता दुबे युगीन पारिवारिक जीवन में भी परिवर्तन दिखाई देता है और आज भी दिखाई दे रहा है। बदलते वातावरण में नयी परंपराएँ तथा नयी प्रथाएँ

---

[28] संभावना के जुगनू (मी टू कहानी) पृ० सं० 30

पारिवारिक जीवन में ढलते चले जा रहें हैं। इनकी कहानियाँ व्यक्ति, परिवार और समाज में व्यापक रूप से व्याप्त आधुनिक संघर्ष और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को बड़ी सूक्ष्मता से नियोजित किया गया है। अमिता दुबे की अनेक कहानियाँ हैं, जिसमें असफल दाम्पत्य जीवन जीने वाली नारी का चित्रण किया गया है। **'संभावना के जुगनू' सुगन्ध, शिला, दास्तान** आदि की कथावस्तु सामाजिक वातावरण की तत्कालीन पारिवारिक जीवन का बोध कराती हैं।

2.3 कहानियों में स्त्री जीवन–

मानव जीवन में नर–नारी का अन्योन्याश्रित संबंध है। स्त्री–पुरूष के बिना यह संसार अधूरा है। विशेषतः नारी को जगत की जननी कहा जाता है। हमारे समाज में स्त्री को एक ओर देवी के रूप में सम्मान दिया जाता है वहीं दूसरी ओर उसकी उपेक्षा भी की जाती है। आज नारी ने समाज में अपना स्थान बनाया है किंतु समकालीन जीवन में स्त्री स्वतंत्र और मुक्त नहीं है। स्त्री भी एक मनुष्य है यह समझा नही जा रहा है। स्त्री के शरीर के परे जाकर उसकी ओर देखा ही नहीं जा रहा है। परिणामतः आज भी नारी हिंसा और शोषण का शिकार बन रही है। विधवापन, वेश्यावृत्ति, दहेज हत्या, भ्रूण हत्या, यौन उत्पीड़न, तलाक, परित्याग आदि समस्याओं का सामना आज की नारी कर रही है।

हिंदी कथा जगत में डॉ० अमिता दुबे की तरह लिखने वाले रचनाकार जो स्त्री के प्रति केवल सहानुभूति रखने तक अपने विषय को सीमित न रखते हुए राजनीतिक समस्याओं, बच्चों की समस्याओं का भी अपने साहित्य में चित्रण करती हैं। उनके लेखन में अनुभूति की ऊष्मा, अनुभव की ऊर्जा के साथ रची बसी हुई है। आधुनिक समाज में हँसी–खुशी से दिन बिताने वाले परिवार में एक छोटी सी बात के लिए किस प्रकार दरार पड़ती है। उसका हूबहू चित्रण अमिता दुबे के साहित्य से पता चलता है। 'अपनत्व' जैसी कहानी में आधुनिक और परंपरा के बीच फंसी स्त्री का चित्रण, सम्पन्न तथा अत्याधुनिक आचार–विचार को महत्व देने वाली पति–पत्नी की संवेदनाओं का चित्रण है।

अमिता दुबे स्वंय यह मानती हैं कि उनका साहित्य लिखने का उद्देश्य रचना के माध्यम से पाठकों को उस संवेदना के स्तर पर भागीदार बनाना या जोड़ना रहा है। यानि की एक की कथा व्यथा अनेक की बन सके। वे पारदर्शिता को कथा भाषा की अनिवार्यता मानती हैं।

आज जब हिन्दी जगत में स्त्री के लेखन को लेकर नारीवाद और अस्मिता विमर्श का बोलबाला दिखाई देता है। वहीं अमिता दुबे की कहानियाँ बिना किसी अतिरिक्त शोर–शराबे, जलसे–जुलूस की सुलभ नारेबाजी और युद्ध की मुद्रा के शांत और धीमे स्वर में प्रदर्शित करती हैं कि सहज रूप से व्यक्ति संपन्न मूल्य, सजग और उत्तरदायी स्त्री दृष्टि क्या होती है, यद्यपि जरूरी नहीं की कहानी का मुख्य पात्र कोई स्त्री ही हो।

अमिता दुबे की कहानियों में एक स्वतंत्र–न्यायप्रिय तथा संतुलित दृष्टि का चौमुख रचनात्मक बोध दिखाई देता है। प्रतिशत की दृष्टि से देखें तो शायद प्रेम दांपत्य, परिवार संबंधी कथानक के जरिए अमिता दुबे जी अपनी बहुमुखी सजगता का परिचय देती हैं। अपनी सादगी और अनुभूति की प्रमाणिकता के कारण उनकी कहानियाँ विशेष रूप से प्रशंसा पाती हैं। स्त्री मन की आकांक्षाएँ, पुरूष मन की ईर्ष्याएँ, आधुनिकता और जमी हुई रूढ़ियों पर इनकी पैनी निगाह हमेशा बनी रहती है।

इन तमाम विशेषताओं से भरी अमिता दुबे की कहानियाँ आज के समय में पाठकों के लिए मार्गदर्शन, जीवनयापन के लिए संबल है जो एक साथ हमें संघर्ष करने की ताकत भी देती हैं और अपना मार्ग स्वंय प्रशस्त करने की रोशनी भी। अमिता दुबे की कहानियाँ नारी को देवी या दानवी दिखाने के बजाए उसके मानवी गुणों को दिखाकर उसके मानवी रूप को उजागर करती हैं। मूल्यों के ह्रास के कारण किस प्रकार जीवन में समस्याएँ उत्पन्न होती है, यह उनकी कहानियों में दर्शाया गया है। जिनमें प्रमुख रूप से 'सीढ़ी' कहानी संग्रह में संकलित कहानियाँ **'मोह भंग, आवाज, पहचान, पवित्र प्रेम, महत्वाकांक्षा, संवेदना, सीढ़ी, ढाई आखर प्रेम** आदि प्रमुख हैं। इन सभी कहानियों में महिलाओं की व्यथा–कथा तथा मानसिकता का चित्रण प्रमुख रूप से उद्घाटित किया गया है।

तृतीय अध्याय

अमिता दुबे के उपन्यासों का परिचय : एक अध्ययन

<u>तृतीय अध्याय</u>

3 अमिता दुबे के उपन्यासों का परिचय : एक अध्ययन–

साहित्यकार मानवीय जीवन के बिखरे हुए विविध पहलुओं को विशिष्ट प्रकार से सजाकर साहित्य के रूप में चित्रित करता है। एक तरह से हिन्दी साहित्य मानव जीवन की अभिव्यक्ति ही माना जा सकता है। सामाजिक बोध को कृति रूप में सृजित कर देना ही साहित्य है। इस प्रकार से साहित्य का विस्तार असीमित है। इन्हीं में से एक विधा है उपन्यास, हिन्दी गद्य साहित्य की विधाओं में जितनी उन्नति उपन्यास की हुई है उतनी किसी अन्य विधा की नहीं हुई। इसके मूल में रहा है कि उपन्यास में स्वतंत्रता है जिसमें लेखक स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। उपन्यास का क्षेत्र इतना अधिक विस्तृत है कि जीवन के हर एक पहलुओं को यह चित्रित करता है। उपन्यास जीवन के बिम्बों से यथार्थ को प्रस्तुत करता है। उपन्यास मानव जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा अन्य नवीन विषयों की अभिव्यक्ति करता है। इसी कारण उपन्यास विधा इतनी प्रचलित हुई। उपन्यास साहित्य का अवलोकन करने पर यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि इसमें सम्पूर्ण जीवन की झांकी की झलक मिलती है वही उसकी लोकप्रियता का मूलबिन्दु है।

"वर्तमान जगत में उपन्यासों में बड़ी शक्ति है। समाज जो रूप पकड़ रहा है। उसके भिन्न–भिन्न वर्गों में जो परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं उपन्यास उनका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते, आवश्यकतानुसार उनके ठीक विन्यास, सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर सकते हैं। लोक या किसी जनसमाज के बीच काल की गति के अनुसार जो गूढ़ और चिन्त्य परिस्थितियां खड़ी होती रहती हैं उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी–कभी विस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यास का काम है।"[29]

---

[29] शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहासः पृ० सं० 513

साथ ही इसमें जीवन को बहुमुखी छवि के साथ व्यक्त करने की शक्ति होती है। उपन्यास का जन्म आधुनिक काल के यथार्थवादी परिवेश में हुआ। यह आधुनिक सभ्यता की देन है। आधुनिक साहित्य एक अथाह महानद है तो उसकी सर्वशक्तिमान तीव्र प्रवाहमान धारा उपन्यास है। **"उपन्यास का प्रकृति क्षेत्र मनुष्य की जिन्दगी है और वह अतीत के प्रति उतना प्रतिबद्ध नहीं है जितना वर्तमान और निकट अतीत के प्रति।"**[30]

उपन्यास समाज की आलोचना एवं सांस्कृतिक व्यवस्था की प्रस्तुति करता है। समाज की यथार्थ स्थिति से अवगत कराना ही उपन्यास का मुख्य रूप से उद्‌देश्य होता है। उपन्यास का परिवेश इतना व्यापक होता है कि अधिकांश परिभाषाओं में इसका आंशिक स्वरूप ही समावेशित हो पाता है। **"युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण व्यापक झांकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है।"**[31]

उपन्यास साधारण जीवन के समानान्तर चलने तथा उसे गतिशील करने का प्रयास करता रहता है। यहां वर्णन चित्रण की एक निर्धारित परिपाटी नहीं होती और पात्रों की संख्या तथा आकारों पर कोई बंदिशें नहीं होती हैं। यह जीवन की समस्याओं के अनुसार आकार एवं प्रकार ग्रहण करता है। **"उपन्यास आधुनिक युग की देन है। आधुनिक गद्य के प्रचार के साथ–साथ उपन्यास का प्रचार हुआ है। यह आधुनिक वैयक्तिक दृष्टिकोण का परिणाम है। इसमें लेखक अपना एक विशेष मत प्रकट करता है और कथानक को इस प्रकार गठित करता है कि पाठक सहज ही उसके उद्‌देश्य को आत्मसात कर सके, और उससे प्रभावित हो सके। लेखकों का इस प्रकार का वैयक्तिक दृष्टिकोण ही उपन्यास की आत्मा है। प्रत्येक उपन्यासकार ने अपनी दृष्टि, अपनी रूचि एवं अपने आग्रह के अनुरूप अपनी–अपनी रचना को रूप दिया।"**[32]

उपन्यास में लेखक यथार्थवादी दृष्टि अपनाता है और सामाजिक परिवेश में बिखरे जीवन से ही अपने लिए कथासूत्र चुनता है किन्तु

---

[30] डॉ० गोपाल : हिन्दी उपन्यास, समीक्षा 1977

[31] प्रेमचन्द : साहित्य का उद्‌देश्य, पृ० सं० 54

[32] सिंघल भारत भूषण : हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभावः पृ० सं० 32

उपन्यास में चित्रित जीवन हमारे यथार्थ जीवन का आभास तो देता है लेकिन मूलरूप में उस जीवन से अलग होता है। इसी लिए **जार्ज मूर** ने कहा है **"उपन्यास समकालीन इतिहास के सिवाय और कुछ नहीं है। वह जिस युग में हम जी रहें हैं उसके सामाजिक परिवेश का बिल्कुल पूर्ण और सही–सही पुनर्निमाण है।"**[33]

"उपन्यास वैयक्तिक दृष्टि से वास्तवाभास कल्पित कथा पात्रों को लेकर जीवन के एकांगी या बहुरंगी गतिशील यथार्थ को अंकित करने में नित्य नवल रूप धारण करने में समर्थ, अपेक्षतया बड़े आकार या रोचक वर्णनात्मक गद्य का रूप है।"[34] प्रेमचन्द के अनुसार **"मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ, मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"**[35] वास्तव में उपन्यास में पात्र के आन्तरिक आत्मस्वरूप का ज्ञान कथा में वर्णित क्रियाकलापों द्वारा प्राप्त होता है और क्रिया कलापों का उद्भव पात्र की आन्तरिक मनोभूमि पर होता है। **"उपन्यास का मूल आधार उसमें निहित यथार्थत्मकता का तत्व है। उपन्यास में मानव जीवन के सत्य का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया जाता है।"**[36]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि इन विद्वानों ने यथार्थ अभिव्यक्ति को ही उपन्यास का सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व माना है। प्रायः सभी उपन्यासकारों ने अपनी–अपनी दृष्टि से उपन्यास के भिन्न–भिन्न तत्वों पर प्रकाश डाला है जिससे उपन्यास की कई प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आती हैं जो उसे साहित्य की दूसरी विधाओं से अलग करती है। जैसे–उपन्यास का माध्यम गद्य है, तुलनात्मक दृष्टि से वह अन्य विधाओं की अपेक्षा इसका आकार बड़ा होता है, साहित्य की अन्य विधाओं से उपन्यास में विस्तृत एवं गहन चरित्रांकन की गुंजाइश अधिक होती है तथा इसकी दृष्टि यथार्थोन्मुखी होती है। उपन्यास का शिल्प लचीला होता है वह अभिव्यक्ति के लिए अन्य विधाओं के गुणों को

---

[33] एडवर्ड वेने बेबीट, केवल के ऑफ इंग्लिश नावेल, पृ० सं० 20

[34] प्रिदर्शिनी सुषमा – हिन्दी उपन्यास, पृ० सं० 83

[35] प्रेमचन्द , साहित्य का उद्देश्य, पृ० सं० 54

[36] इन्साइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका : भाग 7

आत्मसात कर लेता है। जीवन और जगत की मूल विशेषताएं भी समाहित होती हैं इसी कारण उपन्यास इतना शक्तिशाली एवं गतिशील है। चरित्रों का विश्लेषण भी संवादों के माध्यम से ही किया जाता है। उपन्यासकार शक्ति द्वारा व्यापक जीवन और गहरे अनुभवों का ताना–बाना बुनता है। कल्पना द्वारा यथार्थ जीवन की अपूर्णता को पूर्णता प्रदान कर अपनी कथा में बिखरे हुए जीवन को सुनियोजित सुनिर्दिष्ट रूप प्रदान करता है। उपन्यास में कथा के साथ–साथ काव्य के समान भावुकता और संवेदनाएं भी होती हैं जिसके कारण पाठक तल्लीन हो जाता है इसीलिए आलोचकों ने उपन्यास को सेमी थियेटर भी कहा है। वास्तविकता यह है कि उपन्यास का कैनवास उपन्यासकार को जीवन का बहुरंगी और बहुआयामी चित्रण करने का पर्याप्त अवसर देता है। यह वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक एवं आंचलिक जीवन के बाह्य एवं आंतरिक पक्षों के द्वन्दों एवं संघर्षों को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान करता है और मुक्ति दिलाने का प्रयास भी करता है। एकाकी, तनावग्रस्त व्यक्ति की पीड़ा की तलाश ही आधुनिक उपन्यास का सारतत्व है।

स्वतंत्रता निःसंदेह किसी भी देश के इतिहास की गौरवमयी घटना है किन्तु हमारे देश के संदर्भ में यह उतनी महत्वपूर्ण नहीं बन पाई जितनी होनी चाहिए थी, क्योंकि स्वातन्त्र्योत्तर भारत का यथार्थ मनुष्य की आकांक्षाओं के विपरीत था। देश का यथार्थ एक नए रूप में प्रत्यक्ष हुआ। स्वाधीन भारत की समस्याओं, विषमताओं एवं यथार्थ की भयावहता को नई पीढ़ी के साहित्यकारों में व्यक्ति और समाज व्यापक स्तर पर विभिन्न विसंगतियों से गुजर रहा है। उसकी सही पहचान ही समकालीनता का अवबोध है। समकालीन लेखक आज की स्थितियों से परिचालित होता है। **"समसामयिक यथार्थ एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है जिसका कोई एक या अंतिम रूप नहीं है। यह यथार्थ न यथार्थवादी प्रकृतिवादी का है और न मनोवैज्ञानिक ढंग का वह अपने मूल अर्थ में अंतिम संकट से जूझने वाला यथार्थ है।"**[37]

आज के साहित्य में जो भयावह यथार्थ है वह अधिकतर अस्तित्व संकट की पहचान कराने वाला और उसकी छानबीन करने वाला है।

---

[37] डॉ० नरेन्द्र मोहन, आधुनिकता और समकलीन रचना संदर्भ पृ० सं० 98

जटिल प्रकृति वाले इस यथार्थ से सीधे टकराए बिना आज का साहित्य सही ढंग से परिभाषित नहीं होता। आज भारतीय साहित्य में विशेषकर हिन्दी साहित्य में अकेलापन, संत्रास, मृत्युबोध, निराश, सामाजिक संबंधों का विघटन जैसी प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं। ये सब अपने ही परिवेश के तनाव और दबाव से उत्पन्न हैं। यह वर्तमान परिवेश की नियति है। इस नियति को आज साहित्यकार विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्त करने का प्रयास कर रहा है। सन् 1950 से आज तक का युग समकालीन युग के नाम से पुकारा जाता है।"[38]

हिन्दी उपन्यास विकासात्मक परिप्रेक्ष्य–

यूरोप में पुनर्जागरण के बाद उपन्यास का आरम्भ साहित्य की महत्वपूर्ण विधा के रूप में साहित्य के विकास में औद्योगिक क्रान्ति ने अनुकूल वातावरण प्रदान किया। भारतीय संदर्भ में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक गद्य साहित्य का सूत्रपात हो चुका था। इस कथा साहित्य की झलक इंशाअल्ला खां के 'रानी केतकी की कहानी' में प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त गद्य साहित्य के प्रमुख लेखक जैसे– लल्लू लाल, सदल मिश्र और मुशी सदासुख लाल आदि भी मिलते हैं। उपन्यास का उद्भव भारतेन्दु युग से माना जाता है। लालाश्रीनिवास दास के 'परीक्षा गुरू' से हिन्दी उपन्यास साहित्य का आरम्भ हुआ। 1882ई० से 1916ई० का समय हिन्दी उपन्यास में प्रयोगात्मक परिस्थिति का समय माना जाता है। इस काल में हिन्दी उपन्यास साहित्य ने विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से अपनी नयी पहचान बनायी। यह युग औपन्यासिक मनोरंजनात्मकता से परिपूर्ण युग रहा। इसके बाद प्रेमचंद के उपन्यासों की विलक्षणता थी उनकी साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रवृत्तियां। इनका लेखन समकालीन यथार्थ को बहुत ही कलात्मकता के साथ कथा साहित्य में प्रकट करता है। प्रेमचंद ही वह पहले उपन्यासकार थे जिन्होंने समसामयिक यथार्थ को ध्यान में रखते हुए उसे प्रमाणिकता और विश्वसनीयता के साथ कथा सूत्र में पिरोया।

---

[38] जौहरी कमल कुमार, हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास पृ० सं० 458

सन् 1936ई० से 1950ई० का समय प्रेमचंदोत्तर युग के नाम से जाना जाता है। यह काल मनोविश्लेषण और यथार्थवाद की प्रवृत्तियों से भरपूर था। इस युग में मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता दी गयी। इस काल के उपन्यासों में पात्रों की टूटन, यौनकुंठा, चेतना प्रवाह, प्रतीकात्मकता का प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है। इस युग के लेखकों ने पारम्परिक विषयों और शैली में परिवर्तन कर दिया और समाजवादी यथार्थवादी उपन्यासों का सृजन किया। इस युग के प्रमुख उपन्यासकारों में भगवती चरण वर्मा, यशपाल, जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, उपेन्द्रनाथ अश्क, नागार्जुन, अमृतलाल नागर, रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणू, अमृतराय, विष्णु प्रभाकर, धर्मवीर भारती आदि। 1950ई० के बाद वैज्ञानिक चिंतन का विकास हुआ और उसी के साथ व्यक्तिवाद का प्रादुर्भाव हुआ। इस युग को समकालीन युग के नाम से जाना जाने लगा। इस युग में व्यक्ति को लक्ष्य कर समाज के निमित्त विचारधारा को अपनाया गया। स्वतंत्रता की भावना के कारण स्त्री–पुरूष में परस्पर स्पर्द्धा का आरम्भ हुआ। हिन्दी उपन्यासों के उद्भव और विकास को सम्यक रूप में जानने के लिये प्रारम्भ से आज तक के विकास को निम्न कालखण्डों में विभाजित करके देखना उचित होगा–

1. प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास
2. प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास
3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रवृत्तियों के आधार पर देखें तो प्रेमचंद पूर्व युग में तीन मुख्य प्रवृत्तियों से सम्पन्न उपन्यास सामने आते हैं–

1.1 प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास–

प्रेमचंद पूर्व युग में हिन्दी उपन्यास साहित्य की मर्यादा सन् 1877ई० से 1818ई० तक मान्य हो सकती है। हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा का विकास आधुनिक काल में हुआ। हिन्दी का प्रथम उपन्यास लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखा 'परीक्षा गुरू' भारतेन्दु के जीवनकाल क दौरान ही प्रकाशित हुआ। भारतेन्दु युग में अनुदित उपन्यासों की प्रमुखता थी। प्रेमचंद के पूर्व उपन्यासों की प्रमुख विशेषता उनका घटनाप्रधान होना है। इन उपन्यासों का उद्देश्य मनोरंजन और उपदेश देना होता था। यह

तिलस्मी, ऐय्यारी, ऐतिहासिक, सामाजिक सभी तरह के हैं। इनमें घटनाएं गहन जीवन संदर्भों और पात्रों की पारस्परिक क्रिया–प्रतिक्रियाओं से प्रभावित नहीं होती तथा वे जीवन के विभिन्न प्रश्नों, समस्याओं और आकांक्षाओं की जटिलताओं से भी उलझी नहीं होती। प्रेमचंद पूर्व के उपन्यासों की घटनाएं इसी तरह देशकाल और पात्र के जटिल यथार्थ को समझे बिना उन्हें चित्रित किए बिना नियोजित होती जाती हैं। घटना प्रधानता प्राचीन कथाओं की प्रमुख विशेषता होती है– चाहे वे दादी–नानी के मुंह से सुनी गई कहानियां हो, या फिर सिंहासन बत्तीसी, इन कथाओं में देशकाल की यथार्थता की रक्षा नहीं होती। एक था राजा, कहानी में परियां भी आएंगी, देवता भी आएंगे, राक्षस भी आएंगे और पाठक इन पर भी पूर्ण विश्वास के साथ पढ़ता जाएगा। इन घटना प्रधान कथाओं में पात्रों की कोई निजी विशेषता नहीं होती। इन पात्रों में मानव की गहरी संवेदना, जटिल भावबोध और चिंतन शक्ति को प्रभावित करने की क्षमता नहीं होती। प्रेमचंद के पूर्व के हिन्दी उपन्यासों पर भारतीय कथा साहित्य के उपर्युक्त रूपों का बड़ा प्रभाव परिलक्षित होता है। वे पश्चिम के उपन्यासों से प्रभावित हैं। उपन्यासकारों ने बंगला के उपन्यासों से प्रेरणा ग्रहण की और मौलिक उपन्यासों का सृजन किया। भारतेन्दु युग के लेखक देश और काल की चेतना से स्पंदित थे। उनकी रचनाओं में स्वदेशी जागरण का स्वर मुखरित था। प्रेमचंद के पूर्व युग में मुख्य तीन प्रवृत्तियों से सम्प्रक्त उपन्यास दिखाई देते हैं–

रोमांच बहुल उपन्यास–

रोमांच की प्रवृत्ति को विशेषतः उभारने वाले तिलस्मी और जासूसी उपन्यास इस कालावधि में खूब लिखे गए। 'देवकीनंदन खत्री' ने 'चन्द्रकांता' और 'चन्द्रकांता संतति' और 'भूतनाथ' लिखकर पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त की। चन्द्रकांता हिन्दी का शायद सबसे अधिक पढ़ा गया उपन्यास है। चन्द्राकांता के अनुकरण पर स्वर्णकांता(नंदलाल शर्मा), सूर्यकांता(बालमुकुन्द) जैसी कृतियों का प्रकाशन भी हुआ। देवकीनंदन खत्री के अतिरिक्त दुर्गाप्रसाद खत्री, हरिकृष्ण जौहर, निहालचंद वर्मा, लक्ष्मीनारायण गुप्त आदि ने भी ऐय्यारी के माध्यम से कौतूहल जगाने और पाठकों को रोमांचित करने का सफल प्रयास किया है। वैसे ये कृतियां परोक्ष तौर पर सामन्तवादी विकृतियों का विरोध करती हैं और असत्य पर

सत्य की विजय की घोषणा भी करती है। देवकीनंदन खत्री ने कहा था कि विचित्र क्रिया व्यापारों को वैज्ञानिक आधार दिया जाए। एक स्थल पर लोग दीवार के दूसरी ओर झांकते ही हंसने लगते हैं और हंसते–हंसते कुएं में कूद जाते हैं। खत्री जी ने इसके लिए लाफिंग गैस को जिम्मेदार ठहराया है। गोपालराम गहमरी के जासूसी उपन्यासों में रोमांच चरम सीमा पर पहुंच कर आश्चर्य में बदल गया है। अपने रहस्य विप्लव, चक्करदार चोरी, गाड़ी में लाश आदि अनेक उपन्यासों में उन्होंने ऐय्यारी की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय व्यक्तित्व जासूस को प्रस्तुत किया। वास्तव में अपने हल्के फुल्के एवं अर्द्धगंभीर रूप के बावजूद ये जासूसी उपन्यास अपने युग के सुधारवादी आग्रहों से युक्त थे।

रोमांस बहुल उपन्यास–

रोमांस तिलस्मी उपन्यासों में है लेकिन उसका प्रसार उन कृतियों में विशेष रूप से हुआ है जो प्रेमचंद पूर्व युग में ऐतिहासिक रोमांस के रूप में रचे गए हैं ऐसी कृतियों के सृजनकर्ता में किशोरी लाल गोस्वामी का नाम उल्लेखनीय है। उनकी कृतियों में इतिहास की स्वच्छंद प्रेम कथाएं विशेष रूप से उद्‌घाटित हैं। गोस्वामी जी के उपन्यासों में त्रिवेणी व सौभाग्य श्रेणी, हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी, कनक कुसुम वा मस्तानी, स्वर्गीय कुसुम, कुसुम कुमारी, माधवी माधव वा मदन मोहिनी आदि उल्लेखनीय है। इन उपन्यासों में रीतिकालीन मानसिकता का गहरा प्रभाव है इसलिए नायक नायिका के विरह–मिलन के मध्यकालीन साहित्य जैसे प्रसंग इन उपन्यासों में भरे पड़े हैं। इनमें कल्पना का रंग अधिक चटख है। इतिहास रस के बजाय कल्पना का पुट अधिक मिलता है। अपने परिवेश की समस्याओं को लेकर गोस्वामी जी का दृष्टिकोण परम्परावादी है हालांकि देवदासी प्रथा, बेमेल विवाह की क्रमशः स्वर्गीय कुसुम वा कुसुम कुमारी और तरूण तपस्विनी में भर्त्सना हुई है फिर भी इन उपन्यासों पर आधुनिकता का दबाव और प्रभाव बहुत कम देखने को मिलता है। पूर्व प्रेमचंद युग में ऐतिहासिकता भी थी लेकिन कुछ अन्य उपन्यास लेखकों ने इतिहास के साथ बेहतर बर्ताव किया है। ब्रजनंदन सहाय कृत लालचीन और लज्जाराम मेहता कृत जुंझार तेजा आदि उपन्यासों में उन विशेषताओं को इंगित किया जा सकता है जो आगे चलकर वृंदावन लाल वर्मा आदि के लिए प्रेरणा बनी।

उपदेश प्रधान उपन्यास–

अपने समय और समाज के सवालों पर आधारित इस युग के उपन्यासों में उपदेश का स्वर बहुत प्रमुख था। प्रारम्भ में रचित अधिकतर सामाजिक उपन्यास उपदेशात्मक है। परीक्षागुरू में कुसंगति से मुक्ति का उपदेश है और देवरानी–जेठानी की कहानी में स्त्रियों के शिक्षित होने पर बल दिया गया है। बालकृष्ण भट्ट कृत नूतन ब्रह्मचारी में उपदेशों की भरमार है विशेषतः पर्दाप्रथा का विरोध किया गया। नवजागरण की चेतना का इन उपन्यासों पर कमोबेश प्रभाव पड़ने लगा था। आर्य समाज का सुधारवादी आग्रह कुछ उपन्यासकारों को प्रभावित कर रहा था। लज्जाराम मेहता इस युग में प्रमुख उपन्यासकार हैं उन्होंने उपदेशात्मकता को वरीयता दी। सामाजिक विषयों पर आधारित इस युग के उपन्यासों में अधखिला फूल, वीरांगना रहस्य, सौ अजान एक सुजान आदि महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद के आगामी उपन्यासों के लिए भूमि तैयार करने में इनकी भूमिका कम नहीं है। प्रेमचंद ने जिस आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को उद्घाटित किया था वह इन कृतियों में अपने प्रारम्भिक वस्तुतः हिन्दी में भारतेन्दु से पूर्व रूप में उपलब्ध है।

1.2 प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास–

प्रेमचंद एक नाम नहीं युग थे। गांधीवादी आदर्श जीवन प्रणाली तथा सत्य अहिंसा के प्रबल समर्थक थे। वस्तुतः प्रेमचंद युग की गतिशील जीवन दृष्टि के निर्माण में आर्यसमाज, तिलक और गांधी की विचारधाराओं का ही योग था। प्रेमचंद मानवतावादी लेखक थे उन्होंने जीवन में साहित्य का स्थान विषय पर लिखा है– **आदिकाल से मनुष्य के लिए सबसे समीप मनुष्य ही है। हम जिसके सुख–दुख, हँसने–रोने का मर्म समझ सकते हैं उसी से हमारी आत्मा का अधिक मेल होता है।"**[39] प्रेमचंद प्रारम्भ में उर्दू के लेखक थे और कहानियां लिखते थे। उर्दू में उनके कुछ उपन्यास भी प्रकाशित हुए थे। बाद में उन्होंने हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान और मंगलसूत्र(अपूर्ण)। प्रेमचंद उपन्यास को मनोरंजन की वस्तु नहीं मानते थे। वे अपने उपन्यासों द्वारा भारतीय जनता में जागरण, सुधार तथा निर्माण की भावना को विस्तार देना चाहते थे।

[39] प्रेमचंद, कुछ विचार, पृ० सं० 145

प्रेमचंद मानवतावादी सहृदय व्यक्ति थे। वे गरीबी में पले थे, गरीबों के दुःख–दर्द को समझते थे। समाज के निम्न वर्ग से उन्हें सहानुभूति थी। जीवन के अन्तिम समय में, जैसा कि उनके अन्तिम उपन्यासों('गोदान और 'मंगलसूत्र') से प्रकट है, उनका झुकाव साम्यवाद की ओर हो गया था और वास्तव में वे यथार्थवादी और प्रगतिशील हो गये थे। अपनी पुस्तकों में प्रेमचंद ने किसानों की आर्थिक दशा, जमींदारों और पुलिस के अत्याचारों, ग्रामीण जीवन की कमजोरियों, समाज की कुरीतियों, शहरी समाज की कमियों, विधवाओं और वेश्याओं की समस्याओं, नारी की आभूषण प्रियता, मध्यवर्ग की झूठी शान और दिखावे की प्रवृत्ति, सम्मिलित हिन्दू–परिवार में नारी की दयनीय स्थिति आदि प्रश्नों और पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने कई उपन्यासों में गाँव और शहर की कहानी, ग्रामीण और नागरिक जीवन की झांकी साथ–साथ प्रस्तुत की है। उनके उपन्यासों में कथानक सुगठित है चरित्र–चित्रण प्रायः मनोविज्ञान के अनुकूल सजीव और स्वाभाविक है। संवाद पात्रों और परिस्थितियों के अनुसार हैं और भाषा सहज एवं व्यावहारिक है।

व्यापक सहानुभति चित्रण विशेषकर शोषित किसान, मजदूर और नारी का सहानुभूति चित्रण, यथार्थवाद अर्थात् उपन्यास में जीवन का यथार्थ चित्रण, मानव–जीवन और मानव–स्वभाव की अच्छी जानकारी होने से सजीव पात्रों और सजीव वातावरण का निर्माण चरित्र–चित्रण में नाटकीय कथोपकथन तथा घटनापरक पद्धतियों का उपयोग, समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि पात्रों की सृष्टि, अपने व्यक्तित्व को पात्रों से पृथक रखकर उन्हें प्रायः अपनी सहज–स्वच्छन्द गति से चलने देना, विविध सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं का चित्रण, समाज के साथ पारिवारिक जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति, मानव–कल्याण की ओर संकेत करने वाले नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा और सहज व्यावहारिक भाषा आदि प्रेमचंद के उपन्यासों की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

प्रेमचंद युग के अन्य उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, प्रसाद, निराला, सुदर्शन, चतुनसेन शास्त्री, वृन्दावन लाल वर्मा, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, सियारामशरण गुप्त, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', भगवती प्रसाद वाजपेयी, गोविन्दवल्लभ पंत, राहुल सांकृत्यायन और जैनेन्द्र। कौशिक के उपन्यास 'माँ' और भिखारिणी में नारी–हृदय का

मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने नारी की समस्या पर 'हृदय की परख', हृदय की प्यास', 'अमर अभिलाषा' आदि उपन्यास प्रारम्भ में लिखे थे बाद में उनके बहुत से सामाजिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक उपन्यास प्रकाशित हुए। उनके कुछ उल्लेखनीय उपन्यास हैं 'गोली', वैशाली की नगर वधू', 'वयं रक्षामः', 'सोमनाथ', महालय', 'सोना और खून' तथा 'खग्रास'। वृन्दावन लाल वर्मा ने इतिहास के तथ्यों की पूर्णतः रक्षा करते हुए कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यासों का सृजन किया। उन्होंने 'विराटा की पद्मिनी', झाँसी की रानी', 'कचनार', 'मृगनयनी' 'माधवजी सिंधिया' आदि उच्चकोटि के ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। हिन्दी के कुछ अन्य उल्लेखनीय ऐतिहासिक उपन्यास हैं– जयशंकर प्रसाद का 'इरावती(अधूरा), हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'बाणभट्ट की आत्मकथा' और चारू चन्द्रलेख', चतुरसेन का 'वैशाली की नगरवधू', 'राजसिंह', 'सोमनाथ, सह्याद्रि की चट्टानें, सेठ गोविन्ददास का 'इन्दुमती', राहुल सांकृत्यायन के 'सिंह सेनापति', 'जय यौधेय' सत्यकेतु विद्यालंकार का 'आचार्य चाणक्य', रांगेय राघव का 'अंधा रास्ता', उमाशंकर का 'नाना फड़नवीस' तथा 'पेशवा की कंचना'।

प्रसाद जी ने 'इरावती' के पहले 'कंकाल' और 'तितली' नामक दो उपन्यास और लिखे थे, 'कंकाल' में हिन्दू नारी की असहाय स्थिति और धार्मिक पाखंड को उद्घाटित किया गया है। 'तितली' में नारी–हृदय की महत्ता के उद्घाटन के साथ–साथ ग्राम–सुधार और यथास्थिति के विरूद्ध आन्दोलन की भावना को स्वर प्रदान किया है। प्रसाद जी मूलतः कवि हैं। उनके उपन्यासों में भी प्रायः जीवन की काव्यात्मक और भावपूर्ण व्याख्या मिलती है। निराला जी ने भी 'अप्सरा' 'अल्का', 'निरूपमा' आदि उपन्यासों की रचना की। इनके उपन्यासों में भी प्रसाद जी की भांति रोमांटिक वातावरण है। नारी को निराला जी ने महत्वपूर्ण स्थान दिया है। श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव के प्रारम्भिक उपन्यासों में 'विदा', 'विसर्जन' और 'विजय' उल्लेखनीय हैं। सियारामशरण गुप्त के 'गोद', अन्तिम आकांक्षा' और 'नारी' उपन्यासों में नारी–जीवन और उसकी सामाजिक स्थिति का मार्मिक अंकन हुआ है। साधारण मनुष्य में भी उच्च गुण दिखाने में गुप्त जी निपुण है।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के प्रारम्भिक उपन्यासों में पत्रात्मक शैली में लिखे 'चन्द हसीनों के खतूत' का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रश्न उपस्थित करते हुए प्रेम का महत्व दिखाया गया है। उनके 'दिल्ली का दलाल', बुधुआ की बेटी', 'जीजीजी' आदि उपन्यासों में दुष्ट व्यक्तियों द्वारा भोली युवतियों को फंसाए जाने की कथाएं हैं। सभ्य समाज की भीतरी दुर्बलताओं और दुष्प्रवृत्तियों का उन्होंने वास्तविक उद्‌घाटन किया है। भगवती प्रसाद वाजपेयी के 'प्रेममयी', 'अनाथ स्त्री', 'त्यागमयी', 'पतिता की साधना' आदि आरम्भिक उपन्यासों में स्त्री–पुरूष के रूपाकर्षण और प्रेम के चित्र हैं। उनके 'गुप्तधन, 'चलते–चलते', 'पतवार', 'उनसे न कहना', 'रात और प्रभाव', 'टूटते बन्धन' आदि कई उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। गोविन्दवल्लभ पंत के 'सूर्यास्त', 'प्रतिमा' आदि उपन्यास काफी पहले प्रकाशित हुए थे बाद में भी उनके 'जल समाधि', 'नारी के सपने', 'मैत्रेय' आदि उपन्यास निकले हैं।

जैनेन्द्र के परख (सन् 1929 ई०) से हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में एक नई प्रवृत्ति का आरम्भ होता है। वस्तुतः यह उपन्यास एक लम्बी कहानी है जिसमें कट्‌टो नाम की देहातिन बालविधवा के भावुकतापूर्ण आत्मसमर्पण को चित्रित किया गया है। जैनेन्द्र ने आगे चलकर कई महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखें– 'सुनीता', 'सुखदा', 'त्यागपत्र', 'विवर्त', आदि जिनमें प्रायः स्त्री का पर–पुरूष की ओर झुकाव दिखाकर आधुनिक नारी के कुण्ठाग्रस्त मन पर प्रकाश डाला गया है। मनोविश्लेषण की इस प्रवृत्ति का विकास इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय ने किया।

प्रेमचंदोत्तर युग के इस क्षेत्र में आने वाले अन्य प्रतिभाशाली उपन्यासकार हैं, ऋसभचरण जैन (कैदी, गदर, भाई, भाग्य, रहस्यमयी, तपोभूमि, बादशाह की बेटी, सत्याग्रह, दिल्ली का व्यभिचार आदि), भगवतीचरण वर्मा (पतन, तीन वर्ष, चित्रलेखा, टेढ़े–मेढ़े रास्ते, सबहिं नचावत राम गुसांई), राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह (राम–रहीम, पुरूष और नारी, टूटा तारा, सूरदास, संस्कार आदि)।

जीवन के अन्तिम दिनों में प्रेमचंद की आदर्शवादी आस्था हिल उठी थी। सेवासदन(सन् 1918ई०) से लेकर गोदान (1936ई०) तक आते–आते भीतर ही भीतर उनके विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन हो चुके थे। गोदान उनकी परिपक्व जीवन दृष्टि का परिणाम है। यहां तक आते–आते प्रेमचंद

का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, यथार्थोन्मुख आदर्शवाद बन गया है। प्रेमचंद का गोदान एक ऐसी मनोभूमि पर प्रतिष्ठित है जहां जैनेन्द्र की आत्मकेन्द्रित अन्तर्मुखी पीड़ा, इलाचन्द्र जोशी की कामकुण्ठाजनित जटिल व्यक्तित्व चेतना, यशपाल का समाजवादी यथार्थवाद, भगवतीचरण वर्मा और उपेन्द्रनाथ अश्क का रूमानी समाजोन्मुख व्यक्तिवाद तथा अमृतलाल नागर का सर्वमांगलिक मानववाद सभी के प्रेरणा सूत्र लक्षित किए जा सकते हैं। प्रेमचंद युग के अंतिम चरण में उपर्युक्त सभी प्रवृत्तियों का उद्भव हो चुका था। प्रेमचंद को सुरूचि जागृत करने वाला, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति देने वाला, सौन्दर्यबोध का उन्मेष करने वाला तथा शक्ति और गति उत्पन्न करने वाला माना था इसलिए उनके उपन्यासों में व्यक्ति चेतना, समाज मंगल, यथार्थ की अनुभूति, आदर्श की कल्पना बाह्य घटनावैविध्य, आंतरिक मनोमंथन एवं भावद्वन्द सभी कुछ मिल जाता है।

1.3 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास–

'प्रेमचंद जी ने भावी उपन्यासों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि **"भावी उपन्यास जीवन चरित होगा, चाहे किसी बड़े आदमी का या छोटे आदमी का। उसकी छुटाई बड़ाई का फैसला उन कठिनाई से किया जाएगा, जिन पर उसने विजय पायी है। हां वह चरित्र इस ढंग से लिखा जाएगा कि उपन्यास मालूम हो अभी हमें झूठ को सच बनाकर दिखलाना होगा। किसी देशभक्त का या किसी बड़े आदमी का, पर उसका आधार यथार्थ पर होगा। तब ये काम उससे कठिन होगा जितना अब है क्योंकि ऐसे बहुत कम लोग हैं जिनमें बहुत से मनुष्यों को भीतर से जानने का गौरव प्राप्त हो।"**[40]

प्रेमचंद के बाद हिन्दी उपन्यास कई मोड़ों से गुजरता हुआ दिखाई पड़ता है। सन् 40 से 50 तक की कालावधि के उपन्यास मुख्यतः फ्रायड और मार्क्स की विचारधारा से, सन् 50 से 60 तक के उपन्यास आधुनिकतावादी विचारधारा से प्रभावित हैं। प्रेमचंद समाज की स्वीकृत मान्यताओं के भीतर संघर्ष करते रहे किन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के बाद पश्चिम के पुराने मूल्यों का तेजी के साथ विघटन हुआ। फ्रायड ने काम–सम्बन्धी मान्यताओं को नैतिकता–अनैतिकता से परे बताकर सामाजिक नैतिकता के

---

[40] प्रेमचंद, कुछ विचार, पृ० सं० 1104

आगे प्रश्नचिन्ह लगा दिया। पूंजीवादी समाज में व्यक्ति–चेतना उभर कर सामने आई। मार्क्स ने समष्टि चेतना पर विशेष बल दिया। हिन्दी उपन्यास इन विचारधाराओं से प्रभावित हुए बिना न रहा। फलस्वरूप सन् 50 के बाद के उपन्यासकारों का ध्यान व्यक्ति और समाज की मुक्ति की ओर गया किन्तु स्वतंत्रता के बीस वर्षों बाद भी मानव जीवन में एक विशेष प्रकार की कुण्ठा, निराशा, संत्रास, अर्थहीनता आदि की अनुभूति होने के कारण सन् 60 के बाद के उपन्यासों में इन्हीं मनोदशाओं का चित्रण किया गया। ऐतिहासिक दृष्टि से इस पूरे काल विस्तार में लिखे गए उपन्यास साहित्य को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है– स्वतंत्रताप्राप्ति के पूर्व का उपन्यास साहित्य और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज तक का उपन्यास साहित्य। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले पूरे हिन्दी प्रदेश को एकता के सूत्र में बांधने और उत्साह को एक निश्चित दिशा में प्रवाहित करने वाली मूल प्रेरणा थी जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद से सतत संघर्ष की प्रवृत्ति के रूप में परिवर्तित हुई। इसके साथ ही शोषण का विरोध, निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति, सामाजिक एकता नारी जागरण और अछूतोद्धार, हिन्दी मुस्लिम एकता आदि अन्य प्रेरणाएं थीं जो साहित्यकारों की सृजनेच्छा को प्रभावित कर रहीं थी। रचनाकारों के सामने लक्ष्यहीनता का प्रश्न नहीं था। उनके मन में आदर्शवादी प्रवृत्तियाँ प्रधान रूप से कार्य कर रही थी। वे यथार्थ की ओर अग्रसर हो रहे थे किन्तु आदर्श को जीवन का स्पन्दन देने के उद्देश्य से परम्परा के प्रति उनका विद्रोह विध्वंसात्मक नहीं हो पाया था। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों को सुविधा की दृष्टि से निम्न बिन्दुओं में वर्गीकृत किया है–

व्यक्तिवादी उपन्यास–

इस प्रकार के उपन्यासों में व्यक्ति के अहं, दर्प एवं उसकी वासनाओं, कुंठाओं, आकांक्षाओं आदि का चित्रण परिवार, समाज एवं संस्कृति के परम्परागत आयामों की उपेक्षा करते हुए किया गया है। इनमें वैयक्तिक स्वतंत्रता एवं समस्याओं का और व्यक्तिवादी दृष्टि से सामाजिक परिस्थितियों का अंकन मिलता है। भगवतीचरण वर्मा के 'आखिरी दांव', 'अपने खिलौने', उदयशंकर भट्ट के 'नए मोड़', 'एक नीड़ दो पंछी', आदि उपन्यास इसी परम्परा के हैं। इनके अलावा निर्मल वर्मा के 'वे दिन', लाल टिन की छत', 'एक चिथड़ा सुख', महेन्द्र भल्ला का 'एक पति के नोट्स',

श्रीकांत वर्मा का 'दूसरी बार', कृष्णा सोबती का 'सूरजमुखी अधेंरे के', उषा प्रियंवदा का 'रूकोगी नहीं राधिका' और 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' आदि प्रमुख हैं।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यास–

हिन्दी के अनेक उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में आधुनिक मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण के सिद्धान्तों के आधार पर अपने पात्रों की मानसिक प्रवृत्तियों को दर्शाया है। जैसे– अज्ञेय कृत 'शेखर एक जीवनी' मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है। जिसमें बाल मन पर पड़ने वाले काम अह्म और भय के प्रभाव को रूपायित किया गया है। इस उपन्यास का नायक शेखर घोर व्यक्तिवादी एवं अहंवादी है। वह अनुभव करता है कि इस समाज में कहीं भी व्यक्ति को मुक्ति नहीं मिलती। यह व्यक्ति के अलगाव और अकेलेपन को उजागर करता है। आधुनिक मानव की समाज से विसंगति को इसमें दर्शाया गया है। अज्ञेय ''अपने–अपने अजनबी'' नवीन कथ्य का उपन्यास है। इसमें अस्तित्ववादी जीवन दर्शन को व्याख्यायित किया गया है। हार, लाचारी, विवशता, अकेलापन, अनास्था आदि भावों को पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करने में अज्ञेय सफल उपन्यासकार हैं। उपन्यास में सेल्मा, योके द्वारा आधुनिक मानव के अकेलेपन, अलगाव और अजनबीपन को स्पष्ट किया गया है। उपन्यास में मृत्यु–संत्रास को सफल अभिव्यक्ति दी गई है, पूरे उपन्यास में मृत्यु की भीषण छाया है। अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में व्यक्ति–सत्य को खोजा है तथा व्यक्ति की कुण्ठा, भय, संत्रास, अलगाव का सूक्ष्म अंकन किया है।

प्रगतिवादी उपन्यास–

मार्क्सवादी दृष्टिकोण से वर्तमान पूंजीवादी सभ्यता के दोषों, शोषक वर्ग के अत्याचारों, आर्थिक विषमता के दुष्परिणामों, शोषित वर्ग की दयनीय स्थितियों तथा समाज की यथार्थ परिस्थितियों का अंकन करने के उद्देश्य से इन उपन्यासों की रचना की गई है। किसानों एवं मजदूरों के जीवन का चित्रण करते हुए शोषित वर्ग की अनुभूतियों एवं भावनाओं को अभिव्यक्ति दी गई है। इस वर्ग में राहुल सांकृत्यायन के 'सोने के ढाल', नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', रांगेय राघव के 'विषाद मठ',

'सीधा सादा रास्ता', अमृतराय के 'बीज', 'नागफनी का देश', आदि इसी प्रकार के उपन्यास हैं।

आंचलिक उपन्यास–

इस परम्परा का प्रवर्तन एवं विकास हिन्दी में लगभग 1950 ई० के आस–पास हुआ। इस प्रकार के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन, ग्रामीण संस्कृति, ग्रामीण गीतों एवं ग्रामीण भाषा का संश्लिष्ट प्रयोग हुआ है साथ ही इनमें विभिन्न प्रदेशों के प्राकृतिक वातावरण एवं सांस्कृतिक जीवन का चित्रण भी देखने को मिलता है। नागार्जुन के 'बलचनमा', 'नई पौध', फणीश्वरनाथ रेणू का 'मैला आँचल', आदि उपन्यास प्रमुख हैं।

इस प्रकार के विकास क्रम, स्वरूप एवं परिवर्तित होते कथ्य–शिल्प का अध्ययन करने पर हम यह समझ सकते हैं कि उपन्यास का कलेवर एवं स्वरूप बहुत विस्तृत है तथा समय की गतिशीलता के साथ–साथ उपन्यास में भी परिवर्तन हो रहा है। समकालीन उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि समकालीन समाज का प्रतिबिंब है जो हमें जाने–अनजाने समाज तथा व्यक्ति के जीवन में घटित जटिल घटनाओं और समस्याओं से अवगत कराता है। साहित्य प्रारम्भ से ही व्यक्ति के मानसिक स्तर को पोषित करता आ रहा है। समकालीन उपन्यास का वर्तमान स्वरूप इस कार्य को पूरी ईमानदारी से निभा रहा है।

अमिता दुबे के उपन्यास–

डॉ० अमिता दुबे ने दो उपन्यासों की रचना की है। जो क्रमशः **'उलझन'** और **'एकांतवासी शत्रुघ्न'** उपन्यास है। आपका पहला उपन्यास 'उलझन' **2015** में **विभा प्रकाशन, इलाहाबाद** से प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास बालमनोविज्ञान पर आधारित है। जिसमें प्रमुख रूप से परिवार में होने वाले सम्बन्ध विच्छेद का असर उनके बच्चों पर किस प्रकार पड़ता है। इसी को डॉ० अमिता दुबे ने अपनी लेखनी के माध्यम से उद्घाटित किया है।

डॉ० अमिता दुबे द्वारा रचित दूसरा उपन्यास **'एकांतवासी शत्रुघ्न'** जो कि वर्ष **2020** में **बोधि प्रकाशन, जयपुर** से प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास 2020 के शुरूवात में आई भयावह त्रासदी कोरोना काल में लोगों द्वारा बिताया गया एकांतवास की त्रासदी का चित्रण करता है। लॉकडाउन

के एकांतवास में लिखा यह उपन्यास रामकथा के कुछ पहलुओं पर आधारित है। जब राम और लक्ष्मण 14 वर्ष के वनवास में वनों में घूम रहे थे और पराक्रम से उपेक्षित लोगों की मदद् कर रहे थे, उसी समय में भरत नंदीग्राम में अपने राम और लक्ष्मण की भांति वनवासी के रूप में जीवन व्यतीत कर रहे थे। और छोटे भाई शत्रुघ्न एकांतवास में अपने दिन गुजार रहे थे। अपने एकांतवास में रहते हुए शत्रुघ्न क्या कर रहे थे, इसी चिंतन पर डॉ० अमिता दुबे ने यह उत्कृष्ट उपन्यास रचा है।

3.1 अमिता दुबे के उपन्यासों की प्रासंगिकता–

भारतीय उपन्यास अपनी कालजयी चेतना के कारण सहस्त्रों वर्षों से भारतीय साहित्य की समस्त विधाओं में किसी न किसी रूप में आज तक स्थापित रहा है। भारतीय आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य भी पौराणिक रचनाओं के मोह से खुद को मुक्त रखने में अभी तक अक्षम रहा है। 'राम' के पुराकथाओं को नया रूप देकर एवं आज के समय की प्रासंगिकता के साथ प्रस्तुत करके हिन्दी उपन्यास साहित्य को नया आयाम देने वाली डॉ० अमिता दुबे ने इन पौराणिक आख्यानों पर आधारित कथाओं को मिथकीय कथाओं की श्रेणी में ला कर खड़ा कर दिया है। राम की पौराणिक कथा पर आधारित उनका 'एकांतवासी शत्रुघ्न' एक पौराणिक उपन्यास है। जो पैराणिक होते हुए भी यथार्थ की पृष्ठभूमि पर रचा गया है अन्य उपन्यासकारों से भिन्न दृष्टिकोण रखते हुए डॉ० अमिता दुबे ने अपने रामकथात्मक उपन्यास में शत्रुघ्न की महानता, कथा के पात्रों की मानवीय क्षमता, उस समय की मानवीय दृष्टि इत्यादि सभी को स्वीकार किया है। और इसके साथ ही अमिता दुबे ने राम के पुरातन कथाओं में स्थिति भव्यता और चमत्कारिता को मुक्त करते हुए मूल राम कथा के पात्रों एवं संवादों को मानवीय संवेदना के धरातर पर देखने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में अमिता दुबे ने समकालीन परिस्थितियों को गहरी संवेदनशीलता और गहन चिंतन के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए, परम्परागत रामकथा को आधुनिक चेतना के तर्कसंगत पुनर्व्याख्या द्वारा नया अर्थ और सर्जनात्मक रूप देने का भी प्रयास किया है। इस उपन्यास 'एकांतवासी शत्रुघ्न' में डॉ० अमिता दुबे ने शत्रुघ्न के जीवन को बड़े ही कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। वो इस उपन्यास की भूमिका में

लिखतीं हैं कि– **संसार में शत्रुता को मित्रता से, घृणा को प्रेम से और अंधकार को प्रकाश से विजित किया जाता है। शत्रुघ्न के चरित्र में यही दृढ़ता मुझे दिखायी दी। जिस प्रकार श्रीराम स्थितिप्रज्ञ थे, समभाव रखने वाले थे, उसी प्रकार रिपूसूदन, रिपूदमन नाम से प्रसिद्ध शत्रुघ्न भी राजमहल में रहते हुए भी वनवासी हो सकते हैं। श्री राम ने जिस प्रकार रावण प्रभृति राक्षसों का वध कर राक्षस जाति के आतंक से ऋषि–मुनियों को मुक्त कराया था उसी प्रकार लवणासुर का वध कर शत्रुघ्न ने मधुपुरी, जिसे मधुरा भी कहा जाता था, के आस–पास निवास करने वाले ऋषि–मुनियों को निर्भय किया। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि चक्रवर्ती महाराज दशरथ के चार पुत्रों में राम और शत्रुघ्न को राजा बनने का अवसर मिला। भरत ने राजपद प्राप्त किया परन्तु श्री राम के प्रतिनिधि के रूप में। लक्ष्मण रामानुज थे, रामानुज ही रहे।**[41]

'एकांतवासी शत्रुघ्न' उपन्यास में अमिता दुबे ने कोरोना काल की भयानक त्रासदी को पौराणिक कथा 'रामचरितमानस' को आधार बनाकर चित्रित किया है। जिसमें उपेक्षित पात्र के माध्यम से तत्कालीन समसामयिक घटना को सहज रूप से पाठक वर्ग के सामने प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया गया है। उक्त उपन्यास में 'शत्रुघ्न' जिन्हें रिपुसूदन नाम से जाना जाता है। जिसका मूल अर्थ है– शत्रुओं का समूल नाश करने वाला। शत्रुघ्न अपने भाई राम, लक्ष्मण और भाभी सीता के वनवास के बाद पूरी जिम्मेदारी के साथ राजपाट, प्रजा व सीमाओं की देखभाल में जुटे रहे। निःस्वार्थ भाव से अयोध्या की सेवा में शत्रुघ्न इस उपन्यास में तत्पर दिखाई देते हैं। शत्रुघ्न उस कुल की संतान हैं जहाँ पर श्री राम, लक्ष्मण, भरत जैसों को पिता की आज्ञा, प्रजा की सेवा करना सिखाना नहीं पड़ता बल्कि यह सब उनके संस्कारों में रचा बसा था। **'रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन ना जाई।'** मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम उस रघुकुल की संतान थे जहाँ माता के एक वचन को निभाने के लिए 14 वर्षों का वनवास ग्रहण किया। बिना किसी किन्तु–परन्तु के राम ने सहज रूप से आज्ञा का पालन किया। कुल की मान–मर्यादा को कभी भी आँच नहीं आने दिया। इस क्रम में जनक नंदनी

---

[41] एकांतवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 5–6

जानकी ने राम के साथ सदियों से चली आ रही सनातनी पतिव्रता धर्म का पालन किया। राजकुमार शत्रुघ्न राजपाट की सुख–सुविधा के मोह को त्यागकर एक प्रकार से वनवासी का ही जीवन जी रहे थे। **'हम तीनों भाई तो वनवास में थे और हमारा वनवास सबके संज्ञान में था परन्तु अनुज शत्रुघ्न का वनवास तो कोई जान ही नहीं सका'।**[42] अतः इस उपन्यास के माध्यम से डॉ० अमिता दुबे ने समकालीन समय की विकट परिस्थितियों को दर्शाया है। हम देश और समाज की बात नहीं करते हैं परन्तु हम कम–से–कम अपने परिवार के प्रति त्याग की भावना रख सकते हैं। प्रभु श्री राम ने अयोध्या का त्याग कर वनवास धारण कर लिया था और यह देखकर लक्ष्मण भी राम के साथ सभी सुखों का त्याग कर दिया। भरत ने अयोध्या का त्याग कर 14 वर्ष तक वनवासियों की भाँति नंदीग्राम में अपना निवास स्थान बनाया। तो शत्रुघ्न भरत के आदेश से राज्य संचालन करते थे और लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला चाहती तो अपने पिता जनक के यहाँ चली जाती लेकिन उन्होंने भी सभी सुखों का त्याग कर दिया। यह देखकर शत्रुघ्न ने अपनी पत्नी श्रुतिकीर्ति से दूरी बना ली। भरत की पत्नी माण्डवी ने भी भरत के साथ तपस्वियों जैसा जीवन व्यतीत किया। बड़े भाई पर संकट आया तो सभी भाईयों ने भी संकट को वरण कर लिया।

डॉ० अमिता दुबे के उपन्यास में राजा दशरथ की तीनों रानियों और चारों बेटों का चरित्र अलग–अलग वर्णित है परन्तु इस विविधता के बावजूद उनमें किस तरह की एकजुटता है यह हर परिवार के लिये दुःख के समय से बाहर निकलने की सीख हो सकती है। अतः इस उपन्यास से हम माता–पिता की आज्ञा का पालन करना, बुराईयों को त्यागकर भक्तिपूर्ण जीवन–यापन करना और भौतिक सुख को छोड़कर कम से कम साधनों को अपनाकर आदि सभी बातें हमें इस उपन्यास से सीखना चाहिए और यह संपूर्ण राम कथा भोगवादी संस्कृति के विरूद्ध त्याग और तप की महिमा का चित्रण करती है।

डॉ० अमिता दुबे का दूसरा उपन्यास 'उलझन' बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। जिसका प्रकाशन 2015 में हुआ था। सौमित्र और अंशिका इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। पूरी कथा इन्हीं पात्रों के इर्द–गिर्द घूमती

---

[42] एकांतवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 65

रहती है। सौमित्र संपन्न परिवार से है वहीं अंशिका अपने नाना के घर में रहने आयी है। उसके मम्मी–पापा के बीच झगड़ा होने के कारण वे यहाँ आकर रहने लगे हैं। सौमित्र और अंशिका की बहुत मद्द करता है। चाहे पढ़ाई में हो या उसके पापा से और उसकी दादी से फोन पर बात करवाना हो। सौमित्र अंशिका के जीवन में खुशियां लाता है। **'अंशी ने अपने घर का रटा–रटाया नम्बर मिलाया। उधर से बहुत देर बाद 'हैलो' हुआ। अंशी 'दादी माँ' कहकर रोने लगी। अंशी मेरी बच्ची कैसी हो तुम की आवाज आ रही थी। इतने दिनों बाद दादी की स्नेहिल आवाज को सुनकर अंशी अपने को सम्हाल नहीं पा रही थी। सोमू ने फोन ले लिया, दादी माँ! मैं सौमित्र बोल रहा हूँ। अंशिका मेरी दोस्त है। हम एक ही क्लास में पढ़ते हैं अंशी बिल्कुल ठीक है आप मेरा नम्बर नोट कर लें और कभी भी दोपहर तीन से पाँच के बीच बात कर लें मैं और अंशी इस समय साथ–साथ पढ़ते हैं।'**[43]

डॉ० अमिता दुबे ने इस उपन्यास के माध्यम से परिवार में पति–पत्नी के सम्बन्ध विच्छेद से उनके बच्चों पर होने वाले मनोवैज्ञानिक समस्या का कथात्मक चित्रण किया है और परिवार के आपसी झगड़ों के कारण बच्चों पर होने वाले प्रभावों का वर्णन किया गया है।

'दादी के कहने पर पापा ने वह घर छोड़ दिया और पास ही किराये का मकान लेकर रहने लगे। मम्मी और पापा नियम से शाम को दादी के पास जाते। वहाँ जाते समय उनके हाथ में कुछ न कुछ सामान दादी और चाचा के परिवार के लिए होता। सोमू भी स्कूल से लौटकर कुछ देर दादी के पास हो आता। ज्यादा देर रूकने का उसका मन नहीं होता क्योंकि दादी के घर पर अब वह माहौल अच्छा नहीं रह गया था। हमेशा लड़ाई–झगड़ा होता रहता। चाचा–चाची को डाँटते रहते, चाची पहले तो खूब झगड़ा करतीं। एक की जगह दो बातें सुनातीं, अपनी किस्मत को कोसतीं और बाद में रोते–रोते बच्चों को पीटना शुरू करतीं। फिर बच्चे चिल्लाते और एक अजीब सी चिल्ल–पों मच जाती।'[44]

---

[43] उलझन उपन्यास, पृ० सं० 12

[44] उलझन उपन्यास, पृ० सं० 7

अतः अमिता दुबे के 'उलझन' और 'एकांतवासी शत्रुघ्न' उपन्यासों के माध्यम से समाज की यथार्थता का चित्रण किया गया है। और इनके दोनों ही उपन्यासों में यथार्थबोध स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। 'एकांतवासी शत्रुघ्न' में पौराणिक कथा के माध्यम से समाज में प्रेम और सौहार्द का सन्देश और वहीं 'उलझन' उपन्यास में पारिवारिक विच्छेद से बच्चों पर होने वाले मनोवैज्ञानिक बदलाव का चित्रण हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

3.2 अमिता दुबे के उपन्यासों में स्त्री पक्ष–

महिला कथाकारों के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श होने के बावजूद भारतीय समाज और उसका परिवेश विभिन्न प्रकार के समस्याओं से गुजरता है। ऐसे अनेकानेक समस्याओं के कारण जीवन के विविध क्षेत्रों सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में आये हुए तीव्र परिवर्तनों को दृष्टिगत करना सामान्य बात नहीं है। ऐसा कहना न होगा कि ऐसी स्थिति में साहित्यकार सामाजिक विंगतियों को ध्यान में रखकर रचनाएँ प्रस्तुत करता है। जिस रचनाकार में अपने परिवेश को पकड़ने को जितनी उत्कृष्ट लालसा और समसामयिक और कालजयी होगी।

आधुनिक सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियाँ साहित्य की सभी विधाओं में दृष्टिगत होती हैं। स्त्री–विमर्श उन्हीं विसंगतियों की देन है। **"स्त्री विमर्श में नारी मुक्ति की समस्या को उठाया गया है। नारी शोषण की समस्या एकांगी नहीं है, वह युगीन शोषण–तन्त्रों, सामाजिक, राजनीतिक ढाँचों आर्थिक परिस्थितियों और उन सबकी उपज सांस्कृतिक, धार्मिक मूल्यों और नैतिक अवधारणाओं का एक अंग है।"**[45]

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक एवं आज के समय तक नारी बहुत सारी वर्जनाओं का शिकार होती रही है। स्त्री और पुरूष समाज–निर्माण के दो आवश्यक अंग हैं जो एक दूसरे के पूरक हैं तथा एक ही सिक्के के दो पहलू है। एक के बिना दूसरे का कोई मोल नहीं है परन्तु इस समाज के संचालन में एक को बहुत या खुली छूट मिली है और दूसरे पहलू को तमाम बन्दिसें मिली हैं क्यों! ये कठोरपन स्त्री के जीवन के सतत् प्रवाह में

---

[45] व्यक्तित्व विचार–विनिमय के समय स्त्री विमर्श, देवेन्द्र सिंह गहवार, पृ० सं० 47

हमेशा रूकावट पैदा करती है, और स्त्री इसी वर्जनाओं से कुंठित हो जाती है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दू समाज में उनका सम्मान और आदर प्राचीन काल से ही आदर्शात्मक एवं मर्यादायुक्त था। वैदिक काल में स्त्री व पुरूष लगभग एक स्थान रखते थे। न कोई श्रेष्ठ था न सामान्य, दोनों के कार्यक्षेत्र भी अभी स्पष्ट बँटे हुए न थे। स्त्रियों के कर्त्तव्य व अधिकार पुरूषों के समकक्ष थे। संस्कृत साहित्य व उत्तरवैदिक काल में दो बड़े महाकाव्य लिखे गए जिसमें नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन मिलता है। पूरी विस्तृत कथा में स्त्री चरित्र कथा के रूप में विशिष्ट पात्रों का चरित्रांकन उस समय के नगरी समाज पर विहंगम दृष्टिपात करता है।

रामायण में नारी का गुणगान महर्षि वाल्मीकि ने किया। उन्होंने स्त्री के समग्र पक्ष को समाज के सामने रखा। सबसे पहले बाल्मीकी ने राम का सीता पर अपवित्र होने का आरोप दोष लगाया। इसी कथा के माध्यम से अमिता दुबे ने 'एकान्तवासी शत्रुघ्न' उपन्यास में आधुनिक तरीके से स्त्री पक्ष में बात रखी है। निष्कर्षतः कहना ना होगा कि स्त्री की सही पहचान उभर कर सामने तभी आएगी जब वह अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य और गौरव के साथ कर्मठ, सक्षम, स्वंयसिद्धा और अपने पांवों से चलकर गंतव्य तक पहुँचने वाली औरत बन जायेगी।

इसी प्रकार से डॉ० अमिता दुबे के **'उलझन'** उपन्यास में स्त्री पक्ष को बहुत कमजोर दिखाया गया है जिस प्रकार एक स्त्री ही दूसरी स्त्री को पूरी तरह समझ सकती है वहीं इस उपन्यास में अंशिका की मम्मी का एक स्त्री के रूप में नकारात्मक पक्ष को अमिता दुबे दर्शाती हैं और उपन्यास के अंत में अंशिका की मम्मी का ह्रदय परिवर्तन हो जाता है। इस उपन्यास के माध्यम से अमिता दुबे ने स्त्री मन के सम्बन्ध विच्छेद का एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। "**अंशिका से सोमू ने पूछा–'तुम्हारे मम्मी–पापा के बीच झगड़ा क्यों हुआ? क्यों वे हमेशा लड़ते रहते थे?' हाँ सोमू! मैंने तो उन्हें हमेशा लड़ते हुए देखा है। मम्मी बहुत गन्दी हैं। वे दादी के साथ बहुत बुरा व्यवहार करती हैं। अपनी मम्मी के तो आगे पीछे घूमती हैं और मामी को लैकचर देती हैं कि उन्हें नानी के सेवा करनी**

चाहिए मामी भी किसी दिन बूढ़ी होंगी तब उमंग अगर उनकी उपेक्षा करेगा तो उन्हें कैसे लगेगा? और मेरी दादी को 'वो बुढ़िया' 'वो बुढ़िया' कहकर बातें करती हैं। जब हम पापा के घर थे तब भी वे दादी के दस बार आवाज देने पर एक बार सुनती थीं और हमेशा मुँह बनाकर काम करती थीं। साथ ही पापा से भी शिकायतें करती थीं कि दादी उन्हें चैन नहीं लेने देतीं। सारा दिन दौड़ाती रहती हैं। पापा ने मुझे समझाया था कि बेटा! तुम दादी की बात सुना करो जिससे मम्मी को परेशानी न हो लेकिन मम्मी तो लड़ने–झगड़ने का बहाना खोजती रहती हैं जरा सा मौका मिला नहीं कि बात बढ़ा ली। अबकी बार तो मैं समझ ही नहीं पायी कि मामला क्या था? शायद वे बुआ के पास उन्हें भेजना चाहती थीं और पापा दोनों ही इस बात पर तैयार नहीं थे। मम्मी यहाँ आ गयीं और अब तो वे पापा से फोन पर बात नहीं करती।' अंशिका ने बताया।"[46]

इसी तरह **'एकांतवासी शत्रुघ्न'** उपन्यास में स्त्री पक्ष को बहुत ही मजबूती के साथ दिखाया। पुरूषों के त्याग के बराबर ही इसमें स्त्रियों के त्याग का वर्णन कलात्मकता के साथ किया गया है। डॉ० अमिता दुबे ने इस उपन्यास में कहीं भी स्त्रियों को पुरूष पात्रों से तनिक भी स्त्री कमजोर नहीं दिखाई देती हैं। **"शत्रुघ्न की प्रशंसा सुन श्रुतिकीर्ति का सिर गर्व से उन्नत हुआ। वह कहना चाहती थी कि सीता जीजी ने यदि वन में रहकर कष्ट उठाये तो उर्मिला जीजी ने भी पति के वियोग में दुख उठाये माण्डवी जीजी ने भी भरत भैया की भांति वनवासी समजीवन जिया परन्तु मैंने भी अपने पति शत्रुघ्न की भांति राजमहल में रहकर एकान्तवास का निर्वाह किया परन्तु संकोचवश वह यह बात किसी से कह नहीं सकी। माता सुमित्रा सस्नेह कहने लगीं– हमें ज्ञात था कि लक्ष्मण वन में हैं और भरत नंदीग्राम में इसलिए उर्मिला और माण्डवी हमारे समक्ष प्रसन्न होने का स्वांग करती हैं वे मन ही मन अत्यन्त दुखित हैं पति वियोग में उनकी क्या स्थिति हो सकती है यह हमसे अधिक कौन समझ सकता है।' 'परन्तु श्रुतिकीर्ति के मुख पर हमने कभी भी उदासी की रेखा नहीं देखी जबकि सबसे अधिक उदास वह ही थी।' कौशल्या ने कहा। 'क्यों माता श्रुतिकीर्ति को क्या कष्ट हो सकता था' सीता ने पूछा। 'पुत्री! उर्मिला और माण्डवी**

---

[46] उलझन उपन्यास, पृ० सं० 11–12

के मुख पर यदा–कदा मलिनता का आभास हमने किया। यद्यपि इन दोनों ने सदैव हास–परिहास द्वारा हमारा दुख दूर करने का प्रयास किया हम जानते हैं कि श्रुतिकीर्ति का मन रोता था परन्तु उसने कभी कोई भाव अपने मुख पर नहीं आने दिया। जानती हो पुत्री यह तुम्हारा लाडला छोटा देवर, तुम्हारा लल्ला शत्रुघ्न राजमहल में नहीं रहता था।''[47]

अतः डॉ० अमिता दुबे ने अपने उपन्यासों में किशोरी होती लड़की से लेकर परिपक्व और आत्मनिर्भर स्त्री तक के सफर को बड़ी ही सतर्कता से लिखा है। अमिता दुबे ने स्त्री की छोटी–छोटी समस्याओं को पाठकों के सामने लाने का एक सफल प्रयास इन उपन्यासों के माध्यम से किया है।

---

[47] एकान्तवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 67–68

चतुर्थ अध्याय

अमिता दुबे के कथा साहित्य में स्वरूप : सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

चतुर्थ अध्याय

अमिता दुबे के कथा साहित्य में स्वरूप : सामाजिक एवं सांस्कृति पक्ष

साहित्य सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम है इसलिए वह रचनाकार के सामाजिक बोध को रेखांकित करने में सहायक होता है, वह रचनाकार की जीवन दृष्टि और उसके द्वारा सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट करने का माध्यम बनता है, जिसके आधार पर स्पष्ट करते हुए साहित्य और समाज के सम्बन्धों की पड़ताल करता है। डॉ० अमिता दुबे ने अपनी कृतियों में यही प्रयास किया है। उनके उपन्यास, कहानी (कथा साहित्य) के विश्लेषण के द्वारा उनके इस प्रयास को स्पष्ट करेगें।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। साहित्य मानव–जीवन को उसकी गहनता और विभिन्नताओं के साथ अच्छी तरह व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। साहित्य का केन्द्र मानवजीवन है और मानव संस्कृति का अविभाज्य अंग है। किसी देश विशेष की संस्कृति के अन्तर्गत वहाँ की रिवाज, चाल–चलन, पर्व–त्यौहार, खाना–पीना, परंपरागत मान्यतायें ये सब आतें हैं। आदान–प्रदान संस्कृति की जान है और हमारी भारतीय संस्कृति इतनी महान है कि हमें उसकी सुरक्षा करनी है।

4.1 कहानियों में स्वरूप : सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष–

कहानी साहित्य की एक महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित विधा है, जीवन के किसी न किसी महत्वपूर्ण पक्ष को लेकर एक कहानी निश्चित तौर पर एक दिशा देती है। साहित्य और समाज एक दूसरे को गहरे स्तरों से जोड़कर रखते हैं। बिना समाज के साहित्य नहीं रचा जा सकता वैसे ही साहित्य के अभाव में हम समाज को नहीं जान सकते।

सन् साठ के बाद हिन्दी कहानियों में एक नया मोड़ दिखाई देता है। कहानी जीवन की प्रतिछाया के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती हैं। जीवन की सच्चाइयों, विसंगतियों, विडम्बनाओं को यथार्थ रूप प्रदान करने में आज कहानी सक्षम है। आज समाज और संस्कृति किस प्रकार परिस्थितियों से प्रभावित होकर एक नये रूप में ढल रहें हैं यह प्रभाव

कहानियों में परिलक्षित होता है। समकालीन कहानियों में व्यक्तिगत सम्बन्धों के दायरों, पारिवारिक संरचना में बदलाव का अर्थ, समाज में गहनतर स्तर पर बदलाव ही है। समस्त मानव संवेदना को सामाजिक यथार्थ मानते हुये भी विषयवस्तु के रूप में सामाजिक सरोकार को ठोस, पारिभाषिक अर्थ और वैयक्तिक यथार्थ पर वरीयता देने वाली डॉ० अमिता दुबे की कई कहानियाँ बहुत बारीकी से उद्घाटित करती है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह **'पाषाणी'**, **'नयनदीप', 'सिलवटें'** में संग्रहीत अनेक कहानियाँ वर्तमान समाज और संस्कृति के विविध पक्षों को गहन रूप में प्रस्तुत करती है।

'**पाषाणी**' कहानी संग्रह में मध्यमवर्गीय जीवन की सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिछाया दिखाई देती है। इसके साथ ही इस संग्रह में पारिवारिक सामाजिक संबंध कहानी की उपजीव्य सामग्री है। यह कहानी संग्रह अपनी विषयगत विविधिता में समाज और संस्कृति के विविध पक्षों को उद्घाटित करता है। स्त्री केन्द्रित सामाजिक व्यवस्था द्वारा प्रेषित संयुक्त परिवार प्रथा के विघटन तथा उसकी जगह पर एकल परिवार व्यवस्था के विकसित होने का दस्तावेज है। क्योंकि जीवन तथा समाज सम्बन्धों में ही अभिव्यक्ति पाकर जीवित और साकार होते हैं। अमिता दुबे 'पाषाणी कहानी संग्रह के माध्यम से स्पष्ट करती हैं कि–

"पिछले कई वर्षों से उसने पटाखों और मिठाइयों के लिए जिद्द थी करना छोड़ दिया है। पहले वह कितना रोता था दीपावली की रात को। बिना खाये–पिये मोटे–मोटे आँसू बहाता वह घर के दरवाजे ही सो जाता था। माँ कितनी कठोर थी कि उसकी एक भी बात नहीं सुनती थी न बहलाती थी न समझाती थी। बस एक ही बात कहती थी– जैसा जीवन भगवान ने दिया है उसी में रमो! दूसरों की चुपड़ी रोटी देखकर अगर ललचाओगे तो जीवन में क्या पाओगे। उस समय मोहित सोचता था जीवन में दीपावली क पटाखों के अलावा पाने को और है क्या? लेकिन आज सोचता हूँ माँ ठीक ही कहती थी। यदि वह इतनी पाषाणी न होती तो वह सचमुच अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकता था।"[48] अमिता जी ने इस कहानी के माध्यम से परिवार में पति की मृत्यु के बाद अपने बच्चे की

[48] पाषाणी कहानी, पृ० सं० 77

परवरिश में आने वाली समस्याओं का सामना स्त्रियाँ किस प्रकार करती हैं का सुन्दर चित्रण 'पाषाणी' कहानी के माध्यम से किया है।

'नयनदीप' कहानी संग्रह में संकलित कहानियाँ स्त्री जिजीविषा के साथ स्त्री संघर्ष और पारिवारिक विच्छेद को बयाँ करती है। 'सिलवटें' कहानी संकलन में अमिता दुबे ने स्त्रियों की महती भूमिका को उजागर किया है किस प्रकार परिवार से लेकर समाज के निर्माण में स्त्रियाँ योग देती हैं। इस तथ्य को बहुत बारीकी से यह संग्रह उजागर करता है। अमिता दुबे अपनी 'नयनदीप' कहानी संग्रह में संकलित 'कितने अजनबी' कहानी के माध्यम स्पष्ट करती हैं कि– **"मैं नहीं जानती थी कि मुझे ऐसा माहौल मिलेगा। इतनी कुण्ठा से ग्रस्त ननदें होंगी मेरी। 'अरे! अगर शादी नहीं हुई या नहीं हो रही है तो क्या करने को कुछ नहीं है, बहुत कुछ है।' एक बार मैंने अवनि दीदी से धीरे से यह कहा था तो किचन के दरवाजे पर हाथ अड़ाकर लगभग मेरा रास्ता रोकते हुए बड़ी क्रूरता से कह गयीं थीं–'आज आपकी शादी हो गयी है इसलिए कह रही हैं। अगर न होती और भाई–भाभी के साथ जीवन भर रहना पड़ता तो पता चलता। बताइये, मैं छह महिने पुरानी विवाहिता आज विवाहित होने का ताना सुन रही हूँ।"**[49]

'पुनर्वास', 'सुखमनी', 'सीढ़ी', धनुक के रंग और '**संभावना के जुगनू**' कहानी संग्रह में विषयगत वैविध्य होने के बावजूद इसके केन्द्र में स्त्री की विविध भूमिकाओं, उसके जीवन में आने वाली विषमताओं को यथार्थपरक दृष्टि से अभिव्यक्ति दी गयी है। **'सुखमनी**' कहानी संग्रह में पारिवारिक जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिकता के अतिवाद में परिवार दायित्वों का सफल निर्वाह न करने के फलस्वरूप उत्पन्न विसंगतियों का यथार्थ चित्रण हुआ है। अमिता दुबे इस कहानी में स्पष्ट करती हैं कि– **"बलवंत सिंह जानते हैं दोनों बेटों के घरों में उनकी और पत्नी की गुजर नहीं है। बड़ी बहू सीधी–सादी है पर बेटा गुलशन बेढब है, हर समय उतावली में रहता है 'करो' या 'मरो' की शैली में। बहू पर ही चिल्लाता रहता है, बिना सोचे–समझे कहीं भी शुरू हो जाता है। बोलते समय भूल जाता है कि क्या कहने वाली बात है और क्या नहीं। वहीं दूसरा बेटा**

[49] कितने अजनबी(नयनदीप), पृ० सं० 13

जोगिन्दर धीर–गम्भीर है। धीमी आवाज में बात करता है, सबको मान–सम्मान देता है सबसे मिलता–जुलता है तो उसकी बहू बेढंगी है। फोन की तो वह पुतली है। सारा दिन साज सिंगार में लगी रहती है। टी०वी०–पिक्चर की दीवानी बच्चों के लिए उल्टा–सीधा खाना बनाकर टी०वी० के आगे बैठ जाती है। क्या मजाल उठकर कोई काम कर ले, किसी की बात सुन ले। जोगिन्दर को फैक्ट्री के काम से महीने में बीस दिन बाहर रहना पड़ता है ऐसे में बहू की मनमानी चलती है पूरे घर में। इस बहू के साथ सलीकेदार रूमाल कौर की गुजर नहीं तो तेज तर्रार गुलशन से पिता की नहीं पटने वाली। यही कारण है कि बुढ़ापे की ओर बढ़ते हुए एक दूसरे के साथ कदम से कदम मिलाते हुए सरदार–सरदारनी ने अमृतसर में ही रहने का निर्णय लिया। उनके इस निर्णय से बच्चे नाराज हो गये। जब–तब खरी–खोटी सुनाते रहते हैं, जिसे दोनों एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देते हैं। दो लड़खड़ाते कदम एक दूसरे का हाथ थामकर जीवन जीने की कोशिश में लग गयें हैं।"[50]

'सीढ़ी' कहानी संग्रह आज के समाज में पारिवारिक व्यवस्था में स्त्री पुरूष संबंधों के विघटन, विवाहेतर संबंध और पुराने मूल्यों के बीच महानगरीय असम्प्रक्ति आदि का चित्रण किया है। अमिता दुबे अपनी सीढ़ी कहानी संग्रह में संकलित **'पहचान'** कहानी में एक पुरूष द्वारा एक साथ दो स्त्रियों के छले जाने का वर्णन किया है। इस कहानी में लेखिका ने विवाहेतर सम्बन्धों के कारण स्त्रियों के शोषण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रदर्शित किया है। जैसा कि हम इस कहानी के माध्यम से देखते हैं कि– **तनुजा को समझ में नहीं आया कि उसे क्या सांत्वना दे। अब कहानी सुनाने की बारी उसकी थी। उसने अपनी और क्षितिज की शादी की संक्षिप्त कथा सुनाकर सुनीता को समझाया– 'बहन! इसमें न तो तुम्हारा दोष है न मेरा। किस्मत ने हमें ऐसे आदमी के साथ बाँध दिया है जो न तुम्हारा हो सका न मेरा। वह दो नावों पर एक साथ सवारी करना चाहता है। उसे सबक सिखाने का एक तरीका है–सुनीता अचानक आँसू पोंछकर बोली–हम दोनों उसे छोड़ दें, परित्याग कर दें उसका और एक साथ**

[50] सुखमनी कहानी, पृ० सं० 9–10

मिलकर संघर्ष करें।' 'नहीं कदापि नहीं यदि हम उसे छोड़ दे ंतो वह तीसरी ढूँढ़ लेगा। हम किसी और का जीवन बर्बाद करने की उसे छूट नहीं दे सकते। वह नाटककार है। मँजा हुआ खिलाड़ी है मोह जाल फैलाता है परन्तु सन्तुष्ट किसी से नहीं होता।'[51]

'धुनक के रंग' कहानी संग्रह में इन्द्रधनुष को प्रतीक रूप में रखकर जीवन के विविध रंगों अर्थात सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, आरोह–अवरोह को झेलते हुये व्यक्ति एवं समाज का चित्रण किया है। कोरोना संकट काल में व्यक्ति की मानसिक संत्रास एवं स्त्री–पुरूष संबंधों का चित्रण किया गया है। इस कहानी संग्रह में संकलित 'धनुक के रंग' कहानी कोरोना काल की विसंगतियों को उजागर करती है। जैसा कि हम इस कहानी में देखते हैं कि **'दादीजान! जब महक का निकाह हो चुका है तब आप इतनी दूर पैदल आने के बजाय उसके ससुराल चली जातीं। जब साधन चलने लगते तब आतीं।' अभी साकिब की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि महक ने कहा– 'साकिब साहब! मेरी शादी जरूर हो गयी थी लेकिन अब हम साथ नहीं रहते। जब वहाँ मेरा ठिकाना नहीं था तो दादीजान कैसे रहतीं। कहकर महक चादर पर बैठने के बजाय पास के पेड़ के नीचे खड़ी हो गयी। साकिब ने दादीजान को आराम से सो लेने को कहा और महक के पास पहुँच गया। महक ने दो अखबार बिछाये और खुद बैठते हुए साकिब को भी बैठने का इशारा किया। लगातार चलते रहने और सामान उठाने के कारण वह भी बहुत थक गयी थी।**[52]

'**संभावना के जुगनू**' कहानी संग्रह में रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था में स्त्री शोषण, अंधविश्वास, पारिवारिक विघटन के साथ सांस्कृतिक विक्षोभ से मानवमूल्यों के विखराव का चित्रण किया गया है। अमिता दुबे अपनी 'संभावना के जुगनू' कहानी में परिवार में स्त्री के मानसिक शोषण के कारण उसकी छटपटाहट को उद्घाटित किया है। जैसा कि हम इस कहानी में देखते हैं कि– **नील! मुझे माफ करना! अब मैं और इस तरह नहीं जी सकती। इस निरर्थक जीवन से ऊब होती है मुझे। घुटनों–कमर के असहनीय दर्द के साथ घर की जिम्मेदारी मैं नहीं उठा सकती, तुम**

---

[51] पहचान (सीढ़ी कहानी संग्रह), पृ० सं० 37

[52] धनुक के रंग कहानी, पृ० सं० 108

काम करो यह मुझे अच्छा नही लगता। कभी तुमको कुछ करते देखा नहीं, इसलिए जब तुम सहायता के लिए आगे बढ़ते हो तो मुझे आत्मग्लानि होने लगती है। बच्चे अपनी–अपनी जगह खुश हैं खुश तो हम तुम भी हैं, परन्तु मैं न तुम्हें दुखी करना चाहती हूँ और न खुद दुख सहना चाहती हूँ। इसलिए सब कुछ छोड़कर जा रहीं हूँ। मुझे नहीं पता कहाँ जा रही हूँ, कब तक जिन्दा रहूँगी, कब मृत्यु का वरण करूँगी। ये सांसारिक वस्तुएँ मेरा प्राप्य नहीं है न ही मैं कुछ अपने साथ ले जा रही हूँ। यदि मेरे बारे में कुछ दुखद समाचार मिले तो परेशान मत होना हम मिलेंगे अगले जन्म में, हमारा तुम्हारा साथ तो सात जन्म का है।'[53]

इस प्रकार डॉ० अमिता दुबे की कहानियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं को इंगित ही नहीं करती बल्कि उसके निवारण का प्रयास भी करती हैं। एक दिशा देने में इनकी कहानियाँ निःसन्देह सफल हैं। ऐसे ही समकालीन व्यवस्था पर सदियों से पुरूषों का वर्चस्व रहा है। अमिता दुबे की कहानियों में पूर्व स्थापित व्यवस्था से सीधे मुठभेड़ करती हैं। उनकी कहानियों में सांस्कृतिक विद्रूपता और प्रतिरोध की अनुगूंज तथा उनके कहानियों के केन्द्र में स्त्री विमर्श, वर्गीय जीवन संघर्ष को बेहद सृजनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। अमिता दुबे की कहानियाँ भारतीय समाज एवं संस्कृति की तह तक जाती है उनकी जड़े अपने वक्त से, अपने समाज से गहरे रूप से जुड़ी हैं।

4.2 उपन्यासों में स्वरूप : सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष–

सामाजिक पक्ष–में समाज के अन्तर्गत व्यक्ति परिवार, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था आदि का समावेश होता है। इन सभी ईकाईयों में पाये जाने वाले प्रयासात्मक संबंधों के आधार पर ही समाज का निर्माण होता है। इन सभी विषयों के अध्ययन से ही सामाजिक जीवन में होने वाले अनेक प्रकार के या विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है तथा सामाजिक गतिशीलता के नियन्त्रण और सामाजिक व्यवस्था के ढाँचे का परीक्षण भी मनुष्यों से समाज का निर्माण होता है और समाज से

---

[53] संभावना के जुगनू कहानी, पृ० सं० 10

मनुष्यों का लेकिन कभी–कभी ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं कि समाज और व्यक्ति में विरोधी भाव की अनुभूति शुरू हो जाती है।

व्यक्ति की अपनी सहज भाव, संवेदना और अनुभूति है, दूसरी तरफ समाज व्यक्ति को उसकी व्यक्तिगत सोच के अनुसार छूट देगा तो समाज बिखर जायेगा। इसलिए समाज मर्यादाओं, नैतिकताओं, नीतियों, मूल्य निर्धारण के मानदण्डों को आधार बनाकर चलता है। हमारे आलोच्य उपन्यास **'एकान्तवासी शत्रुघ्न'** एवं **'उलझन'** में इसी तरह की समस्याओं को चित्रित किया गया है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में निवास करते हुए वह अनेक लोगों से सम्बन्ध जोड़ता है। इसका कारण उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो सकता है और परस्पर प्रेम, सौहार्द और मातृभाव भी। **'एकान्तवासी शत्रुघ्न'** में अमिता दुबे लिखती हैं कि **"संसार में शत्रुता, घृणा को प्रेम से और अंधकार को प्रकाश से विजित किया जाता है। शत्रुघ्न के चरित्र में यही दृढ़ता मुझे दिखाई दे देती है। जिस प्रकार श्री राम स्थितिप्रज्ञ थे, समभाव रखने वाले थे, उसी प्रकार रिपुसूदन नाम से शत्रुघ्न भी राजमहल में रहते हुए भी वनवासी हो सकते हैं।"**[54]

अमिता दुबे ने अपने इस उपन्यास में शत्रुघ्न के बहाने समस्त मानव जाति को रहन–सहन, सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों में मधुरता, प्रेमभाव–सौहार्द की सलिलता पुनः प्रवाहित करने का आह्वान करता हुआ यह उपन्यास सम्बन्ध बोध और जागरूक मानव की तरह से दायित्वों के निर्वहन की प्रेरणा देता प्रतीत होता है। यह 'वसुधैव कुटुम्बकम'' के आधार पर उसके लिए सारा समाज एक परिवार की तरह है और उसमें रहने वाले लोग परिवार में भाईयों की तरह फिर चाहे वह किसी भी धर्म के मानने वाले हों इससे उसे कोई सरोकार नहीं होता। अपने उपन्यास **'एकान्तवासी शत्रुघ्न'** और **'उलझन'** में डॉ० अमिता दुबे सामाजिक सम्बन्धों के तह तक जाती हैं और कुशल सर्वेक्षण करती हैं।

भारतीय सामाजिक जीवन में धर्म का विशिष्ट स्थान सदियों से रहा है और आज भी उतना ही जीवन्त है लेकिन परिस्थितियों की जटिलता

---

[54] एकान्तवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 5–6

और लोगों की अवैज्ञानिक सोच ने धर्म के हर एक माध्यम या स्वरूप को धूमिल कर दिया है। उसकी मूल जड़ों में भी परिवर्तन कर दिया गया है। आज धर्म समाज और व्यक्ति का नियामक अथवा परिस्कर्ता न होकर मानवता, समाज का विध्वंसक बनता जा रहा है। धर्म के कारण मानव समाज बिखराव के कगार पर अटक गया है। अमिता दुबे के उपन्यास इस सम्भावित खतरे के लक्षण को प्रकट करती हुई हमें सावधान करती हैं। समय रहते यदि उचित कदम न उठाये गये तो आने वाली पीढ़ी को त्रासदीय परिवेश में जीने को अभिशप्त होगी।

डॉ० अमिता दुबे रामचरितमानस् से प्रभावित हैं और यह मानती हैं कि ईश्वर हर कण–कण में वास करता है परन्तु आज के युग में धार्मिक भावनाएँ एक सतही वस्तु बनकर रह गई। धर्म के नाम पर चलने वाले क्रिया–कलाप मात्र एक ढकोसला है। धर्म प्रचार के नाम पर सीधे–सादे लोगों को ठगा जा रहा है। धर्म को बाह्यचारों की जकड़ बना दिया है। ऐसा लगता है कि धर्म को धारण करने के स्थान पर बाह्यचारों की जकड़ बहुत मजबूत होती जा रही है।

डॉ० अमिता दुबे ने अपने दोनों उपन्यास में वर्तमान समाज की संकीर्णता, असहिष्णुता, कहरता, मनोवैज्ञानिक, बालकथा कोरोना काल की परिस्थितियाँ एक दूसरे के प्रति नफरत की भावना, धार्मिक वैमनस्य, ऊँच–नीच की भावना तथा झूठे आडम्बरों द्वारा लोगों की पथ–भ्रष्ट करना, धर्म की आ़ड़ लेकर अपने स्वार्थों की सिद्धि हेतु लोगों को आपस में लड़वाना आदि कुप्रवृत्तियों को चित्रित किया है। अमिता दुबे 'एकान्तवासी शत्रुघ्न' की भूमिका में लिखतीं हैं कि **"एकान्तवास आज के समय की माँग करता है। विश्व महामारी का रूप ले चुका कोरोना वायरस एकान्तवास की माँग करता है। शत्रुघ्न के एकान्तवास को खोजने में मेरा भी एकान्तवास सम्मिलित है। पूर्णबन्दी के इस कठिन समय में यह सृजनात्मकता ही ऊर्जा प्रदान करती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह बहुत लम्बे समय से एकान्तवास नहीं कर सकता। संचार के आधुनिक माध्यमों के**

बीच भी पुस्तकें एकान्त में सबसे अच्छी मित्र सिद्ध होती हैं, मेरी भी हुई।"[55]

प्राचीन काल में समाज इतना जटिल नहीं था, जितना जटिल आज के युग में हैं आधुनिकता के शिखर के शिकार सभी हैं। समाज की व्यवस्था को ठीक रखने के लिए विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु समाज विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित होकर प्रवाह्मान रहता है। यथा–राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि अपने उपन्यास साहित्य के द्वारा डॉ० अमिता दुबे ने एक महत्वपूर्ण तथ्य को उजागर किया है और वह आज के युवा पीढ़ी के लिए रक्तबीज के समान है।

---

[55] एकान्तवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 6

पंचम अध्याय

अमिता दुबे का कथा साहित्य : संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य

पंचम अध्याय

अमिता दुबे का कथा साहित्य : संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य–

साहित्य में वस्तु तत्व की भाँति कला वैशिष्टय और शिल्प का भी अपने जगह विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कोई भी रचनाकार की साहित्यिक कृति वस्तु तथा विचार उसमें उपस्थित तत्व की वाहिका होते हुए भी एक कलात्मक ईकाई होती है। वह कलात्मक ईकाई ही सृष्टि है। जो कलाकार की संवेदनाओं, अनुभव, विचार तथा चिंतन को इस रूप में पाठकों तक तैयार करके सम्प्रेषित करता है कि पाठक सहज, सरल उस कृति का अनुभव करता हुआ इच्छित आनन्द, विचार तथा संतोष प्राप्त कर सके। कहने की आवश्यकता नहीं है कि किसी भी कृति की कला के आवरण में प्रस्तुत की गई संवेदनाएँ, अनुभव तथा विचार उस कृति को साहित्य का दर्जा दिलाती है और उसे महत्व भी प्रदान करता है। साहित्य के अन्तर्गत कला, भाषा और शिल्प तीनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सामान्य रूप से भाषा ही भावाभिव्यंजना का माध्यम है। कहानी और उपन्यास में लेखक के अभीष्ट भाषा के व्यक्तिकरण के लिए भाषा उपयुक्त होना अति आवश्यक है। कहानी गद्य साहित्य की एक विधा है इसीलिए कहानी की भाषा कठिन होना उसकी भावात्मक प्रवाहशीलता में बाधा उत्पन्न कर देता है। सरल, सहज, लोकोक्ति, मुहावरों तथा कहावतों से युक्त भाषा कहानी को व्यवहारिक और विश्वसनीयता प्रदान करती है। इसी तरह उपन्यास में भी भाषा, कथोपकथन, उद्देश्य, वातावरण के हिसाब से उपन्यास की रचना की जाती है। जिससे यह विधा कहानी के अपेक्षा कहीं और अधिक विस्तृत है। क्लिष्ट भाषा न केवल कहानी को बल्कि उपन्यास को भी नीरस बना देती है बल्कि उससे कहानी और उपन्यास की प्रभावात्मकता भी नष्ट हो जाती है। बहुत ज्यादा निरर्थक शब्द योजना अकलात्मक शब्दाडंबर, क्लिष्ट वाक्य जाल आदि कहानी, उपन्यास को भाषा तत्व की दृष्टि से हीन बना देता है। हिन्दी के उपन्यास सम्राट एवं कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द ने कहानी में भाषा का आशय प्रकट करते हुए लिखा है कि **"भाषा साधन है साध्य नहीं। अब हमारी भाषा ने वह रूप प्राप्त कर लिया है कि हम भाषा में आगे बढ़कर भाव की ओर ध्यान दे और इस पर विचार करें कि जिस उद्देश्य से यह निर्माण का**

आरंभ किया गया था कि वह क्यों कर पूरा हो। वही भाषा जिसमें आरंभ में बाग और बहार, बैताल पच्चीसी की रचना ही सबसे बड़ी साहित्य सेवा थी। अब इस योग्य हो गयी कि उसमें शास्त्र और विज्ञान के प्रश्नों की विवेचना की जा सके।"[56]

कहानी की भाषा के सन्दर्भ में कमलेश्वर ने समकालीन कहानी पर विचार करते हुए लिखा है **"नई कहानी भारतीय मूल्यों से संरक्षण जीवन शक्ति और परिप्रेषण की दिशा में यत्नशील है।"**[57] उपन्यास के विषय में प्रेमचन्द लिखतें हैं कि **"मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"**[58]

कहानी और उपन्यास की भाषा अभिव्यक्ति का मूल माध्यम है। भाव, विचारों को समाज की स्थिति से और व्यवहार भाषा से मिलती है। मनुष्य के सफल होने का एवं विचारों का किसी के प्रति अभिव्यक्ति दर्ज करने का सबसे सरल सहज विधा उपन्यास और कहानी है। इस तरह साहित्य की रचना करते समय साहित्यकार को शिल्प, बिम्ब आदि का सहारा लेना पड़ता है। साहित्य के शिल्प के अन्तर्गत उन सभी विधियों, नियमों तरीकों विचारों आदि का समावेश हो जाता है। जिनकी सहायता से किसी घटना पात्र–वार्तालाप अथवा दृश्य और वातावरण का सजीव वर्णन प्रस्तुत करता हुआ समाज के सभी अंगो पर विशिष्ट रूप से प्रकाश डालता है।

5.1 शिल्प विधान एवं शिल्प वैशिष्टय–

लेखक और पाठक के बीच जो कड़ी होती है– वह है कृति। कृति, वस्तु एवं शिल्प का समन्वित रूप होती है। शिल्प के द्वारा ही वस्तु में यह कड़ी उत्पन्न की जाती है जिसके द्वारा सृजन के बाद रचनाकार रचना से बाहर और पाठक उसके अन्दर समाहित हो जाता है। जो रचना पाठक को अपने अन्दर समाहित नहीं कर सकती है तथा श्रृष्टा से स्वंय को मुक्त नहीं करा सकती उसमें असमर्थता होती है, कुछ दुर्बलता होती है और वह

---

[56] साहित्य का उद्देश्य, मुंशी प्रेमचन्द, पृ० सं० 02

[57] नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, पृ० सं० 70

[58] हिन्दी उपन्यासों का इतिहास, गोपाल राय, पृ० सं० 17

कमी वस्तु तथा सामग्री की उतनी नहीं होती जितनाी प्रस्तुतीकरण की अथवा शिल्प की है। शिल्प का सम्बन्ध सम्पूर्ण कृति से होता है। शिल्प वस्तु पर आधारित है और वस्तु से पहले शिल्प का जन्म नहीं होता है।

कथा साहित्य में परिवेश का उतना ही महत्व है जितना घटना का। जिस प्रकार घटना लेखक के व्यक्तित्व को उजागर करती है ठीक उसी प्रकार लेखक के व्यक्तित्व को उभारने में परिवेश का भी महत्वपूर्ण स्थान है। अमिता जी ने अपने आस–पास के परिवेश को जिसमें उनके जीवन का विकास हुआ है, बहुत ही चित्रात्मकता से वर्णन किया है। आप जिस वस्तु, जगह, परिवेश, व्यक्ति आदि का वर्णन करते हैं उस सबका जीता–जागता हुआ चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत हो जाता है। इसमें दो मत बिल्कुल नहीं है जिस वस्तु को जैसा बताना चाहतें हैं पाठक के सम्मुख वैसा ही चित्र प्रस्तुत हो जाता है। अमिता दुबे 'भाषा प्रयोग' के सभी कृत्रिम आदेशों व औपचारिकताओं की उपेक्षा करके अपने अन्तःकरण की तृप्ति को मानदण्ड बनाकर चलने को विवश हैं।

अमिता दुबे के कथा साहित्य में उनकी सहज सीधी भाषा और शैली अनायास ही उतरती है जो उनके अनेक जटिल से जटिल संवेदनाओं को भी बिल्कुल सीधे और साफ अकृतित्रम रूप में अत्यंत ही प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में समर्थ है। आपकी भाषा में साथ ही स्वाभाविकता, ऋजुता, प्रवाह और मौलिकता विद्यमान है।

अमिता दुबे के गद्य में वर्णनात्मकता का प्रयोग पाया जाता है। इसके अन्तर्गत घटनाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है जो कि पाठक के मानस पर प्रभाव छोड़ता हुआ आगे बढ़ता है। अमिता दुबे की भाषा में बिम्बात्मकता का भी विशेष गुण दिखाई देता है। भाषा चित्र बनाती हुई चलती है जो पाठक को सहज ही ग्राह्य होती है।

आधुनिक हिन्दी कहानी और उपन्यास की सम्पूर्ण वस्तु जीवन से सम्बन्धित होती है और उसके द्वारा उपन्यासकार अपना प्रतिपाद्य एवं अभिव्यक्ति विचारों को सम्प्रेषित करता है। वस्तु रोचक तथा रूचिकर पैदा करने वाली होती है। जिससे पाठक को आगे आने वाली वस्तु के बारे में जानने की इच्छा होती है। उपन्यास वस्तु का आरंभ और समापन बहुत

प्रकार से होता है। इस सम्बन्ध में कोई भी सिद्धान्त का नियम नहीं है। इसकी योजना के लिए लेखक या लेखिका पूर्णतः स्वतंत्र होता है। औपन्यासिक वस्तु को बहुत अधिक सक्षम एवं प्रभावी बनाने के लिए वस्तु शिल्प की योजना वस्तु और पाठक के प्रभाव की दृष्टि से करता है। डॉ० उषा सक्सेना उपन्यास के बारे में कहती हैं कि **"उपन्यास का प्रारंभ भिन्न प्रकार से होता है, कुछ उपन्यासों का प्रारम्भ प्रकृति का चित्रण, स्थान, काल अथवा युग चित्रण से होता है। कुछ का प्रारम्भ पात्रों के संवाद से होता है। संवादात्मक प्रारंभ श्रेष्ठ प्रतीत होता है क्योंकि यह वितरणविहीन और नाटकीय होता है किन्तु निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि यह ही श्रेष्ठ है। शिल्प की दृष्टि से वही आदि सफल है जो प्रभावशाली हो तथा जो केवल भूमिका मात्र न हो प्रत्युत उसका उपन्यास में महत्व हो।"**[59]

वास्तव में उपन्यास और कहानी के रचनातत्व में कथानक या कथावस्तु पात्र और चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल और वातावरण, भाषा–शैली और उद्देश्य आदि का ही शिल्प की दृष्टि से सभी विद्वानों द्वारा स्वीकार है। उपन्यास अपेक्षाकृत कहानी से विस्तृत रचना होती है। उपन्यास में जीवन के विविध पक्षों का समावेश होता है वहीं कहानी में जीवन के एक पक्ष का समावेश होता है। उपन्यास में वास्तविकता तथा कल्पना का कलात्मक मिश्रण होता है। जो कहानी में भी पाया जाता है।

कहानी और उपन्यास के ये विभिन्न तत्व लेखकों की विधायनी कल्पना द्वारा यथार्थ के ढंग से शिल्पित होकर ही किसी कहानी और औपन्यासिक कृति को पूर्णता प्रदान करते हैं और कलात्मक सौन्दर्य की रचना करते हैं। जब पाठक कोई उपन्यास पढ़ता है तो उसे किसी न किसी कहानी से गुजरना पड़ता है। कहानी उपन्यास का अनिवार्य और विशिष्ट तत्व है। चाहे छोटी कहानी हो या बड़ी, सांकेतिक हो या प्रतीकात्मक, संगठित तालमेल और विचारों से गढ़े हुए सुसम्बन्ध किसी न किसी तरह या किसी रूप में उपन्यास में मौजूद रहतें हैं।

कहानी उपन्यास का महत्वपूर्ण अंग है। अलग–अलग उपन्यासों में इसका रूप बदल सकता है। वास्तव में कहानी अपने मूल रूप से समय

---

[59] हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास, डॉ० उषा सक्सेना, पृ० सं० 76–77

को नियोजित कर विभिन्न घटनाओं का वितरण मात्र है। उपन्यासकार अपनी प्रतिभा और कल्पना के जोर से इन बिखरी हुई घटनाओं कार्य–कारण सम्बन्ध में नियोजित कर उपन्यास को सुव्यवस्थित कथानक रूप में ढाल देता है। उपन्यासकार जिस प्रक्रिया से इन बिखरीं हुई घटनाओं को एक सूत्र में पिरोकर काल के परिप्रेक्ष्य में सुसंगत बनाता है और चरित्र के साथ उनकी सार्थकता को प्रमाणित करता है और उनकी शिल्प विधि होती है। यदि कोई उपन्यासकार या कहानीकार किसी एक अनुभूति, विचार की अभिव्यक्ति अधिक विस्तार और गहनता से कर सकता है तो यह उसकी मौलिक दृष्टि का परिचायक देने योग्य है क्योंकि एक लेखक या लेखिका के दृष्टिकोण में मौलिकता की कितनी संभावनाएँ है। यह उन्हीं की कृति और उनके विचारों पर निर्भर करता है।

अमिता दुबे अपने कथा साहित्य में यह दिखाने की प्रबल चेष्टा करती हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में मानव चरित्र की क्या–क्या संभावनाएँ हो सकती हैं। इसी का दिग्दर्शन कराने के लिए कभी–कभी यथार्थ के साथ कल्पना और मिथक का प्रवेश कराती हैं। यदि इस उद्देश्य से काल्पनिक तत्वों का समावेश उपन्यास में होता है तो वह बहुत प्रभावी सिद्ध होता है। क्योंकि इनके उपन्यासों में काल्पनिकता एवं वास्तविकता की छाया और संभावनाओं का प्रतिरूप बनकर उभरती जान पड़ती है। दूसरे शब्दों में कल्पना सृष्टि में उपन्यासकार का यही उद्देश्य होता है कि वह अपने पाठकों के सामने यथार्थ नजरिये से जीवन के ऐसे रूप को चित्रित करता है जिसमें समाज के विभिन्न व्यवस्था, प्रथा, संस्कृति, सभ्यता एवं रहन–सहन आदि जीवन रूप की मार्मिकता प्रस्तुत करती हैं। संक्षेप में ऊपर किये गए विवेचना के आधार पर स्पष्ट होता है कि उपन्यासकार और कहानीकार की कहानी की विषयवस्तु कथा के सहायक वर्णन घटनाओं के विभिन्न रूप कहानी उपन्यास के दृश्य चित्रण, पात्रों के चरित्र इनका सुसंगत क्रम नियोजन, विकास क्रम आदि है। इस तरह उपन्यास तथा कहानी में अपने विचारों को अधिक प्रभावी बनाकर पाठक तक सरल तरीके से सम्प्रेषित करते हैं। कथाकार विशिष्ट रचनात्मक कौशल और पद्धति से संयोजित, सुसंगठित, सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध, विशिष्ट कलात्मकता, विषय वस्तु एवं अभिव्यंजना बिम्ब प्रतीक उपन्यास और कहानी का वस्तु शिल्प है।

अमिता दुबे जी के उपन्यासों और कहानियों के वस्तुशिल्प एवं शिल्प वैशिष्टय की खोज करने के लिए तद्नुसार इनके विषयवस्तु का शुरूआती विकास क्रम विषयवस्तु के विकास क्रम में आने वाले मोड़ विषय का समापन आदि का विश्लेषण विवेचन करते हुए कहानी तथा उपन्यासों का वस्तु शिल्प वैशिष्टय देखना औचित्यपूर्ण है।

21वीं सदी के कहानी के दौर में अमिता दुबे जैसी लेखिकाओं ने ही नये शिल्प को लेकर कथा साहित्य की शिल्प वैशिष्टय या अपने कहानी उपन्यासों में सामाजिक आधार देने का कार्य किया। वे एक नारी चेतना सम्पन्न कहानीकार हैं। उनकी समस्त उपन्यास एवं कहानियों में मानव जीवन के यथार्थ अनुभव पर आधारित हैं। अमिता दुबे की कथा में मध्य और निम्न वर्ग के स्त्री जीवन का सचरित्र वर्णन है। उन्होंनें अपने कथा साहित्य में धार्मिक, सामाजिक, स्त्री विमर्श, बालमनोविज्ञान, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं को अपनी कथा साहित्य का मुख्य विषय बनाया।

रचना की दृष्टि से अमिता दुबे जी की कहानियाँ बहुत ही सुसंगठित हैं। सुसंगठित रूप के ही कारण ही उनकी कहानियों में कहीं पर भी बनावटी रूप नहीं मिलता है। दुबे अपनी कहानियों में एकालाप पूर्ण दर्शन संस्मरण, कल्पना, मिथक आदि पद्धति को अपनाते हुए स्वाभाविकता को बनाये रखा।

‘**विडंबना**’ कहानी में जीवन के मानवीय मूल्य इतनी तीव्र गति से विखंडित हो रहें हैं, मनुष्य पर हावी होती जा रही अति महत्वाकांक्षाएँ व्यक्ति को लक्ष्य से दूर एक ऐसे सूनसान मार्ग पर छोड़ देती है जहाँ वह नितान्त अकेला रह जाता है। इस कहानी में अणिमा पात्र द्वारा महत्वाकांक्षा को दर्शाया गया है। जहाँ अणिमा की महत्वाकांक्षा दिन–ब–दिन उसे शोषित होने के लिए मजबूर कर देती है। ‘यशोदा अम्मा’ कहानी में अमिता दुबे जी की भावनात्मक रूप से लिखी गई कहानी है। सम्पूर्ण कहानी ममत्व की पराकाष्ठा से परिपूर्ण है। कहानी का प्रधान पात्र कन्हैया अपनी पुरानी यादों में खो जाता है। यशोदा अम्मा कन्हैया के घर आया का काम करती हैं परन्तु उनकी गिनती परिवार के सदस्यों में होती है। कन्हैया यशोदा अम्मा की पलकों की छाँव में पला है।

इस तरह इस कहानी में वात्सल्य की पराकाष्ठा है। **"माँ अजीब थी मेरी रोज अपने हाथों से मुझको खिलाती थी। एक निवाला हाथी का एक निवाला घोड़े का एक निवाला भालू का।"** [60]

'प्रतीक्षा' कहानी का केन्द्र बिन्दु गलत चुनाव, व्यक्ति के जीवन के समीकरण को बदल देता है। एक स्वार्थ ने अमोला के जीवन की दिशा बदल दी। इस कहानी के संवाद से पता चलता है कि व्यक्ति कितना स्वार्थी हो गया है।

"मैंने पूछा – आप बहुत प्रसन्न हैं।

वह बोले – हाँ हूँ तो क्या मुझे नहीं होना चाहिए।

तुमसे शादी मैंने इस लिए नहीं की थी कि तुम मुझे बीहड़ इलाके की छोटी–मोटी नौकरी का तोहफा दो, तुम्हें तो मैं इस लिए बिना दान–दहेज ब्याह लाया था कि मैं अमेरिका जाना चाहता हूँ और वहाँ तुम्हारा भाई है।"[61]

अमिता दुबे की कहानियों के पात्र–

क्रमांक	कहानी	मुख्य पात्र	अन्य पात्र
1	विडंबना	अणिमा	अणिमा की माँ, निशीथ
2	यशोदा अम्मा	यशोदा अम्मा	कन्हैया, बुआ जी
3	प्रतीक्षा	अमोला	मृदुल, भइया, अनिकेत
4	छलावा	अतिका	अतिका, अमितेश कृतिका
5	अधिकार	कालिन्दी	पूर्णिमा
6	माँ का कलेजा	माँ	चित्रा
7	अपनत्व	अंजलि	प्रांजल
8	आकांक्षा	आकांक्षा	आभा दीदी, तृषित
9	दर्पण	अनुराधा	असित
10	जिजीविषा	पलक	दादी, किशन चाचा, मुच्कुन्द
11	पाषाणी	माँ	मोहित, कैप्टन रोहित शर्मा

[60] भूख कहानी, जावेद अख्तर, हिन्दुस्तान, 8 मार्च

[61] प्रतीक्षा कहानी, पृ० सं० 18

अमिता दुबे की विशेषता है कि उनकी कहानियों के शिल्प सौन्दर्य की अलग से पहचान नहीं हो पाती है। शिल्प और कथ्य दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वास्तव में अमिता दुबे जी के कहानी शिल्प कथ्य में इतना शिल्प सौन्दर्य और शिल्प वैशिष्टय मिल जाता है कि उसको अलग नहीं किया जा सकता है।

कथा विन्यास की दृष्टि से अमिता दुबे जी सामाजिक, सांस्कृतिक, नारी विमर्श परंपरा की उपन्यासकार हैं। उनके सामाजिक उपन्यासों की तरह उनके उपन्यासों में यथार्थ की चादर ओढ़े पौराणिक कथा का सहारा लेती है। इनके उपन्यासों में घटनाओं की संक्रमणता विविध कथा मोड़ जिसमें रामायण की पृष्ठभूमि और बालमनोविज्ञान का समावेश आदि मिलता है। उनके उपन्यासों का कथानक व्यक्ति तक सीमित न रहकर समाज तथा सांस्कृतिक परिवेश तक पहुँचता है।

अमिता दुबे के उपन्यासों के कथानक सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित हैं। वे घटनाक्रम को बहुत ही सरलता से संयोजन करती हैं और मानव की मानसिक प्रतिक्रियाओं को मूर्त रूप देती हैं। अमिता दुबे के '**एकान्तवासी शत्रुघ्न**' और '**उलझन**' उपन्यास का कथानक सहज, सरल, संगठित तथा क्रमबद्ध है। उनके उपन्यासों में नारी और पुरूष के सम्बन्ध विच्छेद, स्त्री का शोषण महिलाओं की पारिवारिक स्थिति, शोषण और विडंबना, टूटन और हताशा, बंधन और मुक्ति विचार और व्यवहार का मेल न खाना आदि संघर्ष का चित्रण मिलता है।

'**एकांतवासी शत्रुघ्न**' उपन्यास के माध्यम से पारिवारिक सम्बन्धों का मार्मिक चित्रण किया गया है जिसका उदाहरण निम्न है–

"सजग प्रहरी शत्रुघ्न रात भर जागकर इसकी सुरक्षा कर रहा है। रिपूसूदन तुम्हारा योगदान महत्वपूर्ण है।"
"चारों भाइयों में शत्रुघ्न का त्याग वास्तव में महत्वपूर्ण था।"
"इसलिए कि श्री राम तो पिता के वचन का पालन करने के लिए वनवासी बने थे लक्ष्मण राम के अनुगामी थे इसलिए वन में थे। भरत अपनी माता कैकेयी के कुकृत्य का समाहार करने के लिए नंदीग्राम में थे परन्तु शत्रुघ्न को तो राजमहल का सुख प्राप्त था। वे न तो किसी वचन से बंधे थे, न किसी के अनुगामी थे, न ही उन्हें अपनी माता के कुकृत्यों के लिीए

पश्चाताप करना था वे राजभवन में राजसी वस्त्रों में भी वीतरागी की भाँति जीवन जी रहे थे।"[62]

"जानते हो अतुल्य! श्री राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न उस कुल की सन्तान थे जहाँ पिता की आज्ञा, माता की सेवा, प्रजा का पालन सिखाना नहीं पड़ता, संस्कारों में सम्मिलित होता है। "

"विवशता यह है कि मैं अपनी मनोदशा किसी से प्रकट भी नहीं कर सकता। कोई मुझे कैसे समझेगा। सब प्रकार के सुख–साधन में कोई एकान्तवास कैसे कर सकता है यह मुझसे पूछो।"[63]

"अनुज शुत्रघ्न की प्रशंसा महामुनि अगस्तय से सुनकर लक्ष्मण को बहुत अधिक प्रसन्नता हुई राम ने भी सन्तोष का अनुभव किया। यह शत्रुघ्न–राज्य की सफलता थी जहाँ ऋषि–मुनि भी उनकी प्रशंसा कर रहे थे। शत्रुघ्न की कार्य कुशलता की प्रशंसा भेंट होने पर ऋषि च्यवन ने अत्यधिक की। उन्होंने राम को बताया कि किस प्रकार युक्तिसंगत ढंग से शत्रुघ्न ने लवणासुर का वध किया और उसके कारागार से अनेकानेक ऋषि–मुनियों को मुक्त कर उन्हें यथेष्ट मान–सम्मान दिया। मैं तुमसे बहुत अधिक प्रसन्न हूँ राम! तुमने एक सुयोग्य शासक मधुपुरी को देकर हमारे और वहाँ की प्रजा जन पर अत्यधिक उपकार किया है।"[64]

अमिता दुबे के उपन्यास पात्र–

क्रमांक	उपन्यास का नाम	मुख्य पात्र	अन्य पात्र
1.	उलझन	अंशिका, सौमित्र	अंशिका की माँ, सौमित्र की माँ, अंशिका की(नानी, मामी, मामा), सौमित्र की(दादी, चाची, चाचा)।
2.	एकांतवासी शत्रुघ्न	दादी सुगंधा	अतुल्य, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुमित्रा, कैकेयी, कौशल्या, श्रुतिकीर्ति, सीता, माण्डवी, उर्मिला

[62] एकांतवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 45–46
[63] एकांतवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 105
[64] एकांतवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 100

अमिता दुबे ने 'उलझन' उपन्यास में बाल मनोविज्ञान और पारिवारिक सम्बन्ध विच्छेद को दर्शाया है तथा इन बातों का खास ध्यान रखा है कि उपन्यास की मुख्य नारी पात्र अंशिका और पुरूष पात्र सौमित्र के मानसिक स्थिति के आधार पर उपन्यास का बिम्ब प्रस्तुत किया है।

"मम्मी को अंशिका का बर्थ डे याद है लेकिन उन्हें सैलीब्रेट करने की फुर्सत नहीं है। आज उन्हें वकील के पास जाना है। दोपहर तक आने की बात कहकर वह साढ़े नौ बजे चली जाती हैं। तभी फोन की घण्टी बजती है मामी फोन उठाती हैं और कहती हैं कि सोमू की मम्मी उसे बुला रही हैं। नहा–धोकर अंशिका सौमित्र के घर जाने का मन बनाती है। उसने कौन सी ड्रेस पहनी है या वह क्या पहनेगी इसकी चिन्ता किसी को नहीं है। वह भी बेमन से पिछली वर्षगांठ पर पापा द्वारा दिलवायी गयी ड्रेस पहनकर बिना नाश्ता किये मामी को बताकर ऊपर सौमित्र के घर जाती है।"[65]

"दादी का मानना है कि इस प्रकार से लड़कियों को छूट देना उनकी जिद्द पूरी करना किसी प्रकार ठीक नहीं। उन्होंने यह बात जब सौमित्र के पापा को बतायी तो उन्होंने कहा– 'अगर कलिका जाना चाहती है और उसकी टीचर्स एलाऊ करती हैं तो दीदी को उसे जाने देना चाहिए। जीजाजी के पास पैसों की कमी तो है नहीं वैसे भी स्कूल वाले एक अकेली बच्ची को तो भेजेंगे नहीं पूरा ग्रुप जा रहा होगा। मैं बात करूँगा जीजा जी से। केवल लड़की है इसलिए ऐसा मत करो मैं नहीं मानता। उसकी क्षमता, रूचि और सम्भावनाएँ देखकर निर्णय किया जाना चाहिए।' दादी ने तर्क दिया– इस तरह तो वह बिगड़ जायेगी कल चाँद माँगेगी तो चाँद लाकर देना पड़ेगा। नहीं दादी माँ, कलिका दीदी बुद्धू थोड़े ही हैं जो चाँद माँग लेंगी। हो सकता है कि वे चाँद पर जाने वाली अन्तरिक्ष यात्री बन जायें। सौमित्र ने भी बहस में भाग लिया।" [66]

कथा साहित्य के अन्य शिल्प तत्वों का सामान्य उद्देश्य शिल्प भी महत्वपूर्ण तत्व है। सामान्यतः कथा साहित्य में उद्देश्य किसी भी प्रकार का हो किन्तु उसका कथा में होना अनिवार्य तत्व होता है। शिल्प से ही

---

[65] उलझन, पृ० सं० 31

[66] उलझन, पृ० सं० 39

रचना का मूलभूत स्वरूप को जाना जा सकता है। कोई भी रचनाकार अपनी कृति का सृजन किसी न किसी उद्‌देश्य को लेकर करता है लेकिन शिल्प विधान एवं शिल्प वैशिष्टय उस सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेखिका के उद्‌देश्य का प्रतिफलन उनके उपन्यास कहानी में सभी प्रमुख तत्वों, कथानक, पात्र और चरित्र–चित्रण, देशकाल या वातावरण भाषा–शैली उद्‌देश्य आदि के माध्यम से होता है।

5.2 बिंब, प्रतीक की विविधता एवं विविध आयाम–

कहानी और उपन्यास गद्य साहित्य का माध्यम है इसी लिए इसकी भाषा में सैद्धान्तिक रूप से उन गुणों के समावेश पर बल नहीं दिया जाता, जिनपर पद्य रूपी माध्यम से दर्शाया जाता है परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से कहानी की भाषा में भी और उपन्यास के भाषा में भी प्रवाहात्मकता, भावात्मकता, अंलकारिकता, चित्रात्मकता आदि बहुत से गुण विद्यमान होते हैं। काव्य की भाँति एवं कहानी में विभिन्न प्रसंगों के अनुसार कोमल अनुभूतियों, मधुर भावनाओं एवं विशुद्ध सौन्दर्य के मानवीय तथा प्राकृतिक चित्रण भाषा बद्ध किये जाते हैं। इन सभी पहलुओं में बिम्ब का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए कहानी एवं उपन्यास की भाषा के साथ–साथ प्रतीक, बिम्ब आदि की विशेषताएँ समाविष्ट हो जाती हैं।

प्रतीकात्मकता–

उपन्यास और कहानी की भाषा का एक गुण प्रतीकात्मकता भी है। यह गुण स्वातन्त्र्योत्तर युगीन एवं समकालीन कहानी उपन्यास की भाषा में अपेक्षाकृत अधिकता से समाविष्ट हुआ है। समाकालीन दौर में उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में बौद्धिकता की प्रवृत्ति के विकास के साथ ही उसकी भाषा प्रतीकात्मकता भी निहित है। डॉ० अमिता दुबे की कहानियाँ और उपन्यास प्रतीकात्मकता से भरी हुई यथार्थवादी हैं।

उपन्यास **'एकान्तवासी शत्रुघ्न'** और '**उलझन**' में प्रतीक को निम्न उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं।– **"दीपकों की दीप्ति का अकम्पित होना उर्मिला के विश्वास को दृढ़ कर रहा था कि लक्ष्मण सुरक्षित हैं। माता कौशल्या की ममता प्रतीक्षा की इन घड़ियों को पल–छिन अपने आशीर्वाद से अभिसिंचित कर रही थी इसलिए राम को तो विजयी होकर आना ही**

था। फिर वे चाहे परमपिता परमात्मा के अवतार न भी होते तो भी जिनके साथ माता व गुरूजनों का आशीर्वाद होता है, भाई, मित्र की शुभकामनाएँ होती हैं, सत्य पर दृढ़विश्वास होता है ऐसे व्यक्ति जीवन की प्रत्येक बाधा को पार कर लेते हैं और निरन्तर आगे बढ़ते हुए स्वयं तो सफलता के सोपान चढ़ते ही हैं अपने परिवेश को भी गौरवान्वित करते हैं। गौरव के ये क्षण श्री राम के साथ—साथ लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का भी अंश थे।"[67]

अमिता दुबे का यह उपन्यास रामचरितमानस को प्रतीक मानकर ही लिखा गया है। जिसमें अमिता दुबे ने पौराणिक कथा के माध्यम से समकालीन जीवन के द्वन्द्व को अपने शब्दों के माध्यम से उद्‌घाटित किया गया है कि मनुष्य अपने जीवन में आने वाले कष्टों को भुलाकर जीवन को किस प्रकार से सुखमय बनाते हैं। अतः यहाँ पर अमिता दुबे ने संध्या, रात्रि, सूर्य, चन्द्रमा, अंधकार, प्रकाश आदि शब्दों को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है।

इसी तरह अमिता दुबे ने '**उलझन**' उपन्यास में— **"ज्यादातर लोग यह सोचते हैं कि हिन्दी पिछड़ी हुई भाषा है या उसे पढ़ने वाले आगे नहीं बढ़ सकते हैं लेकिन ऐसा है नहीं किसी विषय को पढ़ने का माध्यम कोई भी भाषा हो सकती है लेकिन व्यावहारिक उपयोग में तो वही भाषा हमारा साथ देती है जिसे अधिक से अधिक लोग बोलते या समझते हों। मान लो तुम अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई कर डॉक्टर या इंजीनियर बन जाते हो। गोल्ड मैडलिस्ट हो तुम्हारा ज्ञान परफेक्ट है लेकिन सोचो, डॉक्टर बनकर तो तुम्हें मरीजों के सम्पर्क में ही रहना होगा। हिन्दी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है न। इसी तरह इंजीनियर, बैंक कर्मी, यहाँ तक कि प्रशासनिक सेवा वाले आई०ए०एस० या पी०सी०एस० अधिकारियों को भी आम जनता के बीच जाना होता है उनकी समस्याओं को समझना होता है। तब हमारी पढ़ाई की माध्यम बनी भाषा काम नहीं आती। जन—जन की भाषा को ही अपनाना पड़ता है।"**[68]

अतः इस उपन्यास में अमिता दुबे ने भाषा का हमारे जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को उद्‌घाटित किया है। कि भाषा के माध्यम से हम जीवन में

---

[67] एकांतवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 50

[68] 'उलझन, पृ० सं० 90

किस प्रकार सामंजस्य स्थापित करते हैं। जिससे मानवीय जीवन में संतुलन बना रहे।

डॉ० अमिता दुबे की कहानियों में प्रतीकों को मानवीय जीवन से ही उद्घाटित किया गया है। इनकी हर एक कहानी संग्रह में समाज के यथार्थवादी जीवन को प्रतीकात्मकता का रूप दिया गया है। इनकी कहानी संग्रह 'पाषाणी' में इस उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं– **"मेरी सन्तान को हिफाजत से पालना, हो सकता है इसे अकेले ही तुम्हें पालना हो। मैं तो देश की अमानत हूँ। कभी देश को मेरी भारतमाता को मेरी जरूरत हुई तो मैं अपने प्राण न्योछावर करने से हिचकूँगा नहीं। तुम अपने को पाषाणी बना लेना। अगर मैं न रहूँ तो मेरी सन्तान भी तुम्हारे पास देश की अमानत होगी। उसकी परवरिश में अपनी ममता को आड़े मत आने देना। हो सकता है वह भी तुम्हारे जिन्दा रहते शहीद हो जाय तो गम मत करना। देश का सम्मान उसकी सुरक्षा सबसे ऊपर है। हम तुम क्या हैं? भगवान बहुत कम लोगों को ऐसा सौभाग्य देता है।"**[69]

अतः इस कहानी के माध्यम से अमिता दुबे ने देश की सेवा को हर सेवा से सर्वोपरि बताया है। जिस प्रकार देश की सेवा में लगे रहने वाले लोग अपने जान की भी परवाह नहीं करते है और यह सेवा वह निःस्वार्थ भाव से करते हैं। जिससे देश में रहने वाले लोग हँसी–खुशी अपना जीवन बिता सके। देश को नित नई ऊँचाईयों पर ले जा सके। अमिता दुबे ने इस कहानी 'पाषाणी' के माध्यम से त्याग, निःस्वार्थ भाव की अद्भुत चित्रण किया है।

सामान्य रूप से कहानी, उपन्यास की कथावस्तु का प्रस्तुतीकरण किसी भी शैली में किया जा सकता है। सभी शैलियों की अपनी पृथक सीमाएँ एवं विशेषताएँ हैं जो कहानी, उपन्यास में अभिव्यंजित होती हैं। इसी में एक शैली प्रतीकात्मकता भी है जो उपन्यास और कहानी को एक कसौटी में ढालता है। कहानी, उपन्यास में जो शैलियाँ आरंभ से वर्तमान काल तक विकसित होती रहीं हैं वे एक ओर अपने सैद्धान्तिक स्वरूप की परिपक्वता का द्योतन करती हैं तथा दूसरी ओर उनसे कहानी, उपन्यास

---

[69] पाषाणी कहानी, पृ० सं० 75

के प्रतीकात्मक परिष्कार का परिचय भी मिलता है। इन सभी विशेषताओं को डॉ० अमिता दुबे के कथा साहित्य में देखा जा सकता है

बिम्बात्मकता–

जब लेखिका की कल्पना मूर्त स्वरूप धारण करती है तब बिम्ब का सृजन होता है। आज के इक्कीसवीं सदी के युग में साहित्य में अलंकार की अपेक्षा बिम्ब का बहुतायत में प्रयोग होने लगा है। **"वास्तव में बिम्ब अपनी सांकेतिक शैली में भाषा को केन्द्रित करता है। शब्द की अपेक्षा बिम्ब अधिक सन्दर्भ सापेक्ष होता है क्योंकि वह यथार्थ का एक सार्थक टुकड़ा है। उसका आधार कोशागत शब्द नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण विस्तृत जीवन और इतिहास होता है।"**[70]

साहित्य में बिम्ब अनेक प्रकार के होते हैं जैसे कि दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, स्वाद, कथा, शैली इत्यादि। इन सभी बिम्बों का प्रयोग अमिता दुबे ने बड़ी सहज, सरल, सूझ–बूझ एवं मार्मिकता के साथ अपने कथा साहित्य में रोचकपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। बिम्ब के यही महत्वपूर्णता को विचार में रखते हुए अमिता दुबे ने अपने उपन्यासों में बिम्ब का प्रयोग अभिनव ढंग से किया है। "**अतीत के पृष्ठ पलटते–पलटते संध्या से रात्रि हो गयी। भरत! जीवन यूँ ही नहीं बीत जाता है। प्रातः सूर्योदय के साथ दिन प्रारम्भ होता है, प्रचण्ड उजास के बाद धीरे–धीरे संध्या का आगमन और फिर घोर अंधकार। यही तो जीवन का क्रम है परन्तु कभी–कभी प्रचण्ड उजास में गर्माहट होती है ताप रहता है और घोर अंधकार में चन्द्रमा की ज्योत्सना प्रकाशित होती है। अंधकार और प्रकाश क्रमशः आते और जाते रहते हैं।"**[71]

यहाँ ऊपर दिये गए कथोपकथन में एकांतवासी शत्रुघ्न उपन्यास में अमिता दुबे ने दृश्य बिम्ब की योजना की है।

अमिता दुबे ने अपने कहानियों में भी बिम्बात्मकता का प्रयोग बखूबी ढंग से किया है। **"माँ आज दादी इस दुनिया में नहीं हैं। उनको गये एक जमाना बीत चुका है। अब तुम परिवार की मुखिया हो क्योंकि पापा भी**

---

[70] केदारनाथ सिंह, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान, पृ० सं० 28

[71] एकांतवासी शत्रुघ्न, पृ० सं० 102–103

इस दुनिया में नहीं हैं फिर तुम दादी और पापा की तरह निर्मम कैसे हो सकती हो। जो दंश जो दुःख तुमने सहे वही दंश तुम अपनी बहू को देने जा रही हो। तुम उससे अपेक्षा करती हो कि वह 'टेस्ट' करवाये और यदि कोख में बेटी हो तो उसे नष्ट कर दे। आज तुम कह रही हो–'कानूनी–गैर कानूनी क्या होता है पैसा खर्च करो तो सब कुछ हो जाता है।' मैं आज अचरज से यह सब तुम्हारे मुख से सुन रही हूँ। माँ! सुनो और कान खोल कर सुनो! जो तुम्हारे साथ हुआ उसको मत दोहराओ। तुम भूल गयीं उस दर्द को जिसे हमने अन्दर–अन्दर पिया है पिघले शीशे की तरह। तुम भूल गयीं कैसे तुम कोख को दबाकर रोया करती थीं भगवान के आगे–हाय! हत्यारी माँ! को क्षमा करना जिसने अपनी कोख में ही बेटियों को मार डाला। भगवान! इस पाप की सजा मुझे न देना। बस एक बेटा दे दो फिर मैं कुछ नहीं माँगूंगी।"[72]

इस कहानी के माध्यम से अमिता दुबे ने समाज के नग्न यथार्थ को इस कहानी के माध्यम से उद्घाटित करने का प्रयास किया है। समाज में किस प्रकार बेटियों के प्रति तुच्छ मानसिकता व्याप्त है इसे अमिता दुबे ने अपनी लेखनी के माध्यम से स्पष्ट किया है।

इस प्रकार अमिता दुबे के उपन्यास तथा कहानियों में बिम्ब का प्रयोग हुआ है। सबकुछ मिलाकर कहा जा सकता है कि रचनाधर्मी लेखिका अमिता दुबे के कथा साहित्य में अनुभूति की प्रमाणिकता के कारण ही उनकी अभिव्यक्ति में अपनापन मिलता है। उनके कथा साहित्य में कथा शिल्प उनकी विचार की दृष्टि के अनुसार ही व्याख्यात्मक हुआ है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में अनेक प्रकार के शिल्पों का प्रयोग किया है। वे समाज के अन्दर और बाहर खामोशी को, शोर की आधुनिक पुरूष–स्त्री की मनःस्थिति को शिल्प, बिम्ब विधान से सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। वे भाषा का प्रयोग शब्द चयन की इतनी जागरूक हैं कि भाव के साथ संवेदना के स्तर पर अपने भाषा को नया संस्कार रूपी विचार प्रदान करती हैं। उन्होंने ग्रामीण और महानगरीय परिवेश में जीते व्यक्ति, स्त्री विमर्श एवं उसके तनाव को संघर्षपूर्ण मानसिकता को उसी की भाषा में चित्रित किया है। इस रूप में अमिता दुबे जी की स्थिति को उभारने के लिए भाषा

---

[72] आवाज कहानी, पृ० सं० 21

की कठिनाई महसूस नहीं होती है। उनकी भाषिक विविधता उन्हें हिन्दी साहित्य के कथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान कराती है। उनकी भाषा कथानक परिवेश और पात्रों के अनुरूप होने के कारण उसमें सहजता, सरलता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहत्मकता, प्रभावोत्मकता, बिम्बात्मकता, भावशीलता, संवेदनशीलता आदि दृष्टिगोचर होती है। समसामयिक समस्याओं की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने सहज, सीधी, सरल एवं व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है।

अंत में कहा जा सकता है कि लेखिका की भाषा में सरलता होने के कारण वह अर्थ को स्पष्ट करने में सक्षम हैं। अत्यंत सहज संप्रेषणीय कथोपकथन, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग उन्होंने कथा साहित्य में किया है। वह अपने कथ्य के विविधता के साथ ही भाषा और शैली की विविधता भी उनके कथा साहित्य में दिखाई देती है। भाषा–शैली एवं शिल्प की दृष्टि से अमिता दुबे जी अपने कथा साहित्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य में अमिट छाप छोड़ती हैं।

उपसंहार

उपसंहार

अमिता दुबे का साहित्य सृजन उनके स्वयं के अनुभव का प्रमाणिक दस्तावेज है। जिस स्थिति को अपनी आँखों से देखा–परखा–भोगा उन्हीं को अपने कथा साहित्य में मूल्यांकित करने का सीधा सा प्रयास किया है। एक भोले–सच्चे–सीधे और समर्थ साहित्यकार की भाँति कथा के अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। अमिता जी ने अपने समय और परिवेश की मांग के अनुरूप ही समाज के नजरिए से कथा साहित्य का दायित्व निभाया है। 21वीं सदी के परिवर्तित स्वरूपों तथा उसकी चेतना को ईमानदारी और सच्चाई के साथ मुखर आवाज देने में सक्षम प्रतीत होती हैं।

अमिता दुबे का कथा साहित्य एक विवेचन लघु शोध प्रबन्ध में किए गए विवेचन और विश्लेषण के आधार पर व्याख्यायित रूप में यह कहा जा सकता है कि डॉ० अमिता दुबे साहित्यिक परिवेश में पली–बढ़ी थी, जिसके प्रभाव से अमिता दुबे ने बाल्यावस्था से ही लेखन कार्य आरम्भ कर दिया था। अमिता दुबे एक युवा कथाकार हैं उनकी 'कितने अजनबी' तथा 'अस्तित्व' पुरस्कृत कहानियाँ हैं। इसके साथ ही इन्होंने पाषाणी, नयनदीप, सिलवटें, पुनर्वास, सुखमनी , सीढ़ी, धनुक के रंग, संभावना के जुगनू आदि कहानी संग्रहों की रचना की है। इनके दो उपन्यास 'उलझन' तथा 'एकांतवासी शत्रुघ्न' हैं। अमिता दुबे की प्रतिभा यहीं तक नहीं रूकती है इन्होंने बाल साहित्य, काव्य संग्रह, समीक्षा, समालोचना आदि को अपने लेखन का विषय बनाया है।

अमिता दुबे जी के कथा साहित्य में स्त्रियों के दुःख, दर्द, बालमन, का विक्षोभ, समाज, भारतीय संस्कृति के रहन–सहन, पारिवारिक विघटन, समाज का खींचातान, स्त्री शोषण आदि का मार्मिक चित्रण हुआ है। अमिता दुबे जी ने 'आक्रोश के कवि मुक्तिबोध' एवं 'अनुभूति के विविध रंग नामक आलेख में इनके कथा साहित्य का चरम उत्कर्ष दिखाई देता है। 'उलझन' उपन्यास का प्रमुख विषय बाल मनोविज्ञान और पारिवारिक विघटन की स्थिति को दर्शाते हुए उनकी वेदना को उद्घाटित किया है। अमिता दुबे जी लखनऊ में रहती हैं। इसलिए इनके कथा साहित्य का केन्द्र लखनऊ के इर्द–गिर्द पाया जाता है लेकिन एक पाठक जब इनके

कथा साहित्य का विवेचन करता है तो उसे लखनऊ भर की कहानी नहीं पूरे भारतवर्ष की कहानी लगती है। 'उलझन' उपन्यास में बाल मनोविज्ञान का परिवेश एवं उसकी परिस्थितियों का मुखरित रूप दिखाई देता है। कथा साहित्य में विषय विविधता अमिता दुबे जी के साहित्य सृजन की विशेषता है। इनके दो उपन्यास, आठ कहानी संग्रह, दो बाल कहानी संग्रह, तीन काव्य संग्रह, पाँच समीक्षाएँ और बहुत सारी समालोचना उनकी गहन अध्ययन चिंतन एवं विचार मनन के सृजन के साक्षी रहें हैं।

अमिता दुबे ने अपने पहले उपन्यास उलझन के माध्यम से समाज में सम्बन्ध विच्छेद के कारण बच्चो पर होने वाले मनोवैज्ञानिक दबाव को दर्शाया है। इसी तरह इन्होंने अपने दूसरे 'एकांतवासी शत्रुघ्न' उपन्यास में एकांतवासी शत्रुघ्न के बहाने समस्त मानव जाति के रहन–सहन, सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों में मधुरता, प्रेमभाव–सौहार्द की सरलता को दर्शाती हैं। इसके अन्तर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक जीवन का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

लेखिका की लगभग 65 कहानियाँ उनके समाज सापेक्षता का प्रमाण है। इसमें पारिवारिक एवं सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक के साथ–साथ स्त्री अस्मिता आदि प्रश्नों एवं समस्याओं का चित्रण किया गया है। उनके पूरे कथा साहित्य में पारिवारिक सन्दर्भों के अनुरूप उनमें सम्बन्ध के साथ सामाजिकता से संपृक्त हैं। उनका कथा साहित्य अनुभव, अनुभूति और सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए प्रमाणिक अभिव्यक्ति देता हैं।

साहित्य समाज के दर्पण के साथ–साथ दीप स्तम्भ भी होता है जो एक व्यक्ति को उसके भटके समाज का कथा साहित्य, समाज को एवं समाज साहित्य को लेखक के कलम से प्रभावित होता है। अमिता दुबे का कथा साहित्य में सामाजिक जागरूकता का एवं सांस्कृतिक जागरूकता का प्रभाव उनके साहित्य से सिद्ध होता है। इनके साहित्य में पारिवारिक सामाजिक व्यवस्था का एक प्रमुख एवं अभिन्न अंग है। परिवार में माता–पिता, दादा–दादी, चाचा–चाची, बहन–भाई, पुत्र–पुत्री एवं बहुत सारे रिश्तों का समावेश होता है। सफल पारिवारिक जीवन की पहली शर्त स्त्री के विकास से होता है और परिवार में स्त्री–पुरूष सम्बन्ध के समन्वय एवं सामंजस्य दिखाई देता है। इसी दृष्टिकोण के अन्तर्गत अमिता दुबे के

कथा साहित्य में दृष्टिगत होता है। वर्तमान युग में उच्च शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय हेतु परिवार के सदस्यों का मुख्य ध्येय हो गया है। इसीलिए स्त्री शोषण और उसकी अस्मिता का प्रश्न इनके कथा साहित्य में देखने को मिलता है।

अमिता दुबे ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के दयनीय चित्र को प्रस्तुत किया है। इनके 'उलझन' एवं 'एकांतवासी शत्रुघ्न' दोनों उपन्यासों में स्त्रियों की व्यक्तिगत सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्धों के समस्याओं को चित्रित करती हैं।

अमिता दुबे की भाषा अत्यन्त सरल, सहज, सशक्त है जो पाठक आसानी से समझ सकता है और उन पर विचार कर सकता है यद्यपि उनकी मातृभाषा अवधी है परन्तु उनके लिए हिन्दी में विचार व्यक्त करना और भी सरल है। उनके कथा साहित्य में भाषा सरल और सहज होने से चरित्र पात्र, नगर, महानगर अथवा गाँव के सभी वर्ग एवं समाज आ जाते हैं। उनके कथा साहित्य के पात्र बेहतरीन ढंग से अपने जीवन की समस्याओं, भावनाओं को सीधे–साधे ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। अमिता दुबे ने व्यंग्य, मानसिक, सामाजिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, अंधविश्वास, संकुचित भावना, स्त्रियों का शोषण, गरीबों का दोहन, बाल मनोविज्ञान का सपाट बयान आदि कुरीतियों पर करारा प्रहार करती हैं।

अमिता दुबे जी ने अपने कथा साहित्य में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है– वर्णनात्मक, बालमनोविज्ञान, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, आत्म कथात्मक शैलियों का विशेष रूप से प्रयोग किया है। अमिता दुबे की भाषा का मुख्य आकर्षण का केन्द्र अलंकारिक एवं वर्णनात्मक शैली रही है।

अमिता दुबे जी ने अपने उपन्यासों, कहानियों तथा बाल कहानियों में मानवजीवन से सम्बन्धित समाज के हर एक वर्ग से पात्रों को लेकर जनमानस तक तथा उनके माध्यम से बहुत सारी समस्याओं को संसार के सामने पहुँचाने का प्रयास किया है। अमिता दुबे एक ऐसी लेखिका हैं जिन्होंने प्रत्येक सामाजिक आयामों पर चिंतनात्मक सृजन किया है। उन्होंने अपने अनुभवों को सम्प्रेषित करने की कला उनकी विशेषता का ही प्रमाण

है। जब हम उनके कथा साहित्य को पढ़ते हैं तो यह सारी विशेषताएँ खुद–ब–खुद एक पाठक के रूप में महसूस होने लगती है।

डॉ० अमिता दुबे के कथा साहित्य का विश्लेषण, विवेचन और व्याख्यात्मक अध्ययन करने का मैंने भरपूर प्रयत्न किया है। जिससे यह प्रतीत होता है कि इनका साहित्य हिन्दी साहित्य में एक अलग मनोवृत्ति स्थापित करता है जिससे यह सिद्ध होता है कि अमिता दुबे हिन्दी साहित्य की एक सशक्त महिला लेखिका हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

सन्दर्भ ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ

1. डॉ० अमिता दुबे पाषाणी(कहानी संग्रह), अविरल प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2000
2. डॉ० अमिता दुबे, समर्पण(कहानी संग्रह), अविरल प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2006
3. डॉ० अमिता दुबे, सिलवटें(कहानी संग्रह), अविरल प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2010
4. डॉ० अमिता दुबे, पुनर्वास(कहानी संग्रह), साहित्य भण्डार, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2014
5. डॉ० अमिता दुबे, उलझन(उपन्यास), राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
6. डॉ० अमिता दुबे, सुखमनी(उपन्यास), विभा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2017
7. डॉ० अमिता दुबे, सीढ़ी(कहानी संग्रह), विभा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2018
8. डॉ० अमिता दुबे, राह मिल गयी(कहानी संग्रह), राजेश पुस्तक केन्द्र, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019
9. डॉ० अमिता दुबे, धनुक के रंग(कहानी संग्रह), नमन प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2020
10. डॉ० अमिता दुबे, एकांतवासी शत्रुघ्न(उपन्यास), बोधि प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2021
11. डॉ० अमिता दुबे, संभावना के जुगनू(कहानी संग्रह), के० एल० पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण, 2021

सहायक ग्रन्थ–

1. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010
2. गणपतिचन्द्र गुप्त,हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010
3. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2011

4. डॉ० नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, संस्करण 2007
5. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010
7. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी गद्य का साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011
8. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012
9. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010

पत्र–पत्रिकाएँ–

1. शोध समीक्षा, संपादक डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव, अंक 1 अप्रैल 2021
2. सेतु पत्रिका, सं० अनुराग शर्मा, अंक अगस्त 2020

वेबसाइट लिंक–

1. https://fb.watch/b6tiQBOL6x/
2. www.shodhganga.com
3. https://youtu.be/1Nh4Uaw39co

परिशिष्ट

Ouriginal

Document Information

Analyzed document	gaurav thesis.pdf (D124573703)
Submitted	2022-01-11T12:28:00.0000000
Submitted by	O. P. Saini
Submitter email	gbl.bbau@gmail.com
Similarity	0%
Analysis address	gbl.bbau.bbau@analysis.urkund.com

Sources included in the report

W	URL: https://www.shodhjournal.com/article/view/27/1-2-33 Fetched: 2022-01-11T12:29:06.4300000	1

ISSN-2249-1597
वर्ष 12, अंक-1, अप्रैल 2021
पृ.सं-69-72

अमिता दुबे की कहानियों में स्त्री चेतना

गौरव कुमार

शोधार्थी- एम.फिल. हिन्दी विभाग, बी.बी.ए.यू. लखनऊ

डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव

सहायक आचार्य हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ

'कहानी' वह गद्य-रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंश या भाव का चित्रण किया जाता है। 'कहानी' मानव जीवन का खण्ड-चित्र है। कहानी में मानव-जीवन के किसी विशेष पहलू या उसके किसी विशेष आन्तरिक भाव का चित्रण किया जाता है। रोचकता एवं कलात्मकता कहानी में आवश्यक तत्व हैं। कहानी का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं है बल्कि यह मनुष्य में छिपी आन्तरिक व्यथा, अनुभूति आदि को उद्घाटित करके पाठक की चेतना पर मर्मस्पर्शी चोट करती है। उत्कृष्ट कहानी वही है, जो अपने सजीव चित्र एवं कथ्य से पाठक के मन-मस्तिष्क को भाव विभोर कर दे। कहानी की अनेक शैलियाँ हैं। इसमें प्रतीकात्मक, दृश्यात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक या संस्मरणात्मक आदि शैलियाँ प्रमुख हैं। हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास में बांग्ला साहित्य का विशेष योगदान रहा है। हिन्दी कहानी, हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है। हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री-विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की शृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है। प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखा है। हिन्दी साहित्य में कहानी विधा की एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं डॉ. अमिता दुबे। जिनकी अधिकांश कहानियाँ स्त्री की सामाजिक विसंगतियों की कहानियाँ हैं। अमिता दुबे एक वरिष्ठ कथाकार हैं जिनके लगभग कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कहानियों से गुजरते हुए साहित्य में हमें समाज के सीधे सरोकार दिखाई देते हैं ऐसी साहित्य रचना गहन अनुभव और समाज से गहरे जुड़ाव के बिना संभव नहीं। यदि हम पिछले दो दशक के हिन्दी साहित्य को खँगालते हैं तो महिला कथाकारों की लंबी शृँखला में अमिता दुबे का अपना अलग महत्वपूर्ण स्थान है। सीधे सीधे कहूँ तो स्त्री जीवन की चित्रकार हैं, उनकी कहानियाँ स्त्री जीवन का अद्भुत कोलाज प्रस्तुत करती हैं। डॉ. अमिता दुबे आधुनिक युग की प्रतिष्ठित कहानीकार हैं। डॉ. अमिता की कहानियाँ जो आस-पास के वातावरण से निःसृत हैं जो जीवन के यथार्थ को वाणी प्रदान करतीं हैं। इनके पात्र जीवन का हिस्सा भी हैं और कल्पना की उड़ान में पड़ने वाले पड़ाव भी। इन पात्रों के साथ न्याय हो सके इस दिशा में अमिता जी पूर्ण सजग हैं। उन्होंने समाज की सुदृढ़ता प्रदान करने वाली परम्पराओं को आज के परिवेश में सन्दर्भित करते हुए नवीन जीवन दषष्टि की स्थापना का स्तुत्य प्रयत्न किया है। इनकी कहानियाँ कहानी-कला की कसौटी पर सर्वथा खरी उतरी हैं। आधुनिक युग में मानवीय मूल्य इतनी तीव्र गति से विखण्डित हो रहें हैं कि मनुष्य की महत्वाकांक्षाएं उस पर हावी होती जा रही हैं। अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए वह किस मार्ग का अनुसरण कर रहा है उसे यह भी ज्ञात नहीं कि यह उसके लिए सही है या गलत। अति महत्वाकांक्षाएं व्यक्ति को लक्ष्य से दूर एक ऐसे सूनसान मार्ग पर छोड़ देती है जहाँ वह नितान्त अकेला रह जाता है। अणिमा की महत्वकांक्षाओं ने उसे सबसे दूर कर दिया। जहाँ वह दिन-ब-दिन शोषित होती रही और वह कुछ न कर सकी। यह

कहानी 'विडंबना' जो कि 'पाषाणी' कहानी संग्रह में संकलित है। अमिता दुबे की यह कहानी छोटे शहर की एक अति महत्वाकांक्षी लड़की की कहानी है जो अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में गलत संगति में पड़ जाती है। इन सब में वो इतना फँस चुकी होती है। जिससे निकलना उसके लिए असम्भव हो जाता है। अपनी समस्याओं को अपने परिवार से बताने में असमर्थ अणिमा अपने परिवार से दिनों-दिन इतनी दूर हो जाती है कि उसका परिवार उसकी समस्या का आभास भी नहीं कर पाते। इस कहानी में अणिमा के अलावा एक निशीथ नामक पात्र भी है जो मुसीबत में अणिमा की सहायता करता है। एक मात्र निशीथ से ही वह अपनी समस्या को बता पायी थी और वह उसकी मद्द भी करता है परन्तु उसका छलावा रूप निशीथ को भी उससे दूर कर देता है। अंततः अणिमा नितान्त अकेली असहाय अपनी मुक्ति का मार्ग स्वंय ढूँढ़ लेती है और आत्महत्या कर लेती है। 'विडंबना' कहानी में संवाद संक्षिप्त पात्रानुकूल एवं घटनाक्रम पर प्रकाश डालने वाले हैं और कथा को गति प्रदान करने वाले हैं। संवाद शहरी जीवन के खुलेपन को दर्शाते हैं। जैसे-

विनय- जानते हो अणिमा ने आत्महत्या कर ली है।

निशीथ- "आत्महत्या" निशीथ जड़ हो गया।[1]

इस कहानी के प्रधान पात्र अणिमा और निशीथ है और गौण पात्र माता-पिता, विनय है। सम्पूर्ण कथा मुख्य पात्र के आस-पास घूमती है। यह कहानी मानवीय मूल्यों के ह्रास को दर्शाती है। अणिमा एक अति महत्वाकांक्षी लड़की है। कहानी में पात्रों का चरित्र-चित्रण बड़ा ही यथार्थ सजीव और स्वाभाविक है। 'अणिमा' की विडम्बना को उजागर करने में लेखिका को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। यह कहानी आधुनिक युग के घिनौने चेहरे को दर्शाती है। यह कहानी वर्तमान युग की विकट समस्या आत्महत्या का चित्रण प्रस्तुत करती है। इस कहानी की भाषा बड़ी ही जीवन्त है। शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। वर्णनात्मकता और मार्मिकता शैली की विशेषता है। और यह कहानी वर्तमान समय में अणिमा जैसी कई शोषित लड़कियों को पीछे मुड़कर देखने पर विवश करती है। और शोषण के विरूद्ध लड़ने की प्रेरणा देती है। विडंबना शीर्षक सार्थक व उपयुक्त है। यह कहानी में कलेवर की भाँति हैं शीर्षक नायिका के जीवन के दुःखद अन्त को दर्शाती है। इस कहानी के मूल में छोटे शहरों की भोली-भाली लड़कियों के यौन-शोषण के कारण अपने आपको मृत्यृ के हवाले करने वाली लड़कियों की कहानी है।

'पाषाणी' कहानी संग्रह में 'यशोदा अम्मा' नामक कहानी अमिता दुबे की सार्थक कहानियों में से एक है। यह कहानी इनकी भावनात्मक कहानी है। सम्पूर्ण कहानी पराकाष्ठा से परिपूर्ण है। 'यशोदा अम्मा' एक संस्मरणात्मक कहानी है। कथानक का आरंभ यशोदा अम्मा के न रहने से प्रारम्भ होता है। कहानी का प्रधान पात्र कन्हैया के घर आया का काम करती है परन्तु उनकी गिनती परिवार के सदस्यों में ही की जाती है। कन्हैया यशोदा अम्मा की पलकों की छाँव में पला। यशोदा अम्मा कन्हैया को अपने हाथ से खाना खिलाती। इस तरह कन्हैया यशोदा अम्मा के प्यार-दुलार और घर की सम्पत्ति ने कन्हैया को उद्दण्ड बना दिया था। रात-दिन कन्हैया खेलकूद में लगा रहता था। उसका मन पढ़ाई से दूर होता गया। कन्हैया की विधवा बुआ को उसके पिताजी घर ले आए। जो निःसंतान थी और उससे अत्यधिक स्नेह करती थीं। कन्हैया की बुआ को उसका आवारा लड़कों के साथ खेलना और पतंग उड़ाना बिल्कुल पसंद नहीं था। बुआ जी ने कन्हैया को स्नेह से समझाया और कहा बेटा तुम अपना जीवन बर्बाद कर रहे हो। और सख्त हिदायत दी कि तुम खेलो-कूदो पर पतंग नहीं उड़ाओगे। कन्हैया ने बुआ जी की आज्ञा का पालन करते हुए साल भर पतंग को हाथ नहीं लगाया। इस प्रकार जहाँ कन्हैया द्वितीय श्रेणी में पास होता था वहाँ कन्हैया पूरे जिले में प्रथम आया। घर में सभी अत्यधिक खुश थे। बुआ जी ने कन्हैया को दीपावाली के समय पतंग उड़ाने की इजाजत दे दी। कन्हैया अत्यधिक खुश था परन्तु बारिश होने लगी थी। कन्हैया दुःखी हो गया। कन्हैया को दुःखी देखकर यशोदा अम्मा ने उससे दुःखी होने का कारण पूछा, कन्हैया ने कहा साल भर में दीपावली के समय ही पतंग उड़ाने की इजाजत है पर बारिश हो रही है। मैं पतंग कैसे उड़ाऊँ?। यशोदा अम्मा से अपने पुत्र की परेशानी को समझते हुए एक टोटका अपनाया जो उनके गाँव

में प्रायः होता था। बीस वर्ष के युवा की एक छोटी सी ख्वाहिश के लिए मेरी चालीस वर्षीय यशोदा अम्मा, जो कि मेरी कोई नहीं थी और सब कुछ थी, आंगन में निर्वस्त्र होकर बादल को मूसल दिखाकर भगा रही थी।[2]

यह यशोदा अम्मा के ममत्व की पराकाष्ठा थी कि पानी बन्द हो गया। "लेकिन मेरे और अम्मा के बीच बहता वह ममता का झरना जीवन भर बना रहा और आजीवन बना रहेगा।"[3] कहानी में मुख्य तीन पात्र हैं- यशोदा अम्मा, कन्हैया, बुआ जी। यशोदा अम्मा कन्हैया की धाय माँ है। यशोदा अम्मा एक ममतामयी माँ हैं जो अपने पुत्र की खुशियों के लिए लोक-लाज तक का त्याग कर देती हैं। बुआ जी बाहर से कठोर अन्दर से मृदु स्वभाव की महिला हैं। यशोदा अम्मा कहानी में पात्रों का चरित्र-चित्रण बड़ा ही यथार्थ और स्वाभाविक है। 'यशोदा अम्मा' कहानी में संवाद संक्षिप्त तथा कथा को गति प्रदान करने वाले हैं। संवाद पात्रों की मनोदशा का सफल चित्रण करते हैं। उदाहरणार्थ-

यशोदा अम्मा- देखो जी मेरे कृष्ण-कन्हैया को कोसों नहीं।

माँ कहती- देखो यशोदा रानी, तुम लाड़-प्यार करती हो तो करो लेकिन उसे बिगाड़ो तो मत। यह कहानी भारतीय परिवार के रहन-सहन और तौर-तरीके को दर्शाती है। गाँव में होने वाले टोटके जिन पर आज लोग विश्वास रखते हैं। इसका चित्रण 'यशोदा अम्मा' नामक कहानी में किया गया है। इस कहानी में व्यावहारिक भाषा तथा भावनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। कहानी में एक दो स्थान पर व्यंग्य का प्रयोग हुआ है। जैसे- देवकी रानी' आदि। इस कहानी का मूल उद्देश्य एक माँ के ममत्व की पराकाष्ठा का चित्रण करना है। माँ ही है जो अपने बच्चे की एक हँसी के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है। कहानी 'मीट' कहानी में स्त्री के बलात् शोषण का चित्रण किया गया है। शुरू से ही पुरूषवादी मानसिकता ने किसी न किसी तरह स्त्रियों को छला ही गया है। 'यह दुनिया भी अजीब है कोई अतिरिक्त सहानुभूति दिखाये, लाभ दे, उपहार दे, बेवजह मेहरबानियों की बरसात करे तो स्त्री को सतर्क हो जाना चाहिए कहीं मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक शोषण तो नहीं होने जा रहा है।'[4] अतः इस कहानी में स्त्री को शोषण के खिलाफ विरोध कैसे करना चाहिए और स्त्रियों को मानसिक रूप से भी मजबूत होना चाहिए। डॉ. अमिता दुबे की कहानियाँ आज के यथार्थ पर सटीक टिप्पणी करती नजर आती हैं। इसी तरह 'ऊर्जा' कहानी में बालमन पर हावी हठार्मिता को सुलझाने का प्रयास किया गया है। 'शिला' कहानी में स्त्री और पुरूष के आपसी प्रेम का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। 'हठधर्म' कहानी में पारिवारिक स्त्रियों के रूढ़िवादी सोच के कारण बिखरते रिश्तों की मार्मिक कहानी का वर्णन किया गया है। इसी तरह 'मुझे शिकायत है' कहानी में डॉ. अमिता दुबे ने समाज में व्याप्त रूढ़ि व पूर्वागृह कि लड़का और लड़की में फर्क करना और बेटियों को कोख में ही मरवा देना इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने समाज पर तीखा कटाक्ष किया है। अभी भी किस तरह समाज में बेटा और बेटी में फर्क किया जाता है, का वर्णन इस कहानी के माध्यम से किया गया है।हिंदी कथा जगत में डॉ. अमिता दुबे की तरह लिखने वाले रचनाकार जो स्त्री के प्रति केवल सहानुभूति रखने तक अपने विषय को सीमित न रखते हुए राजनीतिक समस्याओं, बच्चों की समस्याओं का भी अपने साहित्य में चित्रण करती हैं। उनके लेखन में अनुभूति की ऊष्मा, अनुभव की ऊर्जा के साथ रची बसी हुई है। आधुनिक समाज में हँसी-खुशी से दिन बिताने वाले परिवार में एक छोटी सी बात के लिए किस प्रकार दरार पड़ती है। उसका हूबहू चित्रण अमिता दुबे के साहित्य से पता चलता है। 'अपनत्व' जैसी कहानी में आधुनिक और परंपरा के बीच फंसी स्त्री का चित्रण तथा सम्पन्न तथा अत्याधुनिक आचार-विचार को महत्व देने वाली पति-पत्नी की संवेदनाओं का चित्रण है। अमिता दुबे स्वंय यह मानती हैं कि उनका साहित्य लिखने का उद्देश्य रचना के माध्यम से पाठकों को उस संवेदना के स्तर पर भागीदार बनाना या जोड़ना रहा है। यानि की एक की कथा व्यथा अनेक की बन सके। वे पारदर्शिता को कथा भाषा की अनिवार्यता मानती हैं। आज जब हिन्दी जगत में स्त्री के लेखन को लेकर नारीवाद और अस्मिता विमर्श का बोलबाला दिखाई देता है। वहीं अमिता दुबे की कहानियाँ बिना किसी अतिरिक्त शोर-शराबे, जलसे-जुलूस की सुलभ नारेबाजी और युद्ध की मुद्रा के शांत और धीमे स्वर में प्रदर्शित करती हैं कि सहज रूप से

व्यक्ति संपन्न मूल्य, सजग और उत्तरदायी स्त्री दृष्टि क्या होती है, यद्यपि जरूरी नहीं की कहानी का मुख्य पात्र कोई स्त्री ही हो। अमिता दुबे की कहानियों में एक स्वतंत्र-न्यायप्रिय तथा संतुलित दृष्टि का चौमुख रचनात्मक बोध दिखाई देता है। प्रतिशत की दृष्टि से देखें तो शायद प्रेम दांपत्य, परिवार संबंधी कथानक के जरिए अमिता दुबे जी अपनी बहुमुखी सजगता का परिचय दे देती हैं। अपनी सादगी और अनुभूति की प्रमाणिकता के कारण उनकी कहानियाँ विशेष रूप से प्रशंसा पाती हैं। स्त्री मन की आकांक्षाएँ, पुरूष मन की ईर्ष्याएँ, आधुनिकता और जमी हुई रूढ़ियों पर इनकी पैनी निगाह हमेशा बनी रहती है। इन तमाम विशेषताओं से भरी अमिता दुबे की कहानियाँ आज के समय में पाठकों के लिए मार्गदर्शन, जीवनयापन के लिए संबल है जो एक साथ हमें संघर्ष करने की ताकत भी देती हैं और अपना मार्ग स्वंय प्रशस्त करने की रोशनी भी। अमिता दुबे की कहानियाँ नारी को देवी या दानवी दिखाने के बजाए उसके मानवी गुणों को दिखाकर उसके मानवी रूप को उजागर करती हैं। मूल्यों के ह्रास के कारण किस प्रकार जीवन में समस्याएँ उत्पन्न होती है, यह उनकी कहानियों में दर्शाया गया है। जिनमें प्रमुख रूप से सीढ़ी कहानी संग्रह में संकलित कहानियाँ 'मोह भंग, आवाज, पहचान, पवित्र प्रेम, महत्वाकांक्षा, संवेदना, सीढ़ी, ढाई आखर प्रेम आदि प्रमुख हैं। इन सब कहानियों में महिलाओं की व्यथा-कथा तथा मानसिकता का चित्रण प्रमुख रूप से उद्घाटित किया गया है।

सन्दर्भ–

1. पाषाणी (विडंबना), पृ० 01
2. पाषाणी (यशोदा अम्मा), पृ० 13
3. वही पृ० 13
4. संभावना के जुगनू (मी टू) पृ० 34
5. पाषाणी (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, अविरल प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2000
6. समर्पण (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, अविरल प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2006
7. सिलवटें (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, अविरल प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2010
8. पुनर्वास (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2014
9. सुखमनी (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, विभा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2017
10. सीढ़ी (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, विभा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2018
11. राह मिल गयी (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, राजेश पुस्तक केन्द्र, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019
12. धनुक के रंग (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, नमन प्रकाशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 2020
13. संभावना के जुगनू (कहानी संग्रह), डॉ. अमिता दुबे, के. एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण, 2021

——×——

क्रम संख्या...25...

हिन्दी विभाग

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

एवं

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

विषय- कबीर के राम : तुलसी के राम

22–23 मार्च, 2021

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/श्रीमती/डॉ० ......गौरव कुमार......

संस्थान का नाम......बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ...... ने 22, 23 मार्च 2021

को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता की तथा ......रामकाव्य का सामाजिक सन्दर्भ और तुलसी के राम......

विषय पर शोध-पत्र/वक्तव्य/विशिष्टवक्तव्य/मुख्य वक्तव्य/अध्यक्षीय वक्तव्य/अतिथिवक्तव्य प्रस्तुतकिया।

डॉ० सर्वेश सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव
संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी